प्रकाशक—
विद्या प्रकाशन मन्दिर
१६८१ दरियागंज,
दिल्ली—७

प्रथम हिन्दी संस्करण
जुलाई १९५८
मूल्य २.२५ (दो रुपये पचीस नये पैसे)

मुद्रक—
सिक्सन प्रेस,
३४३५, वजरंगवर्ल
दिल्ली—६

दो-शब्द

इस नाटक के लेखक श्री भार्गवराम विट्ठल वरेरकर साहित्य-क्षेत्र में मामा साहब वरेरकर के नाम से प्रसिद्ध है। आपका जन्म बबई प्रान्त के रत्नागिरि जिले के चिपलूण-नामक गाँव मे २७ अप्रैल १८८३ ई० में हुआ। उन्होंने मालवण, दापोली रत्नागिरी मे शिक्षा ग्रहण की।

आरम्भ में आप डाक विभाग में थे। किन्तु एक दिन उन्हें स्वाभिमान की रक्षा के लिए त्याग-पत्र देना पडा। महात्मा गाधी के असहयोग आन्दोलन का उन पर काफी प्रभाव पड चुका था। सर्वतोमुखी प्रतिभा, देशभक्ति एव स्पष्टवादिता के कारण उनका जीवन एक स्वतत्र कर्मठ कलाकार का साधना-क्षेत्र बन गया।

आपकी प्रतिभा का सचार साहित्य के अनेक अगो में हो चुका है। उपन्यास, कहानी, एकाकी, नाटक, निबध आदि साहित्य लिखकर मराठी साहित्य की आप ने अखड सेवा की है। मौलिक साहित्य की रचना के साथ बगला साहित्य का मराठी में अनुवाद भी आपने किया है। लगभग १५० से भी अधिक पुस्तके लिखकर आज भी वे साहित्य की सर्जना कर रहे है। आप मराठी नाट्य सम्मेलन एव साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके है। साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के नाते मामा साहब ने भारतवर्ष का प्रवास कर विविध भाषाओ के साहित्य का आदान-प्रदान करने की आयोजना का प्रचार भी किया। इसी को "आन्तर भारती" कहा जाता है। वे एक

अच्छे वक्ता भी हैं। हर्ष का विषय है कि आपने अपनी आयु के ७६ वर्ष पूरे कर लिए हैं और आज भी आप की कार्य-शक्ति अटूट है। आपका व्यक्तित्व एव साहित्य-सेवा को देखते हुए भारत सरकार ने आप को राज्य सभा का सदस्य नियुक्त कर आपका सम्मान किया है। साथ ही आप साहित्य अकादमी में मराठी के प्रतिनिधि एवं आकाशवाणी की केन्द्रीय सलाह-कार समिति के सदस्य हैं।

श्री मामा साहव वरेरकर ने साहित्य के लगभग सभी अगो मे रचनाएँ प्रस्तुत कर अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। फिर भी नाटककार के नाते आप अत्याधिक प्रसिद्ध हैं। मराठी साहित्य में नाटक लिखकर आप ने एक युगान्तर स्थापित कर दिया है। आपका पहला नाटक "कुज विहारी" सन् १९०८ ईस्वी में रगभूमि पर आया। तव से आज तक मामा साहव के अनेक नाटक अभिनीत होते रहे हैं। उनके "सोने का शिखर" (सोन्याचाकलश) 'हक के गुलाम' (सत्तेचे गुलाम) "और भगवान देखता रहा" (जिवा शिवा ची भेंट) आदि नाटको का प्रयोग कई वार हो चुका है।

वरेरकर जी की सव से वडी विशेपता यह है कि पुरानी पीढी के नाटककार होते हुए भी सदा समय के साथ रहकर उन्होने नाटको की सृष्टि की है। फलस्वरूप मँजी हुई शैली में नये विपय की अभिव्यक्ति हो गई जो उनकी "नवनवो-न्मेपशालिनी" प्रतिभा का परिचय देती है। उन्हें हम प्रगतिशील साहित्यकार कह सकते हैं। उनके नाटको में आधुनिक समस्याओ का यथार्थ चित्रण मिलता है। परन्तु उनका यथार्थ आदर्शोन्मुख होता है जो समाज को नूतन मार्ग-दर्शन करता है।

दूसरी विशेषता यह है कि आप के नाटक अभिनेय हैं। उच्च कोटि के साहित्य गुणो से पूर्ण कई नाटक रगमच पर प्रभावहीन देखे गए हैं। और रगभूमि पर अभिनीत किये जाने पर मनोरजन करने वाले कुछ नाटक पठनीय नही रह पाते। मामा साहब के नाटको में अभिनेयता एव पठनीयता दोनों गुणो का समन्वय हो गया है।

नाट्य-कला में भी आपने नवीनता को अपनाया है। इव्सन के टेकनीक को कलात्मक ढग से आपने प्रस्तुत किया है।

इसके अतिरिक्त सजीव पात्रो का विन्यास, विचारो की दृढता, समयानुसारी कथोपकथन, गठन की मौलिकता आदि गणो से वरेरकरजी के नाटक चिरस्थायी वन गए हे।

हर्ष का विपय है कि श्री सर्वटे जी मामा साहव का प्रस्तुत नाटक—"हक के गुलाम" हिन्दी में अनूदित कर हिन्दी भापाभापी जनता के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं। इस नाटक की नायिका नलिनी है जो प्रारम्भ में केरोपत की सामाजिक प्रतिष्ठा, देशसेवा, नेतागिरी आदि गुणो के कारण उसकी ओर आकृष्ट होती है। किन्तु जव उसने वैकुठराव की सच्ची लगन एव कृपिकार्य मे देशसेवा का आदर्श देख लिया तव उसे केरोपत के दम्भपूर्ण वनावटी जीवन का परिचय भली-भाँति हो गया। वकीलो की चालवाजी एव व्यक्तिगत स्वार्थों से दूर चेंवूर के खेत पर श्रम करके भूमि की सेवा करने वाले वैकुठ को ही उसने अपना जीवन-साथी चुन लिया।

ऐसे गतिशील मराठी नाटक को हिन्दी में अनूदित कर श्री सर्वटे जी ने हिन्दी साहित्य की वृद्धि की है जो एक अभि-

नदनीय कार्य है । अनुवाद में वे काफी सफल हुए हैं । अनुवाद-कला का प्रेषणीयता का गुण प्रस्तुत अनुवाद में भी उतर पडा है । मामा साहव का नाटक (सोन्याचाकलश) सोने का शिखर श्री सर्वटेजी द्वारा अनूदित हो चुका है । उसकी अच्छी सराहना हुई । अव वे यह नाटक प्रस्तुत कर रहे हैं । आशा है साहित्य प्रेमी जनता इस नाटक का भी स्वागत करेगी ।

महाकोशल महा	प्रभाकरनारायण कवठेकर
विद्यालय	एम० ए० (सस्कृत व हिन्दी)
(रावर्टसन कालेज)	साहित्याचार्य
जवलपूर	
१—५—१९५८	

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

वावासाहव—	एक धनी व्यक्ति जिसकी मौत हो चुकी है।
हेरवराव, वैकुठराव— कान्होवा	वावासाहव के पुत्र
सदानन्द—	वावासाहव का सव से वडा पुत्र जो घर छोडकर चला गया था और जिसकी मृत्यु हो चुकी है।
केरोप त—	एक वकील
मार्तंडराव—	एक वकील

स्त्री-पात्र

नलिनी—	वावासाहव के एक घनिष्ट मित्र की कुमारी कन्या
रेवा—	सदानन्द की विधवा पत्नी
रमा—	हेरवराव की पत्नी
क्षमा—	नलिनी की छोटी वहिन

———

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—नलिनी का घर

[नलिनी क्षमा और रमा बैठी हैं ।]

नलिनी—आखिर किसी तरह गीत जमा तो । क्यो रमा भाभी, तुम्हे तो अच्छा लगा न ? हाँ, अगर तुम्हें घर में अच्छा लगे, तभी तो वह सभा में भी लोगो को अच्छा लगेगा । है न भाभी ?

रमा—मै पगली क्या जानू ? हमारे कानो को जो अच्छा लगता है उसी को हम अच्छा कह देती हैं । मैं तो कभी किसी सभा-वभा मे जाती नही । फिर सभा में जानेवालो की पसद और नापसंद को क्या जानू ? मेरे अपने देहाती विचार जो ठहरे । मैने अगर कह भी दिया कि अच्छा है, तो कौन वह अच्छा हो जाता है ?

क्षमा—रमा भाभी तो वडी विनम्र है । जानती सब है । लेकिन कहेगी कभी नही कि हम जानती हैं ।

रमा—पर तुम यह न समझना कि इस प्रशसा से मै फूल जाऊँगी और बुरे को अच्छा कह दूँगी ।

नलिनी—यूँ तो तुम वडी पक्की हो भाभी ! तुम्हारी राय बाम्बे बैंक में रखी अमानत है । जब तक सच्चे दस्तखत न हो उसे प्राप्त करना कठिन होता है और इसीलिए तुम्हारी राय लेनी चाहिए ।

रमा—मै समझ गई, नलिनी ! पर तुम्हारी प्रशसा से मै इतराऊँगी नही । मै कौन तुम्हारी तरह पढी-लिखी हूँ ? देहातिन जो ठहरी ! उडा लो गरीबो की हँसी ।

नलिनी—गरीब क्यो ? बाबासाहब जब तक जीवित थे, तब तुम्हारी अमीरी में थोड़ी रुकावट जरूर पड गयी थी । लेकिन अब वे चल बसे । कालरा से ही क्यो न हो, पर हरिद्वार में जाकर मरना

सभी के भाग्य मे नहीं होता। उन्होने रुपये कैसे भी कमाये हो, पर अंत में मोक्ष तो प्राप्त कर ही लिया। अब पैंतिस लाख की यह जायदाद सोलहो आने तुम्हारी हो गयी। अब कौन तुम्हें गरीब कहेगा ?

रमा—खूब अर्थ निकाला तुमने तो! हम क्या कह सकते हैं तुम्हारे सामने ? हम कौन तुम्हारी जैसी पढी-लिखी है ?

क्षमा—पढने-लिखने की जरूरत ही क्या है तुम्हें ? काफी रुपया हो तो पढाई के विना कोई काम नही रुकता। इतनी वडी पैंतीस लाख की जायदाद ...

रमा—अजी उसमें देवर का भी तो हिस्सा है न ?

क्षमा—सच, वे भी हरिद्वार चले जाते—कालरा था ही वहाँ...

नलिनी—क्षमा

क्षमा—तो, मैं कह रही थी—वावासाहव की मृत्य के धक्के से विरक्त होकर वैरागी वन जाते।

रमा—ये कल ही मुझसे कहते थे कि वावासाहव ने वसीयतनामा कर रखा है। कहते हैं कि वह केरोपत वकील के पास भेज दिया है। भगवान जाने उसमें क्या होगा ?

नलिनी—उसमे ऐसी कोई खास वात क्या हो सकती है ? किसी फड में कुछ रकम दे दी होगी अथवा किसी विश्व-विद्यालय में अपने नाम से कोई स्कालरशिप रख दी होगी। वस, इससे अधिक और क्या होगा ?

क्षमा--इस तरह चार चूडिया टूट जाने से सौभाग्य थोडे ही कम हो जाता है ? दान-धर्म में ऐसा कितना दिया होगा ? वहुत तो लाख या डेढ लाख। लेकिन जो वच रहेगा वह क्या थोडा है ?

रमा—जेठ जी होते तो एक हिस्सा उनका निकल जाता। लेकिन आज सात साल हो गए वे फरार है—न जाने किस अज्ञात स्थान को चल दिये हैं ? अव वैकुठलाला आधे हिस्से के हकदार हैं ही। लेकिन

भगवान जाने वसीयतनामें में क्या लिखा होगा ? मास्टर लाला को भी कुछ दिया होगा ।

क्षमा —और हमें ?

रमा—तुम्हें ? [हँसती है ।] शायद मेरी हँसी कर रही हो ? मित्रो और पडोसियों मे भी अगर जायदाद का बँटवारा होने लगे तो मालिक भिखारी ही बन जाएगा ।

नलिनी—तुम शायद भूल गयी कि बाबासाहब मुझे अपनी बेटी की तरह माना करते थे । और किसी को दमडी न देते थे, फिर भी उन से सौ डेढ सौ ले लेना मेरे लिए कठिन न होता था ।

रमा—मतलब ? उनके जीवन मे तुमने उनसे जितना ऐंठ लिया, उतना तुम्हें काफी नही हुआ शायद ?

नलिनी—किसी के उधार वैभव पर कोई जीवित नही रहता । तुम्हारी जायदाद तुम्हे ही मुबारक हो । मेरे पास जो है, वह मुझे काफी है। और फिर पेट चलाने के लिए मैं नौकरी करूँगी । कोई लगडी-लूली तो हूँ नही जो नौकरी न कर सकूं ?

रमा—नौकरी ? नौकरी करोगी या विवाह ?

नलिनी—विवाह ? क्षमा, क्या विवाह करना बिल्कुल आवश्यक ही है ?

रमा—यह कैसा बेहूदा सवाल है ?

क्षमा- -और विवाह न किया तो ?

रमा—न करने से कैसे काम चलेगा ? लडकी की जात क्या बिना विवाह किये कभी रह सकती है ?

नलिनी—और विवाह करने के बाद तुरन्त ही पति मर गया तो लडकी की जात की क्या दशा होगी ?

रमा—अलाय बलाय टले । ऐसी बात नही कहनी चाहिए, नलिनी !

नलिनी—क्यो, ऐसा क्या कभी होता ही नही है ?

रमा—होता है । भाग्य में हो, तो ऐसा भी हो जाता है । लेकिन ऐसी अशुभ बात हम कहें क्यो ?

नलिनी—इसीलिए कहती हूँ, यदि विवाह ही न करें तो क्या बुरा है ? समझ लेना चाहिए कि हमारा पति मर गया है और अपने निर्वाह के लिए नौकरी करनी चाहिए। अगर मास्टरनी की नौकरी मिल गई तो कम-से-कम सौ डेढ सौ रुपया माहवार मिल ही जाएँगे।

क्षमा—रमा भाभी, यह सब दूसरा ही रग है, समझी ? इसने प्रण किया है, प्रण !

नलिनी—क्षमा

क्षमा—इसने यह प्रण किया है कि इसके मतानुसार जो उत्तम देश-भक्त होगा, उसी से यह विवाह करेगी।

रमा—अच्छा यह बात है ? तो यही कहना चाहिए कि केरोपंत जी की किस्मत जागने वाली है।

नलिनी—दुनिया में कोई एक ही देशभक्त नही है।

रमा—लेकिन यदि जाति, गोत्र और स्थान का विचार किया जाए, तो सिर्फ यही एक नाम सामने आता है। यानी प्रण किया है, यह सच है।

नलिनी—झूठ क्यो बोलूं। प्रण मच में ही किया है और वह भी यही। नही तो विवाह ही न करूँगी। मेरे घर कोई जेठे-बडे नही। इसलिए कन्यादान होगा ही नही। जब आत्म-दान ही करना है, तो वह देश-भक्त को ही करूँ जिसमे हम दोनो अपना जीवन देश-कार्य में लगा सकें।

रमा—हम भोली-बावली देहातिनें क्या जाने कि देश-कार्य क्या होता है ? हमारी नजर लगी रहती है विवाह पर। गहनो से लदी वहू ने जहा अपनी झलक दिखा दी कि देह सार्थक हो गई।

नलिनी—गहनो से लदी वहू को विवाह में अपनी झलक दिखाने का शौक तो होगा ही। लेकिन मुझ जैसी स्त्री को, जिसके शरीर पर एक भी गहना नही है, अपनी झलक दिखाने की साध सिर्फ देश-कार्य में ही

पूरी होगी। रमा भाभी, विवाह के जुलूस की अपेक्षा देश-भक्तो का जुलूस अधिक ठाट का होता है।

क्षमा—यह तो सच है। "शुभ मंगल सावधान" की अपेक्षा "नलिनी महाराज की जय" का नारा ही कानो को बडा मीठा लगता है।

नलिनी—अरी, जरा व्याकरण पर भी तो ध्यान दे। "नलिनी महाराज" कैसे होगा ?

क्षमा—तो क्या "नलिनी महारानी" होगा ? छि ! यह तो राज-परिवार की बात हुई। तो क्या "नलिनी चाची की जय" कहा जाय ? छि ! "महात्मा नलिनी" ! यह भी नही हो सकता। "महात्मा' का स्त्रीलिंग क्या है जी ?

नलिनी—'महात्मा', शब्द ही मूल में पुरुपार्थवाचक है। वहा स्त्रीत्व की सभावना ही नही। व्याकरण ने भी कही हार मानी है तो एक "महात्मा" के आगे ही। - [कान्होबा आता है।]

क्षमा—आइए मास्टर साहब ! पधारिए। नलिनीजी कहती है कि 'महात्मा' शब्द का स्त्रीवाचक शब्द ही नही है।

कान्होबा—यह कैसे हो सकता है ? शब्द जरूर है। महात्मा पुरुप और महात्मीया स्त्री—अरे हा, पर आत्मीय का अर्थ तो होता है, नातेदार ? है न ? अच्छा, दादा से पूछ कर बताऊँगा।

नलिनी—दादा जी का आधार तो दादी जी की बडी व्याकरण का आधार ही मानना पडेगा।

कान्होबा—फिलहाल व्याकरण को धता बताओ। मैं इस समय व्याकरण से भी एक बडे महत्वपूर्ण काम के लिए यहाँ आया हूँ। दादा ने कहा है कि'

क्षमा—आगए फिर दादोवा

रमा—शायद वे आ गए ? नलिनी ! अब मुझे जाना चाहिए। बहिन ! मै जाती हूँ।

कान्होबा—नही, नही, भाभी ! आपके जाने की जरूरत नही। सब

लोग यही आ रहे है। दादा ने कहा है कि केरोपत वकील वसीयतनामा पढने यही आ रहे है।

रमा—वसीयतनामा पढने ! यहाँ ! किसका वसीयतनामा ? क्या ससुरजी का ?

कान्होबा—हाँ, वसीयतनामे के लिफाफे पर लिखा है कि वह यही पढा जाए। खुद दादा ने कहा है ··

नलिनी—तो अब बात ही खत्म हो गई। कौन-कौन आ रहे हैं यहाँ ?

कान्होबा—इसके बारे में दादा ने कुछ भी नही कहा। दादा आएँगे, केरोपत आएँगे, मैं आ ही गया हूँ, भाभी यहाँ हैं ही। तुम हो, ये क्षमा जी भी हैं ···

नलिनी—ये कुरसियाँ हैं, ये मेज है

रमा—और वैकुठलाला ?

कान्होबा— दादा ने उसका नाम नही लिया। वह रहता भी कहाँ है घर में। चला रहा होगा कही हल या दे रहा होगा कही खाद। वह तो एक पागल है—पूरा घनचक्कर ! बी० ए० एल० एल० बी० पास कर लिया है। दादा कहते हैं—सनद ले ले, पर उसके कान पर जूँ तक नही रेंगती। पट्ठा अपना हल ही पकडे हुए है। दादा की सुनता ही नही। तो अब बताइए कि क्या वह एल० एल० बी० है कि बैल ? लो, दादा आ ही गए।—[हिरवराव और केरोपत आते हैं।]—आइए केरोपत जी। दादा, भाभी यही हैं। कुछ हर्ज तो नही ?

हेरबराव—उस बैल का कही पता है ? पिताजी को मरे अभी एक माह भी पूरा नही हुआ और इसने समूची बम्बई छानना शुरू कर दिया। कोई सुख-दुख भी नही है मूर्ख को। यदि कुछ कहता हूँ, तो सौतेला भाई है। लोग मुझे ही दोष देंगे। लेकिन उसके गुण कोई देख रहा है क्या ? सुनता हूँ कि भाषण दिया करता है। और इन भाषणों के विषय क्या होते हैं ? वही हल, बैल, और खाद ! अब हमारे केरोपत

जी को देखो। देशभक्ति को छोड़कर उनके भाषण का कोई दूसरा विषय ही नही होता। उनका भाषण आप अभी भी सुनिए—वस एक छाप—एक विषय—विल्कुल वही! जैसे अखड ताम्रपट हो।

केरोपत—विषय हमेशा एक ही होना चाहिये। सारा जीवन एक ही विषय में लगा दिये विना किसी भी काम में सफलता प्राप्त नही होती। जीवन का मार्ग पहले तय कर लेना चाहिये तभी हम मजिलेमकसूद पर पहुँच सकते है।

हेरबराव—वाह! वाह!! इसे कहते हैं अक्ल! अच्छा तो अव वसीयतनामा ·

केरोपत—हाँ, अव वही विषय है। सव लोग ऐसे सामने आ जाओ। आप क्यो खडी है, रमा भाभी! वैठ जाइये न? नलिनीजी, आप आकर यहाँ सामने वैठिए। मास्टर, तुम जरा दूर हटो। जव तक सव लोग दृष्टि के घेरे में नही आ जाते, तव तक किसी भी वक्ता को समाधान नही हो सकता।

हेरबराव - कहाँ है वह वसीयतनामा?

केरोपत—ठहरो! वावासाहव तीर्थयात्रा के लिए हरिद्वार गये थे। वहाँ वे कालरा से दिवगत हो गए .

कान्होवा—वाह वा!—दिवगत हो गए। कितनी प्रौढ रचना है!

केरोपत—दिवगत हो गए। वहुत वुरा हुआ। पर एक ही सतोष की वात है। प्राण त्यागने से पहले उन्होने वसीयतनामा वना लिया था। अतकाल की उनकी इच्छानुसार वह वसीयतनामा उनके डाक्टर ने मेरे पास भेज दिया है।—[जेव से निकालता है।]—यही वह वसीयतनामा है। इस वसीयतनामे को देखते ही उस पुण्यात्मा का स्मरण हो आता है। उनकी उदारता—उनकी विनम्रता ·

कान्होवा—दादा कह रहे हैं, अब खोलिये वह लिफाफा।

केरो०—ठहरो! सव वातें सिलसिलेवार ही होनी चाहिये। नलिनीजी, इस लिफाफे पर लिखा है कि यह वसीयतनामा आप ही के घर पढ़ा

जाए। वावासाहव के सव रिश्तेदार यहा आगए हैं।

क्षमा—लेकिन वैकुठराव जी ?

केरोपत—[अनसुनी करके]—वावासाहव स्वर्गवासी हुए ·

वैकुठराव—[प्रवेश करके]—लेकिन वैकुठ अभी वैकुठवासी नही हुआ। वकील साहव, क्या वात है ? क्या हो रहा है यह ? पिताजी का वसीयतनामा है शायद ? फिर मुझे नही वुलाया उसे सुनने ?

केरोपत—वावासाहव स्वर्गवासी हुए। हरिद्वार की सीढ़ी पर प्राण त्यागने के कारण उन्हे सद्‌गति प्राप्त हुई।

वैकुठराव—और वकालत की सीढी पर चढने के कारण आपको दुर्गति प्राप्त हुई।

हेरवराव—चुप वैठ मूर्ख .

वैकुठराव—अदालत की सीढी चढने के कारण आपकी अक्ल मारी गयी।

हेरवराव—अक्ल तेरी ही मारी गई है। एक तो आना न था, सो आ गया तो अव कम से कम तो मनुष्य की तरह वैठ। कुछ "मैनर्स" भी तो·

वैकुठराव—मै सिर्फ "मैन" हू। दादा "मैनर" हैं और ये मुकद्दमेवाजी के दलाल "मैनेस्ट" हैं—मनुष्यो के सिरताज। इतने मैनर्स यहां जम जाने पर मैं किस खेत की मूली हूँ ? चलने दीजिये आपके वसीयतनामे की पढाई। मेरी ओर ध्यान ही न दें। इस मेज में खटमलो की क्या कोई कमी है ? मुझे भी उनमें का एक समझ लीजिए।

हेरवराव—इसीलिये तो तुझे नही वुलाया था।

वैकुठराव—मान लीजिये कि मै आया ही नही। इसीलिये कुरसी खाली होते हुए भी मैं उस पर नही वैठा।

नलिनी—जरा शर्म खाओ वैकुठराव !

वैकुंठराव—आप की नजर पड गई मुझ पर ? आई वेग युअर पार्डन! सुना, नलिनीजी ! मुझे यहां किसी ने वुलाया नही था—जरूरत ही न

थी मेरी—और इसीलिये मैं यहाँ नही आया। टेक इट फार ग्राण्टेड दैट आई एम नाट हियर।

केरोपत—उन्हें सद्‌गति मिली। अब हम उनका वसीयतनामा देखें। इस लिफाफे को खोलते समय मेरा हाथ काँपने लगता है। अज्ञात विधि-लेख की तरह यह लेख किस के भाग्य पर क्या क्या परिणाम करेगा, इसे कोई नही कह सकता।

वैकुंठराव—क्या वकील भी नही ? लगता है भाप के सहारे आप ने सीले नही खोली ?

केरोपत—गुनाह के तरीके बदमाश गुनहगारो को ही सूझ सकते है।

वैकुंठराव—अथवा उन गुनहगारो के इज्जतदार वकीलो को सूझ सकते हैं।

केरोपत—आगे सुनिये। यह लिफाफा···

वैकुंठराव—जिसे पहले खोलकर देख लिया था··

केरोपत—मैं अब खोलता हूँ। पहले बाबासाहब ने यह सम्पत्ति कैसे प्राप्त की, इसका वर्णन है। उसे दोहराने की जरूरत नही। अब उनके फैसले का ब्योरा सुनिये।—[पढकर देखता है।]

वैकुंठराव—कान्होबा, मुँह से लार न टपकाना। वसीयतनामे में अगर नाम न निकला तो मुँह की लार गायब होकर गला सूख जायेगा। मुह सफेद होने का मौका है यह, समझे ?

केरोपत—[पढ़ने लगता है।]—"मेरा बडा लडका सदानद सात साल पहले मुझ से लडकर चला गया। उसका अभी तक कोई पता नही। मै अकारण ही उस पर नाराज हुआ। अब मैं पछता रहा हूँ। इसलिये नीचे लिखी हुई मेरी स्वसपादित सारी जायदाद मै उसे देता हूँ। यदि वह जीवित न हो, तो यह जायदाद उसके लडके को दी जावे। अगर उसका लडका न हो तो उसकी पत्नी को दी जावे। इनमें से यदि कोई न हो तो ?···

वैकुंठराव—बडे कुशल अभिनेता हो, वकील साहब ! कितना यथार्थ

अभिनय किया है आपने ?

हेरंबराव—क्या वैकुंठ को दी है ?—[केरोपत गर्दन से इंकार करते हैं।]—तो क्या मुझे ? नही ? तो क्या कान्होवा को ? नही ?

नलिनी—तो क्या सब दान में दे दी ?

वैकुंठ—[केरोपत के पीछे खड़ा होकर पढ़ता है।]—हिप् हिप् हुर्रे !

हेरंबराव—वैकुंठ को दे दी है शायद ?

केरोपत—[पढता है।]—नही, सुनो—"तो वह सारी जायदाद मेरे प्रिय मित्र की कन्या नलिनी गोखले को दे दी जाय। लेकिन

हेरंबराव—बाप नही, कसाई ही है। अब हम लोग क्या करें ?

वैकुंठराव—शखान् दध्मु पृथक् पृथक् !

केरोपत—लेकिन इसमें से बीस हजार रुपये नलिनी मेरे भतीजे कान्होबा को दे। बस, वसीयतनामा समाप्त हो गया। जो लोग यह नही समझते कि मरते वक्त डाक्टर की जितनी जरूरत होती है उतनी ही वकील की भी होती है, उनसे इसी तरह की गलतिया हो जाती है। भाषा कितनी गलत है। यदि कानून को कैंची में पकडे तो इस वसीयतनामा की धज्जियाँ उड जायेंगी।

हेरंबराव—धज्जिया उड जाएँगी न ? ठीक है। मैं कहता हूँ कि यह वसीयतनामा ही झूठा है।

वैकुंठराव—मैं कहता हूँ, अब वकीलो और वैरिस्टरो की पाचो घी में हैं। यह मामला सुप्रीम कोर्ट तक जायेगा। बहुत से वकील अपनी जेब गरम कर लेंगे और अत में दादा

हेरंबराव—केस जीतेंगे।

वैकुंठराव—साफ डूब जाएगे। क्या डाक्टर की टिप्पणी देखी है आपने वसीयतनामे पर ?-

केरोपत—बस बद करो। अब इस विषय में इस समय कुछ भी कहने की जरूरत नही। हेरंबराव, अब आप घर जाइये। कल आकर मुझसे मिलिये।

रमा—दैया रे ! बूढे ने मरते-मरते खूब बदला लिया।

कान्होबा—अब दादा क्या सोच रहे होगे ? दादा, आप मुझ पर नाराज तो नही ?

हेरबराव—चलो अब घर इसे लेकर। मै भी जाता हूँ।—[रमा और कान्होबा जाते है। हेरबराव केरोपत के कान में कुछ कहकर चल देता है।]—

वैकुठराव—रास्ता साफ हो गया। वकील साहब, अब आप कोर्टशिप शुरू कर दीजिए। पत्नी की संपत्ति का पर्याय से पति भी मालिक होता है। हाँ, करिए शुरू—होने दीजिये सूत्रपात !

केरोपत—वैकुठराव, आप अच्छे पढे-लिखे है। ऐसी बाते आपको शोभा नही देती।

वैकुठराव—वकालत के अभिनय का अभ्यास न होने के कारण मै अभी तक मन से मुर्दाफरोश नही बना हूँ।

नलिनी—कम से कम सभ्यता से तो परिचित है ?

वैकुठराव—मै हूँ हलधर ! मैंने सारे शिष्टाचारो पर हल चला दिया है।

नलिनी—तो फिर आप यहाँ से रास्ता नापिए।

वैकुठराव—क्षमा, चलो। पुरुष और स्त्री जब हमउम्र होते है, तो स्त्री का ही प्रभुत्व बढने लगता है। तुम उम्र में मुझ से बहुत छोटी हो। नलिनी जी मेरी उम्र की हैं, इसीलिये पद-पद पर वह मुझे डाँटती रहती हैं। चलो, हम उस कमरे में चलें। धनी के साथ न सही, तो कम से कम उस धनी की बहिन से ही मुझे प्रेम की चार बाते कर लेने दो।

क्षमा—उजड्ड कही के ! हलधर से प्रेम करने के लिए कोई कुरमिन ही ठीक रहेगी। जाओ खेत पर।

वैकुठराव—अरे रे ! कही भी मुझे जगह नही। केरोपत, सनद लेने के लिए कितनी फीस जमा करनी पडती है, जरा बता दीजिये। अब सनद

लिये ही लेता हूँ। एक महीने मे सौ खूनियो को फासी के तख्तो से नीचे खीच लेता हूँ। दो सौ वेगुनाहो को हथकडियाँ पहनाये देता हूँ। वस, फिर देखिए, तुरत ही नलिनी जी मेरे गले पड जाती है या नही ? नलिनी ही क्यो वल्कि वबई की सारी कुमारिकाये—सारी वारयौपिता

केरोपत—वैकुठराव वकवास की भी हद होती है।

वैकुठराव—वकीलो को छोडकर दूसरो के लिए। नलिनीजी, यदि मेरी वाते आप को पसद न हो तो मैं चला जाता हूँ। पर मैं एक ही वात कह देना चाहता हूँ। यदि केरोपत ने आप से विवाह न किया, तो आप के पाणिग्रहण का पहला आवेदक मै हूँ, यह ध्यान में रखना।

नलिनी—एक वेवकूफ की पत्नी बनने के वजाय जहर खाकर मर जाना क्या वुरा है ?

वैकुठराव—यह वात है ? तो ठीक है। लेकिन, यदि वह मौका आ जाए, तो जहर खाने से पहले वसीयतनामा छोडना न भूलना। वरना तुम्हारी जायदाद के लिये और दस-पाँच खून हो जाएँगे। हाँ, वकील साहव, शुरू कीजिए अपनी कोर्टशिप। इस कोर्टशिप के लिए कोर्टफी तो नही लगती है न ? आप की प्रेम-याचना में शैतान आपको सफलता दे। नलिनी, मैं जाता हूँ। लेकिन याद रखना, एक समय ऐसा आएगा कि उस समय पाणिग्रहण की याचना के लिए तुम्हें इस वैकुठ के पास ही रोते हुए आना पडेगा। गुड ईव्हनिंग !—[जाता है।]

नलिनी—आखिर किसी तरह वला टली ! मुए का मुह है या तौवडा ?

केरोपत—छोडो भी। हमें ऐसे आदमियो का ख्याल भी न करना चाहिए। फिर भी ऐसे समाज-कटको को पागलखाने मे रख देना अच्छा। इस से मनोरजन तो जरूर होता है, लेकिन कोई सीमा तो होनी चाहिये।

नलिनी—कैसा आश्चर्य है ? वावासाहव ने सारी जायदाद मुझे ही क्यो दे दी ?

केरोपत—अभी तो मदानद की मृत्यु के बारे में निश्चित रूप से जानना बाकी है। वैसे विश्वसनीय सूत्र से मुझे यह पता लग गया है कि वह इस दुनिया से सदा के लिए चल बसा। फिर भी सबूत जुटाने होंगे। नलिनी, मै जानता हूँ कि प्रेम की बातें करने का यह समय नही है। फिर भी मुझ से रहा नही जाता। इससे पहले यदि मंने तुम्हारे प्रेम की याचना न की होती, तो आज मेरी याचना का गलत मतलब निकाला जाता। आज दस ही दिन तो हुये हैं—प्रत्येक दिन मै किस तरह गिनता आ रहा हूँ—दस दिन पहले ही मैने तुम्हारे प्रति अपने प्रेम को स्पष्ट रूप से शब्दो में प्रकट किया

नलिनी—लेकिन मैने अपना प्रण आप से उसी वक्त कह दिया था न ?

केरोपत—तुम्हारे प्रण के लिये नही, बल्कि जिस दिन से मैने वकालत शुरू की उसी दिन से मैंने अपना जीवन देश-सेवा मे लगा दिया है—नही, बल्कि यह कहना चाहिये कि देश-मेवा के लिये ही मुझे वकील बनने के लिये मजबूर होना पडा।

नलिनी—आपकी देशसेवा की कसौटी जाने बगैर मै आज कोई जवाब नही दे सकती।

केरोपत—ठीक है। चाहे जिस तरह मुझे कसौटी पर कस लो। यदि उस पर खरा उतर गया, तब तो मुझे स्वीकार करोगी न ?

नलिनी—प्रेम के साम्राज्य में मन से आँखमिचौनी खेलते नही बनता। *अब क्या कहूँ ? मुझ से इस समय कुछ न पूछिये। अचानक परिस्थिति* बदल जाने से मेरा मन चकरा गया है। क्या करूँ ? यदि यह प्रण न किया होता तो

केरोपत—तो अभी "हाँ" कह देती। यही न ? नलिनी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मै इतना भाग्यशाली हूँ। अब मजे में मेरी परीक्षा लो। तुम्हारे प्रेम की परीक्षा पास करने के हेतु देशकार्य करने में मुझे अब दुगुना उत्साह होगा। उस उत्साह के बल पर जो काम होंगे, वे मुझे

तुम्हारे प्रेम के नजदीक जल्द खीचकर ले आयेंगे ; इसका मुझे पूर्ण विश्वास है ।—[जाता है ।]

नलिनी—कितना उदार हृदय है इनका ? यदि एक ही क्षण और रुक जाते तो अपना प्रण तोडकर भी मै इन से विवाह करने को तैयार हो जाती । ठहर, हे मन, ठहर जा । ऐश्वर्य के अचानक धक्के से असमजस में पडे हुए मेरे भोले मन, इतना उतावला न हो ।
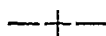
दूसरा दृश्य

स्थान—प्रिन्सेज स्ट्रीट

[मार्तंडराव मगलमूर्ति और उनकी पत्नी]

मार्तंडराव—देख, जरा सम्हलकर। वरना मोटर के नीचे दव जायेगी। लोग कहेंगे, बूढा अपनी बीवी को नही सम्हाल सकता। किसी बीमारी से मर गयी, तो कोई हर्ज नहीं। तेरे पहले की चार बीविया बीमारी से ही मरी। कोई बुखार से खत्म हुई, तो किसी को प्लेग ले गया। अभी तक मेरी एक भी बीवी दुर्घटना से नही मरी। दुर्घटना से मरना—और वह भी मेरे साथ होते हुए—बहुत बुरी बात है। तू मरेगी, यह तो निश्चित ही है। मंगल का प्रभाव कभी टल नही सकता। लेकिन पहले मुझे अपनी आगामी शादी की तैयारी कर लेनी चाहिये। मनुष्य को हमेशा आने वाले वक्त का इन्तजाम पहले से ही कर रखना चाहिए, वरना लोग उसे अदूरदर्शी कहेंगे। पहले मेरी आगामी शादी तय हो जाने दे, फिर तू मर गई तो कोई हर्ज नही। फिर यदि किसी दुर्घटना से ही मरी, तव भी काम चल जायेगा। हाँ, व्हेराइटी चाहिये ही। हर एक बीवी यदि एक ही प्रकार से मरी, तो पत्नी-वियोग के अल्प विरह में मजा न आयेगा। हँसती क्यो है ? मुझ से जो शादी करे, उसे मरने के लिये तैयार ही रहना चाहिये। यह तो प्राणो की बाजी है। देशकार्य में लगे हुए मनुष्य को जिस तरह जेल में जाने के लिए नही डरना चाहिये, उसी तरह मुझ से विवाह करने वाली को भी मरने के लिए तैयार रहना ही चाहिये। मेरा मगल यूं ही बडा कडा है। उसका प्रभाव जरूर ही पडता है। हमारे यहाँ के गुर्जर ज्योतिषी जी ने स्वय मुझ से कहा है पर तुझ से वह क्यो कहूँ ? अब वही एक उपाय बच

रहा है। जरा भी ची-चपड न करना। चाहे जिस औरत से मै चाहे जो पूछूगा। तू बोली और अगर मेरे मगल का भडाफोड किया तो सारी योजना ही ठप्प हो जायेगी। अगर एक शब्द भी बोली, तो जीभ ही उखाड लूँगा। ठहर ! इधर एक तरफ खडी हो जा। इस अदाज से खडी रह जैसे तू मेरी कोई नही है।—[वह जाती है।]—कोई विधवा ही मालूम होती है यह। कैसा विलक्षरण योगायोग ?—[रेवा आती है]—

रेवा—महाशयजी, तपेदिक के दवाखाने का रास्ता मुझे दिखाएँगे क्या ?

मार्तंडराव—तपेदिक का दवाखाना ? देखकर तुम तपेदिक की बीमार तो नही दिखती। खासी मोटी ताजी

रेवा—मैं वहा नर्स हूँ। बम्बई में नई आई हूँ। इसलिए रास्ते अभी ठीक से याद नही रहते।

मार्तंडराव—शायद तुम विधवा हो ! हाँ, ललाट पर कुकुम नदारत ही है। नर्स की नौकरी बहुत बुरी होती है। और फिर विधवा के लिये तो वडी खतरनाक है। ऊपर से तपेदिक का दवाखाना ! देवी जी, मेरी सुनो, तुम पुर्नविवाह कर लो।

रेवा—आप दवाखाने का रास्ता जानते हैं क्या ? हाथ जोडती हूँ। कृपा कर पहले मुझे रास्ता दिखा दे। यदि देर हो गई, तो डाक्टर साहब मुझे सजा देंगे।

मार्तंडराव—देखा, इसीलिये कहता हूँ, पुर्नविवाह कर डालो। फिर सजा का कोई डर नही। मैं भी एक विधुर हूँ। ब्राह्मण ही हो न ? हाँ, दिख तो ऐसा ही रहा है। मै हूँ देशस्थ। तुम अगर कोकरणस्थ हो तब भी कोई आपत्ति नही। अब तो ऐसे विवाहो का चलन हो ही जाना चाहिये।—[रेवा जाने लगती है।]—ठहरो, जाओ नही।

रेवा—मेरा रास्ता छोडो। कोई दूसरा मुझे रास्ता दिखा देगा।

मार्तंडराव—मै दिखाता हूँ वही रास्ता ठीक है। मेरी सुनो। तुम पुर्नविवाह कर लो। मै भी वही चाहता हूँ। मैं भी विधुर ही हूँ। आज

ही विवाह करने के लिये यदि तुम तैयार नही हो, तो सिर्फ स्वीकृति दे दो। आगे मेरा पूर्ण परिचय हो जाने के बाद विवाह कर लेंगे।

रेवा—पुलिस! पुलिस!! अरे कोई दौड़कर मुझे इस पागल के पजे से छुडाओ।

मार्तंडराव—मै पागल नही। मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं। इस रास्ते पर प्राय सन्नाटा ही रहता है। तुम्हे ज्यादा आदमी मिलेगे ही नही। डरने की कोई जरूरत नही, समझी? सिर्फ वचन दे दो मुझे।—बस, केवल वचन। लेकिन वह पक्का हो! बदल जाने से काम नही चलेगा। इस वक्त सिर्फ हाँ कर दो और अपना पता दे दो। मै तुम्हारे घर ही आकर तुम से मिलूगा। लेकिन, हाँ, वचन अभी चाहिये।

रेवा—अब मै करूँ भी क्या? दौडो-दौडो! अरे भाई, कोई दौडो तो?—

[वैकुठराव आता है।]

वैकुठराव—क्या हुआ देवी जी?

रेवा—इस पागल से मुझे छुडाइये। यह देखिये मुझे जाने नही देता।

वैकुठराव—अरे मार्तंडराव मगलमूर्ती, यह क्या? छोडिये न उसका हाथ? अजी देवीजी, ये पागल नही है। आप वकील साहब है। क्या आप का यह ख्याल है कि सरकार पागल को वकालत करने देगी?

मार्तंडराव—अजी, ये फिजूल ही डर गयी। मैं इनसे सिर्फ पुनर्विवाह के बारे में पूछ रहा था।

वैकुठराव—यहाँ? आम रास्ते पर? आपको पहचानती हैं क्या ये?

मार्तंडराव—नही। इसीलिये तो पूछ रहा हूँ। मुझसे स्वय गुर्जर ज्योतिषी ने कह दिया है कि पुनर्विवाह करूँ, तभी मेरी पत्नी जिन्दा रह सकती है।

वैकुठराव—देवीजी, फिर आप का क्या इरादा है? आप पुनर्विवाह नही करना चाहती न? बस, तो हो चुका। मार्तंडराव, तो अब चलते फिरते नजर आओ, रास्ता नापो।

मार्तंडराव—[स्वगत]—इस घनचक्कर के सामने बात न जमेगी। पता

तो मालूम ही हो गया है। आगे देखूगा।—[जाता है।]

वैकुठराव—ठहरिये रेवा भाभी, आप रहती कहाँ हैं ?

रेवा—आप को मेरा नाम कैसे मालूम हुआ ?

वैकुठराव—अभी आपने बताया। बताया न ? नही ! शायद न बताया हो। जो सहज ही मुंह से निकल गया, क्या वही ठीक है ?

रेवा—आप का नाम वैकुठराव है न ?

वैकुठराव—क्या मेरा भी नाम आपको मालूम हो गया ? किसने बताया ?

रेवा—एक दिन आप का भाषण सुना था, उस दिन मालूम हुआ ! लेकिन आपने मुझको रेवा भाभी कैसे कहा ?

वैकुठराव—क्यो ? क्या नही कहना चाहिये था ? साधारण अपरिचित स्त्री को भाभी कहना ही ठीक होता है।

रेवा—इतनी ही बात है न ?

वैकुठराव—यानी क्या सचमुच आप मेरी भाभी हैं ?

रेवा—इतना मेरा भाग्य कहाँ ? आप की भाभी होती, तो तपेदिक के दवाखाने में नर्स की नौकरी क्यो करती ? ब्राह्मण होते हुये भी कामाठीपुरी जैसी गदी बस्ती के घर में क्यो रहती ? इतनी दूर तक टॉगे तोडती क्यो जाती ?

वैकुठराव—ऐसी बात है ? रेवा भाभी, आज से आप मुझे देवर समझे। मै आपके रहने का प्रबन्ध किये देता हूँ उस गदी बस्ती में न रहिये। अनाथ स्त्रियो के लिये वह बस्ती बडी खतरनाक है। मेरी एक रिश्तेदारिन है। उसे एक 'कम्पेनियन' की जरूरत है।। आपका भी प्रबन्ध हो जाएगा और उसका भी काम निकल जायेगा। बताइए दवाखाने से छुट्टी कब होती है आपकी ? उस वक्त मैं आकर आपको उसके घर ले चलूगा।

रेवा—पहले आप मुझे दवाखाने का रास्ता दिखाइए।

वैकुठराव—ठहरिए, एक विक्टोरिया लिए आता हूँ जिससे कि आपके

माथ जाने का अप्रिय काम मै टाल सकूगा ।—[जाता है ।]

रेवा—[स्वगत]—क्या ये जानते होगे कि मैं सचमुच ही उनकी भाभी हूँ ? उन्होने मुझसे भाभी क्यो कहा ? शायद सहज ही कह दिया हो ? वे अपने घर के किसी भी आदमी को पत्र नही लिखा करते थे, तो फिर ये भी कैसे जानेंगे ? उन्होने ही सम्बन्ध तोड दिया था तो अभी उसे जोडने का प्रयत्न क्यो करूँ ? ईश्वर ने जिसके भाग्य में दुख ही लिख रखा है, उन्हें भरे हुए घर में भी भूखो मरने की नौबत आ जाती है। जो किस्मत में बदा हो उसी के आगे अब गर्दन झुकानी चाहिये। नाता जोडने जाऊँ तो कौन उसे अब सच मानेगा ? और अब जब कि मुझ पर आसमान ही टूट पडा है, तब वह नाता क्यों खोजूं ? जो प्रसग आ पडा है उसे बरदाश्त करने में ही अब शोभा है।—ना, न वह नाता चाहिये और न उस नाते के सबूत ही चाहिये। विधवा को आखिर किसी के उपकार ही तो लेने हैं। रिश्तेदारी का भेद खोलकर उपकार का बोझा ढोने की अपेक्षा, उन्हें पराया समझने मे यह बोझ हलका तो लगेगा। लो, वे आ ही गये शायद ?

वैकुठराव—[प्रवेश करके]—भाभी, गाडी आ गई। बैठिए, किराया मै दे चुका हूं।—[रेवा बैठ जाती है।]—कैसा योगायोग है ! आज स्वप्न में भी मैने यह नही सोचा था कि भाभी की इस तरह अचानक मुलाकात हो जायेगी। मिस्टर केरोपत, आपकी वकालत की अब परीक्षा ही है। बेचारी नलिनी को जरूर आखिर निराश होना पडेगा। —[जाता है।]

———

तीसरा दृश्य

[स्थान—वाबासाहव का देवघर। हरवराव पूजा पर बैठे हैं। नजदीक ही रमा खडी है।]

हेरबराव—शरण्ये त्र्यबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते !—हद हो गई तुम्हारे सामने। मैं इसके लिये क्या करूँ ? पिता जी हरिद्वार में, मैं यहाँ। मरते वक्त बूढे का दिमाग विगड गया था, इस में शक नही।

रमा—लेकिन अव हम तो विलकुल भिखारी हो गये न ? इतने दिन शान से विताए—अव इस उम्र में भीख माँगने की नौवत आ गई। वैकुठलाल को इसकी कोई परवाह ही नही है।

हेरबराव—लाभस्तेपा जयस्तेपा कुतस्तेपा—उस आवारा को क्या फिक्र ? अपने जीवन-काल में ही पिताजी ने एक खेत लिख दिया है न उनके नाम ? वह उसे ही काफी समझता है। अव मेरे अधिकार में सिर्फ गिरगांव का वह मकान ही रहेगा।

रमा—घर लेकर क्या चाटना है ? अव अपने लिये चार कमरे रखकर, वाकी किराये से उठाना होगा। किरायेदार अच्छा मिल गया तव तो ठीक है, वरना वह भी एक झझट हो जायेगी। केरोपत जी क्या कह रहे थे ? क्या कुछ आशा है ?

हेरबराव—त्व पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत करे—अव उन्होंने काम हाथ म ले ही लिया है। उन्होंने वचन ही दिया है कि येनकेत-प्रकारेण वसीयतनामा को झूठा सावित कर देता हूँ। अव सारी दारो-मदार उन पर है। जो लोग वकीलो को वदनाम करते है, उसके वापो ने ऐसे वसीयतनामें नही किये होगे। आजकल यह आन्दोलन छिडा है कि वकीलो को वकालत छोड़ देनी चाहिए।—पाचजन्याय विद्महे

पावमानाय—उनके वाप अगर हरिद्वार मरने जाते, तव पता चलता उन्हे—आगमार्थं तु देवानाम—[कान्होबा आता है।]—आ गए विना पाँव धोये भीतर। धर्म ही छोड दिया है आजकल के लडको ने।

कान्होवा—वकील साहव आए हैं। उन्हे कचहरी जाने की जल्दी है ..

हेरबराव—वंदे विष्णु भवभयहरण सर्व—उन्हे भीतर क्यो नही ले आया ?

कान्होवा—वे आप ही को वाहर वुला रहे हैं। उनके पैरो में बूट है और आप यहाँ

हेरबराव—स भूमिर्विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशागुल—उनसे कहो बूट उतारकर आवे। अगर मोजे हो तो उन्हे पहने रहे। इस घर में पैर जमने के लिए इस देव की कृपा चाहिए।—पादयो. पाद्य समर्पयानि—[कान्होवा जाता है।]—देखा कितनी फिक्र है उन्हे ? ये मनुष्य नही, देवता हैं, देवता ! अरे कान्होवा, उन से कह दे, अगर बूट पहने है, तो उतारने की कोई जरूरत नही। यू ही चले आवे। हाँ व्यर्थ ही उन्हें देर क्यो हो ?—[केरोपत आते है।] - आइए। नमस्ते। पूजा पर वैठा हू। उठ नही सकता। आज इस गरीव पर इतनी कृपा क्यो ? अरी ओ ! उन्हें वैठने के लिए एक आसनी दे न ? ले, यह चौकी ही दे दे। हाँ, साहव ! वैठिए।

केरोपत—आज प्रोबेट की दरखास्त पेश करना है। इस से पहले आप से मिल लू इसलिए जानवूझ कर आया हूँ। वैकुठराव को सीधे अदालत में ही वुलवा लिया है।

हेरबराव—उसे क्यो वुलवाया है ?

केरोपत—उस दिन वसीयतनामा प ते समय वह वात जानवूझकर ही मैंने छोड दी थी।

हेरबराव—मतलव ? उसे कुछ दिया है क्या उनमें ?

केरोपत—दिया तो नही है। फिर भी अव सारी जायदाद उसी की है।

बूढा बडा उस्ताद था ।

रमा— पहले जनम का बैरी था, लेकिन इस जनम में बाप होकर आया मुआ । क्या दिया है वैकुंठलाला को ?

फेरोपत—उसे जायदाद का एक्जीक्यूटर नियत किया है—और सो भी अकेले उसी को ।

हेरबराव—लो, यह तो चोर के हाथ में ही खजाने की ताली पहुँच गयी । अब कैसा होगा ?—सुप्रतिष्ठिमस्तु—मालिकी के बिना ही कब्जा ? वाह, क्या किस्मत है बेटे की ?

फेरोपत—अ, इसकी आप कोई फिक्र न करे । लिखते वक्त ही वह वसीयतनामा इतनी गैर कानूनी भाषा में लिखा है कि—खैर छोडिये । बातें करने से क्या फायदा ? यथार्थ से ही अब टक्कर है । लेकिन मुख्य प्रश्न यह है. [चुप रहता है ।]

हेरबराव—अलकारार्थ अक्षता—अब प्रश्न बिल्कुल रखिए ही नही । केवल उत्तर—अब तो धडाधड उत्तर देने का वक्त आ गया है—पूजार्थ यथाकालोद्भवपुष्पाणि—अब कोई सकोच न कीजिए । खुल्लमखुल्ला जो होना है, हो जाने दीजिए । मुझे बातें करने का अब अधिक समय नही है । मुख्य प्रश्न खर्च का है । मामला सालीसिटर के सुपुर्द करना होगा । क्या खर्च होगा, इसका आज कोई अदाज नही लगा सकते । यह अदालत का खर्च है—सिर्फ इतना ही ध्यान में रखिए कि काफी है ।

हेरबराव—ओम् प्राणायस्वाहा ओम् अपानाय स्वाहा—खर्च की आप बिल्कुल फिक्र न करें । प्राण गिरवी रखने पडे तब भी कोई हर्ज नही । इसने तो अपने सारे गहने उतार देना तय कर लिया है । क्यों, सच है न ?

रमा—तो क्या करती ? देखिए वकील लाला, चाहे मेरे नाक और कान खाली रहें, लेकिन इस मुओ की तो नाक ही काट डालिए । सुनते हो,

वैकुठलाला का क्या किया जाए ? घर मे ये सब बाते होती रहेगी और वे दीवाल में कान लगाये रहेगे—

केरोपत—शावास भाभी ! आप ही ने कह दिया इसलिए ठीक हुआ, अगर मै कहता तो मुझ पर यह अभियोग लगता कि भाई-भाई को लडा रहा हूँ ।

हेरवराव—नान्य पथा अपनाय विद्यते—अव कोई दूसरा उपाय ही नही रहा । वह इतजाम मै किये देता हूँ ।

केरोपत—देखिए हेरवराव, जल्दवाजी में कोई काम न करना । वदनामी से डरकर ही सव काम होने चाहिए । इस तरह के मामले वडे नाजुक हुआ करते हैं । किसी के भी मन को न दुखाकर काम करना होगा । डाक्टर की तरह क्लोरोफार्म देकर पेट चीरना चाहिए और होश में आने से पहले ही टाँके लगा देना चाहिए । खर्च करने के लिए आप तैयार है ही । वैकुठ का भी इतजाम हो जाएगा । ठीक है, अव काम शुरू कर देने में कोई हर्ज नही ।

रमा—लेकिन नलिनी का क्या होगा ? यदि पलडा हमारी तरह झुक गया तो नलिनी को कुछ भी न मिलेगा । आप से उसका विवाह तय हो गया है । अव आप यदि हमारा पक्ष लेते हैं तो इस में उसका नुकसान नही है क्या ?

केरोपत—रमा भाभी, वकील का काम यानी कफन सिर से वाँधना है । अपने मुवक्किल की भलाई के लिए वक्त मौके पर अपने गले में भी फाँसी लगा लेनी पडती है । नलिनी की जायदाद के लिए मैं उससे विवाह नही कर रहा हूँ । यदि नि स्वार्थ बुद्धि से काम करता रहा, तो मैं इस जायदाद से दूनी जायदाद कमा लूगा, इतना मुझे विश्वास है । नलिनी को यदि सपत्ति की चाह है, तो उसे पूरा करने के लिए इस वसीयतनामे की जायदाद की ही जरूरत हो, यह वात नही है ।

हेरवराव—वह बिल्कुल मूर्ख है । उसकी क्या सुनने हो ?—यनि-कानि च पापानिजन्मान्तरकृतानि च—हर वक्त अच्छी डाँट देकर सोफ-साफ

कहे बगैर उसके दिमाग में कुछ भी नही आता। लेकिन ऐसे वक्त चुप रहना ही जरूरी है।

केरोपत—तो मै चला। रुपये तैयार रखना शुरु में—[कान में कहता है।]—इतने हो, तो काफी हैं।

हेरबराव—अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरण मम—अब हमारी लाज आप ही के हाथ मे है, केरोपत जी ! चाहे कुछ भी हो, कोई परवाह नही। झोली टाँग कर दर-दर भीख मागूंगा—पर मुकदमा जीतना ही चाहिए। इस वक्त अपना कौशल दिखाने में कुछ भी न उठा रखिए। जिन्दगी-भर आपका गुलाम बना रहूँगा।

केरोपत—अजी, आप यह क्या कह रहे है ? ऐसी बात कहना ठीक नही। कुछ भी हो, अखिर आप हमारे बुजुर्ग है। अच्छा, तो अब विदा दीजिए।—नमस्ते।—[जाता है।]

हेरबराव—आगत. सुखसपत्ति पुण्योऽह तव दर्शनात्—बहुत बडा आदमी है। ऐसे लोग हैं, इसीलिए दुनिया चल रही है और लोग कहते हैं कि वकीलो को वकालत छोड देनी चाहिए। यदि वकील लोग वकालत छोड़ दे

वैकुठराव—[प्रवेश करके]—तो दुनिया के आधे पाप जाते रहेंगे।

हेरबराव—लेकिन तुम्हारे जैसा चलता फिरता पाप वकील का बाप भी दूर नही कर सकता।

वैकुठराव—केरोपत के पिता भी वकील ही थे। यदि होमियोपेथी के सिद्धान्त के अनुसार देखा जाए, तो वड़े पाप से छोटा पाप निकलना ही चाहिए। ऐसा पुश्तैनी वकील यदि मेरे पीछे लगा दिया जाए तो मेरा सत्यानाश होने में एक महीना भी न लगेगा।

हेरबराव—अब जरा मुंह बंद रखेगा या नही ? देखता नही है, पूजा पर बैठा हूं।

वैकुठराव—वकील की छल-कपट से भरी बकवास मे आपकी पूजा में

कोई बाधा नही आई, लेकिन अपनी पीठ के भाई के चार शब्दो से ही आपकी पूजा लडखडाने लगी ? अरे रे भगवान, धन्य है तुम्हारा पक्षपात !

रमा—अब जरा चुप रहो, लाला।

वैकुठराव—दादा इस भगवान की पूजा कर है, मै अपने भगवान की—अपने दादा की पूजा कर रहा हूँ। भाभी, थोडे फूल दीजिए मुझे—या कि केवल वाक-पुष्पो से ही काम चलाऊँ ?

हेरबराव—अरे, मुझे सूझने तो दे कुछ। छि भूल गया।—कलश शख घटा धूप दीप स्थावरदीप—

वैकुठराव—सब नलिनी के कब्जे में चला जाएगा। मैं अब बिल्कुल माफ नही करूंगा।

हेरवराव—तू अब ट्रस्टी हो गया है, यह मै जान चुका हूँ।

वैकुठराव—रुपयो के कलश पर दृष्टि रखकर वकील ने शख फूंका होगा। अब आप घटी बजाइए और कोई भी धूप न जलाता हो तो मै दिये जलाये देता हूँ सारे शहर में। दादा, मेरी मानो। इस अदालत की झझट में न पडो। रुपया बरबाद होगा, इज्जत जाएगी, वक्त खराब होगा और अत मे अपने हाथ में भिक्षा-पात्र आएगा और वकीलो के बैंक अकाउट दो-चार शून्यो से बढ जाएँगे। जायदाद यदि नलिनी को मिल गई है, तो मिल जाने दो आखिर वह भी तो अपनी ही है। पुश्तैनी घरोबा है। उसे मिल गई, तो हम लोगो के बीच ही रहेगी। यदि अदालत की सीढी चढोगे तो दोनो तरफ से सिर्फ वकीलो के घर भरे जाएँगे।

हेरबराव—हाँ, वकीलो के ही घर भरने हैं मुझे। नलिनी का घर भरने के बदले यदि वकीलो के घर में सारी जायदाद चली जाए, तब भी कुछ हर्ज नही। इस में तुम्हारे बाप का क्या खर्च होता है ?

वैकुठराव—मेरे बाप की जायदाद खर्च हो रही है, इसीलिये मैं कह रहा हू। नलिनी को जायदाद मिले यह पिताजी की इच्छा थी।

उन्होने यह जायदाद वकीलो को नही दी थी ।

हेरंवराव—पूजा भी नही करने देगा मुझे ?

वैकुंठराव—अव खत्म कीजिये पूजा । काफी हो गई ।

रमा—यहाँ से चले जाओ न ?

वैकुंठराव—जाना है मुझे अदालत मे । इसीलिए जल्दी कर रहा हूँ । दादा अपनी पूजा समेटे, तव कही मुझे खाने को मिले ।

हेरंबराव—अभी तक मेरी जितनी पूजा की, क्या उतनी काफी नही हुई ?

वैकुंठराव—भगवान की पूजा की तरह आपकी यह पूजा भी त्रिकाल चलती रहेगी । दादा अव अन्तिम प्रार्थना रह गई है न ? भगवान से कहिए—भगवान् मुझे अदालत की सीढी चढने की दुर्बुद्धि न दो ।

हेरंवराव—पत्रं पुष्प समर्पयामि नमस्करोमि—हाथ जोडता हूँ तुझे अव । मेरा दिमाग न चाट ।

वैकुंठराव—दिमाग हो तो चाटू !

हेरंवराव—अव मुँह वद करता है कि मारूँ एक

वैकुंठराव—खडाऊँ कहिए । यहाँ खडाऊँ हैं, चरण की चर्म पादुकाएँ नही हैं ।

हेरंवराव—शखमध्ये स्थित तोय भ्रामित केशवोपरि

वैकुंठराव—भगवान भी शख हो जाएँगे उसके कारण

हेरंवराव—[गुस्से से चिल्लाकर]—अगलग्ना मनुष्याणा ब्रह्महत्या व्योपोहतु—[वैकुंठ के सिर पर शख फेंककर मारता है ।]—ले शख, यह रहा तेरा इनाम ।

वैकुंठराव—दादा, यह क्या किया ?

हेरंवराव—शख को शख से मारा ।

वैकुंठराव—क्या मिल नही थी ? नजदीक वह चन्दन का टुकडा पडा था । जल का पचपात्र था । देवघर की मूर्तिया थी । किसी देवमूर्ति से यदि मारते, तो कम से कम यह तो कह सकता कि देव ने मारा ।

लेकिन अव यदि अदालत में गया और किसी ने पूछा कि यह जख्म काहे का है, तो मैं यह कैसे कहूँ कि शख ने मुझे मारा ? दादा, आपने मुझे मारा और शख ने मुझे मारा, यह मैं अव कैसे कहूँ ?

रमा—जो पूजा की गई, क्या वह काफी नही हुई, लाला ?

वैकुठराव—अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽहं इति मामत्वा क्षमस्व परमेश्वर हो गया पूजा का भरत वाक्य । उठिए अव । भोजन करने चलिए । भाभी थोडा पानी दीजिए यह खून धो डालू ।

हेरबराव—पानी देने की कोई जरूरत नही । वेवकूफ ! गधे !! काफी हो गया तेरा साथ । अव जितनी जल्द इस घर से कृष्णमुख करेगा, उतनी ही मुझे खुशी होगी ।

वैकुठराव—लाल हो गया है मुँह । खून को न धोकर यही सूख जाने दूँ, तो वह आप ही आप काला हो जायगा

हेरबराव—तो फिर यहाँ से काला मुँह कर ही ले । आज से इस घर मे कदम भी न रखना ।

वैकुठराव—विना खाना खाए चला जाऊँ ?

हेरबराव—हाँ, हाँ ! विना खाना खाए !

रमा—यह कैसे होगा ? यदि जाना है तो खाना खाकर जाएँ ।

हेरबराव—मै एक न सुनूगा । विना खाना खाए यहाँ से फौरन चला जा ।

वैकुठराव—दादा, भगवान के सामने मुझे घर से भूखा वाहर निकाल रहे है । भगवान को यह पसद न होगा । क्या चला जाऊँ यू ही भूखा ?

रमा—नही, मै विना खिलाए नही जाने दूँगी ।

हेरंबराव—ऐसे शैतान को मै अपने साथ नही बैठने दूगा ।

वैकुठराव—आप के साथ बैठने को मै भी कहा तैयार हूँ ? चलो भाभी, दो गरम रोटिया दे दो, तो मै उन्ही को खाता हुआ चला जाऊँगा । पर इस घर से भूखा हरगिज बाहर नही जाऊँगा ।

[परदा गिरता है ।]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—बाबासाहब का घर

[रेवा फरनीचर पोछकर साफ कर रही है।]

रेवा—मनुष्य के जीवन का खेल मदारी के खेल से भी विलक्षण होता है। यह मेरा घर है। यहाँ की हर चीज पर मेरा अधिकार है। "है" क्यो कहू ? इस प्रत्येक चीज पर मेरा अधिकार हो जाता। मैंने अपनी चीजो को सहेजा, उन्हे पोछकर साफ किया—छोडो भी। मन का समाधान करने के लिए पहले मन को मारना पडता है। मरे हुए मन को कही ले जाकर जला डाला कि काम हो चुका। मन को जला कर राख कर दें और उस राख से दूसरे के द्वार पर चौक पूरे। दूसरे का आँगन रँगे और अपना टूटा हुआ घर मन मे खडा करें। मुझ विधवा को ऐश्वर्य के इस कुकुम की क्या जरूरत ? इससे तो क्या यह अच्छा नही है कि वह इस प्यारी लकडी को ही मिल जाए जो गृहस्थी के उदित हो रहे क्षितिज पर जल्द ही पदार्पण करेगी ? उदित हो रहे ऐश्वर्य-सूर्य की प्रभा बेचारी के ललाट को चमका दे।—[झाडने लगती है।]—मैं बाबासाहब की बडी बहू हूँ, यह कोई नही जानता। इसका किसी को भी पता न चलने दूगी यह मेरी प्रतिज्ञा है। वैकुठलाला मुझे यहाँ लाकर छोड गए हैं। नलिनी ने मुझे अपने घर में—हाँ, मेरे ही घर में—आश्रय दिया। अपने घर को अपना ही मानकर मै यहाँ रहती हूँ न ? फिर इस घर को झाडने-बुहारने में मुझे क्या शर्म ? अपने घर की सफाई करने से मुझे कौन रोकेगा ? मन ? भाड में जाए यह मन ! घर तो छोड दिया था पर 'उन्हे' थोडी भी तकलीफ होती, तो मुझसे

देखी नही जाती थी। हम भिखारी थे—लेकिन हमारे मन सम्पन्न थे। स्वर्ग से यदि वे देखे, मैं इस तरह दूसरे का घर झाडती-बुहारती दिख गई •

नलिनी—[प्रवेश करके]—यह क्या कर रही हो, रेवा भाभी ? क्या घर में कोई नौकर नही है ?

रेवा—ऐसा फरनीचर यदि नौकरो के हवाले कर दे, तो वह मिट्टी ही हो जाए।

नलिनी—पहले यह ब्रश नीचे रख दीजिए।

रेवा—अपना घर झाडने-बुहारने मे क्या हर्ज है ?

नलिनी—अपना घर समझकर आप यहा रहती है, यह आपका बडप्पन है। रेवा भाभी, मुझे व्यर्थ क्यो लजाती हो ? वैकुठराव आप को यहाँ ले आए। मुझे भी घर में एक बुजुर्ग की जरूरत थी। मुझे लगा भगवान ने ही आप को मेरे लिए भेज दिया। यदि सच कहूँ तो वैकुठराव से मुझे बडी घृणा है

रेवा—वैकुठ ला •वैकुठराव का मन बहुत बडा है।

नलिनी—कोई किसी का मन जाकर थोडे ही देखता है ? मेरा यह मतलब नही कि मन बडा न होना चाहिए। लेकिन बाहरी सलूक भी तो सभ्यता का हो ! इस तरह की गुस्ताखी सुशिक्षित मनुष्य को शोभा नही देती। आप ने ही उस दिन कहा था न, ? चार कदमो पर दवा-खाना था और वहाँ पहुँचाने को वे एक विक्टोरिया ले आए थे। इसे मजाक कहें या पागलपन ? मनुष्य को कुछ तो मनुष्य की तरह पेश आना चाहिए ?

रेवा—तुम उन पर बहुत नाराज मालुम होती हो ?

नलिनी—नाराज होने की बात ही है। उनके पिता और मेरे पिता—दोनो मे बडी घनिष्ठता थी। इसलिए उन्होने अपनी सारी जायदाद मुझे दे दी। बेचारे बूढे को किसी भी पुत्र ने कोई सुख न दिया। उनकी बडी इच्छा थी कि उनके एक लडकी हो। लेकिन लड़की भाग्य मे न थी।

इसलिए मुझे ही वे अपनी लडकी माना करते थे। वडा लडका सदानन्द आवारा निकल गया ·

रेवा—नही—नही ·

नलिनी—नहीं—नही क्या ? आप हैं वडी कोमल मन की। दूसरे की वदनामी आप को अच्छी नही लगती। लेकिन सच को छिपाने से काम कैसे चलेगा ? सदानन्द के सलूक से वावासाहव को वडा जवरदस्त धक्का ·

रेवा—क्या वे इतने वुरे थे ?

नलिनी—वुरे ! ऐसा कुपूत किसी के भी पैदा न हो। एक वेकार लडकी पर आसक्त होकर, उसे लेकर भाग गया ·

रेवा—विना विवाह किए ?

नलिनी—विवाह शायद कर लिया था। लेकिन वावासाहव उस के लिए एक धनी लडकी खोज चुके थे। व्याह भी तय हो गया था। लेकिन ये हजरत भाग गये उस वेकार लडकी के साथ और इधर वावा साहव को मुंह की खानी पडी। खैर, छोडो इन वातो को। गडे मुरदे उखाडने से अव क्या फायदा ? हेरवराव कैसे हैं, सो देख ही रही हो। घर में इतनी धन-दौलत है, लेकिन शिक्षा से वैर है। काम-धाम किस चिडिया का नाम है यह भी नही जानते। दूसरो की कमाई पर गुलछर्रे उडाना भर आता है। तीसरे रहे ये कुलांगार—एल० एल० वी० हो गए हैं, पर मनद ही नही लेते थे। वूढे को क्या दुख हुआ होगा, इसकी अव कल्पना ही कर लो।

रेवा—वावासाहव ने तुम को जायदाद क्यो दी इसका भेद अव खुला।

नलिनी—लोगो की भली चलाई। किसी की भलाई उनसे देखी नही जाती। मैं कौन उनके पास माँगने गई थी ! लेकिन नही। मुओ की यू ही आंखें फूटी जाती हैं। हेरवराव तो आगववूला हो रहे हैं।

रेवा—लेकिन उनके वडे भाई को कभी ऐसा न लगता।

नलिनी—यह कौन कह सकता है ?

रेवा—जानबूझकर ही उन्होने घर छोड दिया था ।

नलिनी—रेवा भाभी, आप वडी भोली हैं । उन्होने घर छोडा औरत के लिए । लेकिन आगे जायदाद मिलने की आशा उन्हे जरूर थी । वाप के मरने की राह ही देख रहे थे वे ।

रेवा—यह बिल्कुल असभव है । उनके समान त्यागी हाँ, मेरे ये केवल अनुमान है ।

नलिनी—आप बडी 'सैन्टीमेन्टल' भावुक हैं । कल्पना की उड़ाने काव्य में मीठी लगती हैं । व्यवहार में वे किस काम की ?

रेवा—हा, यह बात तो है कुछ-कुछ । नलिनी, मेरी गृहस्थी बडी सुखमय थी । व्यवहार की कठोरता का अनुभव मुझे विधवा हो जाने के वाद ही हुआ । विधवापन की गुलामी वडी विकट होती है । विधवा खरीदी हुई गुलाम होती है । जिसके मन में आवे, वही उस पर हुक्म चला सकता है । उसका अपना हक कुछ नही—लेकिन उस पर जरूर सब का हक होता है ।

नलिनी—छोडो इन वातो को । ऐसी वातो से बिल्कुल ऊब गई हूँ मैं । अरे, पर आप की आँखो मे ये आँसू क्यो ? मुझे माफ कर दो, भाभी ! यह न सोचना कि आप के दुख को मै कुछ कम लेखती हूँ । वात यह है कि दुख की वातें मुझसे बिल्कुल नही सुनी जाती । अरे यह क्या ? सिसक-सिसककर क्यो रो रही है ? चुप हो जाइए । कहती हूँ न कि मुझे माफ कर दो । भूल हो गई मुझसे । देखो—बिल्कुल खुश रहो—हँसती-खेलती रहो । आप को किस वात की कमी है यहाँ ? सौगध खाकर कहती हूँ कि यह ऐश्वर्य मेरा नही—आपका ही है, यही समझ लो । अब जरा हँसिए तो—हाँ ऐसा—ऐसा—अब कितना अच्छा लगा ?

रेवा—नलिनी वहिन, यह तो उसी तरह हुआ कि आसमान टूट पडे और टिटिहरी उसे जाकर सम्हाले । अभी तुम्ही ने कहा था कि कल्पना की उडानें न भरनी चाहिए । और अब तुम्ही मुझसे यह कल्पना करने को कह रही हो कि तुम्हारे ऐश्वर्य को मैं अपना ही समझूं !

नलिनी—कल्पना न कीजिए—यथार्थ में समझिए कि यह सब आप का ही है। बाबासाहब से मेरा कोई भी रिश्ता न था फिर भी वे यह सब मुझे दे गए हैं। उसी तरह समझ लीजिए कि मैंने भी यह सब आप को दे दिया है।

रेवा—ऐश्वर्य ? मैं गरीब विधवा इस ऐश्वर्य को लेकर क्या करूँगी ? धनी विधवा के पीछे चापलूस और रुपये ऐंठने वाले चोर किस तरह लग जाते हैं, यह मैंने देखा है. मैं उस नरक की यातना से बचना चाहती हूं। मैं एक गरीब विधवा की तरह ही तुम्हारी सेवा करूँगी। तुम्हारा घर झाड-बुहार कर, साफ-सुथरा रखूंगी और तुम्हारा सुख देखकर, सुखी होऊँगी।

नलिनी—ऐसा क्यो कहती हो, भाभी ? देखो, फिर आपकी आँखो में आँसू आगए ? मेरी सौगध है अगर एक आँसू भी टपकाओ ! यदि इस तरह रोओगी, तो मै यही समझूंगी कि आप मुझे पराई समझती हैं। आप इस विषय को छोड दे। जाइए, पहले यह अश जाकर भीतर रख आइए।

रेवा—नलिनी बहिन, मै कौन हूँ, कहाँ की और कैसी हूं, यह तुम नही जानती। फिर भी तुम्हें मेरी इतनी चिन्ता क्यो ? क्यो इतनी आत्मीयता बता रही हो ?

नलिनी—अब आप एक शब्द भी न बोलें। भीतर जाइए और कुछ पढिए।—[मार्तंडराव आता है।]—आइए मार्तंडराव जी, अ ! आपके साथ यह कौन है ?

मार्तंडराव—यह मेरी पत्नी है।

नलिनी—क्या मजाक कर रहे हैं मुझ से ? आपकी पत्नी क्या मैंने देखी नही है ?

मार्तंडराव—वह न ? अजी, वह तो गई। मुझे छोडकर चली गई। विरह दुख को चौगुना करने के लिए इस अनाथ को यही छोडकर, अपनी चार सौतों से मिलने बेचारी स्वर्ग मे चली गई। यह मेरी नई

पत्नी है। देख, ये है नलिनी जी। समझी ?—बडी भोली है बेचारी प्रणाम कर इन्हे और उन्हें भी। ये कौन ? अरे वाह, ये नरसोपत इधर कहाँ आ पहुँचे ? नलिनी जी, यह औरत आप के घर कैसे आई ?

नलिनी—मुझे प्रणाम करने की क्या जरूरत है ? आप मेरे बुजुर्ग है, इसलिए आपकी पत्नी भी मेरे लिए माता के समान है।

मार्तंडराव—यह बात नही ! कुछ भी हो, आखिर वह नई दुलहिन है। किसी न किसी को प्रणाम करना उसे सीखना ही चाहिए।

नलिनी—लेकिन मेरा तो अभी विवाह नही हुआ है।

मार्तंडराव—क्या करूँ, गोत्र नही मिलना। वरना

नलिनी—अजी महाशय ! मुझे मगल नही है और मुझे जिंदा रहने की भी बडी इच्छा है।—[रेवा जाने लगती है]—

मार्तंडराव—ये देवीजी यहाँ कैसे पहुँची ? जरा ठहरिए, देवीजी ! अभी जाइए नही।

नलिनी—आप जाइए, भाभी।—[रेवा आती है।]—हमारे रिश्ते में है ये। आजकल मेरे घर ही रहती हैं।

मार्तंडराव—नर्स आप के घर में ! आसार ठीक नही है। अजी, ये नरसे—यानी अब क्या कहूँ आप से—आप के सामने विशेषण नही लगा सकता। बताइए, विधवाएँ ही नर्स का पेशा क्यो करती है ? यह आपने कभी सोचा है क्या ? मेरी सुनिए, उन्हे या तो पुनर्विवाह करने के लिए मजबूर कीजिए अथवा घर से निकाल दीजिए। अक्लमदो को इन विधवाओ को अपने घर मे आश्रय न देना चाहिए। हा, पर एक बात अच्छी है कि आपके घर में कोई पुरुष नही है। आया था उसी काम के लिए-वही भूल गया इस झमेले में—अरी ए, ! ठीक से बैठ ! कुरसी के बेत क्यो उधेड़ रही है ? ये क्या कहेगी ?—मै आज हेरवराव के घर से आ रहा हूँ मैने उनका वकालतनामा ले लिया है, यह तो आप जानती ही होगी। ठीक है। आपको प्रोबेट मिल गया है। जायदाद का कब्जा मिल गया है। उन के हिस्से मे सिर्फ एक घर ही रह गया है।

उस पूरे घर के लिए एक किरायेदार मिल गया है। उस किरायेदार के लिये आधा घर काफी नही होता। आपका यह बँगला बहुत बडा है। हेरवराव के परिवार में कुल मिलाकर तीन आदमी तो है ही। यदि वे सब लोग इसी बँगले में आकर रहने लगें, तो आपको भी साथ हो जायेगा और उसका भी काम निकल जाएगा। फिर क्या कहना है आपका? क्या अभी आज ही आ जाएँ रहने को?

नलिनी—मुझे सोचना पडेगा।

मार्तंडराव—यह कहिए न, कि पूछना पडेगा। केरोपंत जी की भी यही राय रहेगी।

नलिनी—किसी से पूँछने का कोई सवाल नही। खुद मुझे ही सोचना होगा।

मार्तंडराव—ठीक है। सोचकर बताइएगा। कब आऊँ? कल आऊं? ठीक है। कल ही आता हूँ। और देखिए, उस नरमोपंत को घर से बाहर निकाल दीजिए। आप यूँ ही बदनाम हो जाएँगी। आप का मित्र हूँ, इसलिये कह रहा हूँ। —अरी ए, चल, आगे बढ!—देखिए, यदि आप उसे आश्रय दिए रहेंगी, तो वह कभी पुनर्विवाह न करेगी। मेरी यह पत्नी— इसका नबर आ गया है अब। यह मरेगी, यह निश्चित ही है। पुनर्विवाह करूँ, तभी मेरी स्त्री जिंदा रह सकती है, वरना वैसे मेरी कोई स्त्री जिंदा न रहेगी, यह पत्थर की लकीर है। मेरी इतनी सहायता कीजिए। उसे घर से निकाल दीजिये। तो अब जाऊँ मैं? कल सुबह—नही—दोपहर को—हाँ, दोपहर को ही फिर हाजिर होता हूँ। नमस्ते।—[जाता है।]—

नलिनी—आखिर ये पुरुष सोचते क्या हैं? स्त्रियों को क्या समझते हैं ये? खिलौना या जानवर? क्या सभी पुरुषों की नजरें इसी तरह की होती हैं? फिर ये देशकार्य क्या खाक करेंगे? जो अपनी ही बेटियों और मा-बहिनों की पवित्रता पर शक करते हैं, उनमें दुनिया का उद्धार करने की योग्यता कहाँ से आएगी? इन्ही मार्तंडराव को देखिए, कितने

ही सार्वजनिक आन्दोलनो में यह नेता रहते हैं। अखबारो में इनकी तारीफ के बडे बडे पुल बांधे जाते है। लेकिन उनके खानगी वर्ताव का यह हाल है! अपवित्र लोग भी क्या कभी देशोद्धार कर सकते है? कितने घिनौने और गन्दे मन हैं इनके? मुझ जैसे एक व्यक्ति को भी जब इनका साथ बरदाश्त नही होता, तब आम जनता पर ये किस तरह अपना प्रभाव रख सकेंगे? वही केरोपत को देखो, उनका वर्ताव कितना शुद्ध, भाषण कितना मोहक, मुद्रा कितनी गभीर, वाणी कितनी मधुर! क्या सौन्दर्य का आकर्षण जनता के मन को अपनी ओर नही खीच लेगा?

रेवा—[प्रवेश करके]—केरोपत आए हैं। उन्हें आने दू यहाँ?

नलिनी—यह क्या पूछने की जरूरत है?—[रेवा जाती है।]—यही फर्क है! मार्तंडराव सीधे भीतर घुस आए। केरोपत वही कर सकते थे।—[केरोपत आते हैं।]—इजाजत की इतनी जरूरत क्यो मालुम हुई?

केरोपत—शिष्टाचार का पालन करना चाहिए। मुझे दुनिया में रहना है। वैंकुठराव की तरह मैंने हाथ में हल नही पकडा है। दूसरो से तुलना क्यो करूँ? स्वय हमें जो अच्छा लगता है उसी तरह हमे सलूक करना चाहिए। शिष्टाचार पालन करना कोई अपने प्राणो को सकट में डालना नही है।

नलिनी—सभी के दिमाग मे यह बात कहाँ आती है?

केरोपत मैं बहुत सी बाते करने के इरादे से आज आया था। लेकिन सामने तुम्हें देखते ही मेरे मन की वाणी कुठित हो गई। मेरे सशक हो रहे मन में तुम्हारे दर्शन ने निर्भयता की शक्ति भर दी। शब्दो का विनिमय किये बगैर ही शका का समाधान हो गया। नलिनी, हमारा पेशा हमें सशक बना देता है। यह सच है कि व्यवहार में हम किताबी ढग से सलूक करते है, लेकिन जब व्यवहार से जरा हट जाते है, तब

"आर्गूमेन्ट" (तर्क) की अपेक्षा "सेन्टीमेन्ट" (भावना) ही प्रबल होने लगता है। तुम्हारा क्या ख्याल है ?

नलिनी—मेरा क्या ख्याल होगा ? जीवन के प्रवाह के साथ खेलने की मुझे पहले से ही आदत है। परिस्थिति आ जावे, जीवन-सागर में वह तूफान उठा दे और उन उमडती हुई लहरो पर मजे में तैरती रहूँ इसी मे मैं खुश रहती हूँ। यदि शान्ति है, तो लहरो पर तैरना आता ही है।

केरोपंत—यह देखकर कि ऐश्वर्य पाकर भी मेरी रमणी का स्वभाव नही बदला, किस प्रेमी को आनन्द न होगा ?

नलिनी—जिसे ऐश्वर्य की परवाह होगी, उसे। ऐश्वर्य के लिए मैं कभी लालायित न थी। गरीबी की तडप से भी मैं परिचित न थी। मैंने स्वप्न में भी कभी यह इच्छा न की थी कि बाबासाहब की जायदाद मुझे मिल जाए। जब मिल ही गई है और बिना मांगे मिली है, तो उसका उपभोग करने में मैं कभी भी अपनी कमजोरी न दिखाऊँगी। अभी हेरबराव की तरफ से मार्तंडराव वकील आए थे

केरोपंत—हाँ मुझ से भी उन्होने हेरबराव का सदेशा कहा। बड़ा नाजुक मामला उठ पडा है।

नलिनी—मुझे तो उसमें कुछ भी नाजुक प्रतीत नही होता। ऐश्वर्य को जिस तरह मैने आनन्द से अस्वीकार किया है, उसी तरह अपनी परिस्थिति को उन्हें भी क्यो न महसूस करना चाहिए ? अब यह घर मेरा है। अपने घर में मैं रहूँगी या कि मेरे आश्रित ही रहेंगे। किसी पर यदि उपकार ही करना है, तो इस घर को किसी पब्लिक कार्य के लिए दे देने में मुझे जरा भी झिझक न होगी। लेकिन यू ही अपने हक की शान बघारने वाले हेरबराव जैसे 'हक के गुलामो' की मैं एक न चलने दूँगी।

वैकुंठराव—[प्रवेश कर के]—बिलकुल ठीक है। नलिनी जी "पजेशन इज नाईन पुआइंटस् इन ला" (Possession is nine points

in law) दादा यह चाल खेल रहे है और कानून की अभेद्य चहार-दीवारी की खिसकती हुई ईंट हटाकर, तुम पर गोली चलाने की इच्छा रखने वाले किसी वकील का यह हमला है।

नलिनी—विना पूछे कही भी घुस आने का वीडा क्या तुमने ही उठा लिया है ?

वेंकुठराव—पति-पत्नी के एकान्त को छोडकर, दूसरे किसी भी स्थान पर जाने मे मुझे कोई शर्म नही मालूम होती।

केरोपत—नलिनी मेरी

वेंकुठराव—मुवक्किला है, मै जानता हूँ। वकील की मुवक्किला होने से उसे अपने चरित्र को ताक मे रख देना चाहिए, ऐसा किसी भी कानून में नही लिखा है। मैं नलिनी का ट्रस्टी हूँ और उससे विश्वासघात करने वालो पर कडी नजर रखना मेरा कर्तव्य ही है।

नलिनी—मेरी चिन्ता करने की किसी को जरूरत नही। अपने हित की रक्षा के लिए मै स्वय समर्थ हूँ।

वेंकुठराव—और यह समर्थ महाराज ? इनकी क्या गत ? यदि तुम स्वय अपना हित देखने लग जाओगी, तो इन समर्थ महाराज का मठ किस दुर्जनगढ पर स्थापित करोगी ?

केरोपत—मेरा मन इतना सकीर्ण नही जो केवल वाग्वाणो से छिद जाए। देश-सेवा के लिए जिसने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है, उसे ऐसे वाक्प्रहारो को वरदाश्त करने की ताकत रखनी ही चाहिये।

वेंकुठराव—देश सेवा ! केरोपत, प्रैक्टिस वढाने के लिए देशभक्ति पर एक ही छाप के भाषण देने वाले वकीलो के मुह से निकला हुआ "देशभक्ति" शव्द भी मेरे कानो को वड़ा अप्रिय लगता है। केवल भाषणो से ही यदि देश की दशा सुधारी जा सके, तो ग्रामोफोन के घूमते हुए रिकार्डों से भी देश का उद्धार हो जायेगा। हर गाव मे भाषणो से भरी प्लेटो के साथ एक एक ग्रामोफोन रख दिया कि हो गया देश का उद्धार। केरोपत, देश के लिए आप ने क्या किया है ?

केरोपत—तुमने भी ऐसा क्या किया है कि जिससे अपनी उज्ज्वल देशभक्ति की रामकहानी मै तुमसे कहूँ।

वैकुठराव—मैने ? बडे पागल हो ! मैं अपने को देशभक्त कहाँ कहलवाता हूँ ? मैं तो हल पकडने वाला एक मामूली खेतिहर हूँ। देशभक्ति का झूठा दिखावा करने लायक चालाकी मैं अभी तक नहीं सीखा हूँ। जब उसे सीख जाऊँगा, तभी ऐश्वर्यशालिनी नलिनी से विवाह करने का झूठा ढोग रचना मुझे आसान हो जाएगा।

नलिनी—वैकुठराव, अभी तक तुम्हे इस घर में आने की मैंने मनाही नही की। इससे लाभ उठाकर तुम मनमाना बके जा रहे हो। यदि तुम्हारा यही रवैया रहा, तो आगे चलकर मुझे वह भी करने के लिए मजबूर होना पडेगा।

वैकुठराव—देख लिया केरोपत ? जो हमउम्र होते है, वे एक दूसरे पर इसी तरह हुकूमत की धाक जमाते हैं। और ऐसी प्यार की हुकूमत की इज्जत करने वाला मुझ जैसा कोई गुलाम सहज ही उस हुकूमत के आगे सिर झुका देता है। नलिनी, तुम्हे कोई असुविधा न हो और केरोपत की समस्या भी हल हो जाए, इसलिए दादा का इतजाम मैं किए देता हूँ। मेरे खेत की झोपडी दादा के रहने के लिए काफी है। दूसरे का घर जबरदस्ती हथियाने की इच्छा से उन्होंने मुझे अपने घर से निकाल दिया था। पर मेरा घर उनके काम आवे, इसलिये मैं अपने आपको ही अपने घर से निकाल दूगा। अब तो आप की समस्या हल हो गई ? गुडबाई !—[जाता है।]

नलिनी—इन्हें कहा क्या जाए ?

केरोपत—परोपदेशे पाण्डित्य करने वाला एक गैरजिम्मेदारी जानवर। नलिनी, अपने कोमल हृदय में ऐसे शरारती समाजकटक की याद भी न आने दो। जिस महत्वपूर्ण प्रश्न को पूछने के लिये मैं आज यहाँ आया हूँ, उसका उत्तर देने के लिए तुम्हें अपने मन को प्रसन्न रखना अत्यन्त आवश्यक है।

नलिनी—लेकिन मेरा प्रण ?

केरोपत—तुम्हारा प्रण पूरा होने को अब और क्या बचा है ?

नलिनी—वैंकुठराव की तरह मैं भी आप से पूछना चाहती हूँ कि देश के लिए आप ने क्या किया है ?

केरोपत—जब कि सारे अखबार मेरी देशभक्ति का गुणगान कर रहे हैं, तब तुम्हे विश्वास दिलाने के लिये दूसरी कर्नवतियाँ करने की क्या जरूरत ? आत्म-स्तुति के असीम अभिमान की बलि-वेदी पर मेरा बलि क्यो देती हो ? प्रेम की मगलमयी देवी के सामने आत्म-दान करने के लिये प्रस्तुत इस प्रेमी की आत्मश्लाघा रूपी दानव के सामने व्यर्थ की क्यो बलि देना चाहती हो ?

नलिनी—क्षमा कीजिए । मेरी कमजोरी के लिए मुझे माफ कर दीजिए । देशभक्ति के लिए मुझे माफ कर दीजिए । देशभक्ति के लिए आप के हाथ से हुआ कोई प्रचण्ड साहस का काम जब तक मै स्वय नही देख लेती, तब तक आप मेरे पाणिग्रहण की याचना न करें । आँचल पसार कर आप से सिर्फ यही भीख माँगती हूँ ।

रेवा—[प्रवेश करके]—थालिया लगा दी है । वकील साहब भी यही भोजन कर रहे है न ?

केरोपत—प्रेम की थाली इस तरह अचानक खीच लेने बाद, भोजन की थाली का अन्न मुझे कैसे मीठा लगेगा ? नलिनी, यह कौन है ?

नलिनी—यह ? एक अनाथ विधवा है । खून के रिश्ते का स्पर्श भी न होते हुए अकारण प्रेम के बधनो से मुझे बाँधकर रखने वाली एक पराई स्त्री है । उसे देखते ही क्या आप को ऐसा नही लगा ?

केरोपत—सिर्फ देखकर ही ?

नलिनी—हाँ—सिर्फ देखकर ही मैं उसकी गुलाम बन गई । उसके हाथ के दो कौर खाइए, तो आप को भी यही लगने लगेगा । चलिए ।—

[जाते हैं । परदा गिरता है ।]

———

दूसरा दृश्य

[स्थान—कचहरी का क्षेत्र]

[हेरवराव झल्लाया हुआ बोलता है]

हेरवराव—इन वकीलो से भगवान ही बचाये ! इनके साथ चक्कर काटना बड़ी परेशानी है। कितनी अदालते हैं, कोई ठिकाना है ? मोटर होती, तो सारी बबई छान डालने में भी कोई तकलीफ न थी। लेकिन अब कहा की मोटर ? अब तो सिर्फ दूसरो की मोटर देखना और यह कहना कि हमारी मोटर भी इसी मेकर की थी—बस, इतना ही रह गया है। रोल्सरॉईस में चढने वाला यह हेरवराव अब सडको पर जूतियां चटकाता घूम रहा है। इनका अदालत खफीफा का काम आखिर खतम भी कब होगा ? उन्होंने मुझसे अदालत के बरामदे में ही ठहरने के लिए कहा है। लेकिन इस जगह खडे होने में मुझे प्राणांतिक दुख हो रहा है। कोई परिचित मिल जाए तो यही समझे कि मैं ही किसी मामले में फस गया हूं। बाज आया इस अदालत से ! इससे तो सडक पर खडे रहना ही अच्छा। पैसे के लिए लोग आज तक मेरे पीछे चक्कर काटा करते थे, उसी के लिए अब मुझे वकील का दामन पकडकर घूमना पडता है। पर करें क्या ? पिता जी वसीयतनामा लिखकर घुटाला न कर रखते, तो यह मौका कभी न आता। वैसे अच्छा ही हुआ जो वसीयतनामा छोड़ गए। वसीयतनामा न होता, तो सभी भाईयो को हिस्सा मिलता। इससे तो बेहतर है कि जायदाद दूसरे के पास चली जाए। वसीयतनामा जरूर चाहिए। वसीयतनामा न होने कितने अनर्थ हो जाते हैं। राजा दशरथ मृत्यु से पहले यदि वसीयतनामा छोड जाते, तो क्या राम का वनवास न टल जाता ? पांडु राजा बखूबी जानते थे कि स्त्री को स्पर्श करते ही मेरे प्राण-पखेरू उड जाएंगे। स्त्री को स्पर्श

करने से पहले यदि वे वसीयतनामा छोड जाते तो महाभारत का भयकर अनर्थ सहज ही टल जाता। शिवाजी महाराज इतने बडे राजनीतिज्ञ थे, लेकिन वसीयतनामा छोडना भूल गए। इसीलिए तो सभाजी ने आगे चलकर अनेक अनर्थ किए। इसलिए जहाँ जायदाद है, वसीयत-नामा जरूर ही चाहिए। वाद में अच्छा हो या बुरा, लेकिन कुल मिला कर सब तरफ से सतोप होता है।— क्या हो गया केरोपत को ?

कान्होवा—[प्रवेश करके]—केरोपत ने कहा है कि अब घर जाइए। वही आकर मिलता हूँ।

हेरवराव—घर पर कब्जा करने की तरकीव खुद ही ने वताई और खुद ही इस तरह अव कन्नी काट रहे हैं। कब्जे मे अगर देर हो गई, तो वह छोकरी घर में पैर जमाकर बैठ जाएगी।

कान्होवा—दादा, मैंने कुछ वातें सोची है इस मुकद्दमे मे। मैं उन्हे केरोपत को सुझाने वाला था लेकिन उनके सामने बाते करने मे मुझे डर लगता है।

हेरवराव—कौन सी वाते सोची हैं तुमने ?

कान्होवा—वताऊँ ? मगर आपको न जची तो हँसना नही। केरोपत को वे वाते सुझा ही देना चाहिए। मैंने ऐसी वढिया वाते सोची है, जो कभी केरोपत वकील के दिमाग मे भी न आएँगी।

हेरवराव—अच्छा ! वताओ तो सही, मुकद्दमें में और वीमारी मे सभी की सुननी चाहिए।

कान्होवा—मुख्य वात यह है कि यह वसीयतनामा सच है या नकली ? यदि सच है, तो उस पर जिस डाक्टर ने गवाही दी है, वह व्यक्ति डाक्टर ही था ? यदि वे सच में डाक्टर थे, तो क्या वावासाहव को जरूरत पड गयी थी ? मतलव यह कि क्या वावासाहव सचमुच वीमार थे ? जव वे वीमार थे तो उस हालत में वे हरिद्वार मे ही थे या कि ववई में थे ? यदि ववई में थे, तो हरिद्वार की गवाही झूठ हो जाती है। अच्छा, मान लो यह सिद्ध हो जाता है कि वे हरिद्वार जाने के लिए

तैयार थे ? मतलब यह कि क्या बाबासाहब सचमुच मर गए ? और महत्वपूर्ण बात यह है कि बाबासाहब नाम के कोई महाशय इस दुनिया मे सच मे थे या नही ? यदि सप्रमाण यह सिद्ध हो जाता है कि बाबासाहब नाम के कोई महाशय बिल्कुल थे ही नही, तो वसीयत-नामे के सच या नकली होने का फैसला ही हो जाता है।

हेरंबराव—बस, आखिर मास्टर ही तो ठहरे। अगर यह साबित हो गया कि बाबासाहब नाम के कोई महाशय थे ही नही, तो फिर जायदाद कहाँ से आई ?

कान्होबा—अरे यह तो मेरे दिमाग मे ही न आया। गरज यह कि सभी बाते लडखडा गयी।

हेरंबराव—तुम्हारी ही अक्ल है। आखिर ऐसा ही होगा। अरे कान्होबा वह मनीबेग जेब से झाँक रहा है। उस में पैसे रखते हो न ? मनीबेग को ऐसा बाहर नही दिखने देना चाहिए। इधर लाओ देखें ? चार ही आने हैं शायद ? लेकिन यदि मनीबेग गुम गया तो वह है चार रुपये का। क्या तुम्हें जरूरत है इन पैसो की ? किस लिए ? पैदल ही जाओ। मुझे ट्राम से जाना है। मनीबेग रहने दे मेरे पास। और देख, वह क्षमा आ रही है। पकड लेना उसे और मैने परसो जैसा तुझसे कहा था, वह वचन ले लेना उससे। छोड़ना नही बिल्कुल। जरा रोब मे बातें करना नही तो वह तुझे ही बना देगी।

कान्होबा— छि ! छि ! वह क्या बनाएगी मुझे ? मैं उसका बाप बना बैठा हूँ।

हेरंबराव—अरे ऐसा नहीं कहना चाहिए। तुझे उससे विवाह करना है।

कान्होबा—अरे हाँ, फिर से गलती हो गई !

हेरंबराव—देख, वह आ गई। मैं जाता हूँ अब। बिल्कुल पीछे पड जाना। छोडना नही।

[जाता है। क्षमा आती है।]

कान्होबा—क्षमा, अजी ओ क्षमाजी ! जरा ठहरो तो।

क्षमा—मुझे जाना है रेवा भाभी के दवाखाने में।

कान्होबा—मतलब ? क्या तुम्हें तपेदिक हो गया है ?

क्षमा—तपेदिक हुआ है तुम्हारी अक्ल को। क्या मै तपेदिक की बीमार दिख रही हूँ।

कान्होबा—चेहरा जरा फक दिख रहा है। शायद धूप की वजह से हो ? क्षमा, कल मैंने जो पूछा था, उसका क्या हुआ ?

क्षमा—क्या ऐसी बातें आम रास्ते मे पूछी जाती है ? विवाह की बात करने के लिए उचित स्थान होना चाहिए।

कान्होबा—इस तरह क्यो उड रही हो, क्षमा ? अब क्या आम रास्ते में तुम्हारे चरण पकड लूं ?

क्षमा—एक बार कह चुकी कि नौकर से कभी विवाह न करूंगी।

कान्होबा—अब तो नौकर हो चुका हूँ। इसका क्या उपाय ?

क्षमा—नौकरी छोड दो। तुम्हे बीस हजार रुपये जो मिल गए हैं अब ?

कान्होबा—यह मै मानता हूँ। पर छ वर्ष नौकरी कर चुका। सिर्फ चौबीस वर्ष और गुजरे कि पेंशन मिलेगी।

क्षमा—मतलब यह कि जितनी कर चुके हो, उसके चौगुने वर्ष नौकरी करके अगर जिंदा रहे, तो पेंशन मिलेगी। क्या तुम्हें नही लगता कि यह बेवकूफी है ?

कान्होबा—यह मै भी मानता हूँ। पर यह सेन्टीमेन्ट है।

क्षमा—सेन्टीमेन्ट ?

कान्होबा—*क्या तुम सेन्टीमेन्ट नही समझती ? दादा कहते है, सेन्टीमेन्ट* किसी भी झगडे पर एक रामबाण उपाय है।

क्षमा—सेन्टीमेन्ट शब्द का अर्थ भी जानते हो ?

कान्होबा—शब्द का जो अर्थ कोष में होता है उसी को लेकर काम नही चलता। दादा कहते है कि व्यवहार में हर शब्द का एक अलग ही व्यवहारिक अर्थ हुआ करता है सेन्टीमेन्ट शब्द को ही लो। सेन्टीमेन्ट का चाहे जो अर्थ हो सकता है। अभी मैंने तुमसे विवाह करने के लिए

कहा । यह हुआ एक सेन्टीमेन्ट ।

क्षमा—और मैने तुम्हारी अर्जी नामजूर कर दी । यह भी तो सेन्टीमेन्ट ही हुआ न ?

कान्होबा—पर दादा ने कहा है, क्षमा से ही विवाह करो । दादा की बात कैसे टालू ?

क्षमा—मै इन्कार कर दू, फिर भी ?

कान्होबा—दादा का हुक्म है । वहाँ कोई चारा नही । तुमने आज 'नही' कह दिया । फिर भी तुम्हारे 'हाँ' कहते तक मुझे रुकना ही होगा ।

क्षमा—प्राण चले जाएँ, पर तुम से विवाह न करूँगी ।

कान्होबा—प्राण चले जाएँ, पर तुम से विवाह किए बगैर न रहूँगा । दादा क्या कहेगे ?

क्षमा—दादा ने तुम से मेरे साथ ही विवाह करने को क्यो कहा ? तुमने पूछा था उनसे ?

कान्होबा—उनसे, और पूछना ? दादा को सिर्फ हुक्म देना है और मुझे उसका पालन करना है ।

क्षमा—मुझे देर हो गई । चलो, छोडो मुझे । यदि इस तरह सडक में खडे खडे बाते करते रहेगे, तो लोग हमे बेवकूफ कहेगे, ।

कान्होबा—मै यह मानता हूँ । लेकिन दादा पूछेगे तो उनसे मै क्या कहूँगा ?

क्षमा—कह देना कि मैने इन्कार कर दिया । यह भी कहाँ की झझट है ? नही तो ऐसा करना, नलिनी दीदी से ही पूछ लेना । वही कह देगी तुमसे, जो कहना होगा ।

कान्होबा—छि ! छि ! दादा यह पसद न करेगे फिर भी पूछकर देखता हूँ ।

क्षमा—लेकिन दादा का तुम्हारे पीछे यह तकाजा क्यो है कि तुम मुझ से ही विवाह करो ?

कान्होबा—दादा कहते हैं कि तुमसे यदि मेरा विवाह हो गया, तो पुराने घर में हमारा प्रवेश हो जाएगा। तुम हमारे घर की हो गई कि *हम नलिनी पर प्रभाव डाल सकेंगे। हमने अब अपील की है।* नीचे की अदालतो के फैसले कैसे भी हो, पर हाईकोर्ट मे मुकद्दमा हमी जीतेंगे ऐसा केरोपत ने दादा से कहा है।

क्षमा—मतलब ? क्या केरोपत तुम्हारी तरफ से भी वकील है ?

कान्होबा—वैसे उन्होने हमारा वकालतनामा नही लिया है। लेकिन गुप्त रीति से आकर खानगी सलाह दे जाया करते है। अब सारे केस की पैरवी सालीसिटर्स के मार्फत ही होगी। मुझे जो बीस हजार रुपये मिलने वाले हैं, उन्ही से यह मुकद्दमा लडा जाएगा।

क्षमा—यदि केस ही में सारे रुपये खर्च हो गए तो मुझसे विवाह करके आगे तुम्हारा कैसे चलेगा ?

कान्होबा—यह मै मानता हूँ। लेकिन दादा जो कहते है।

क्षमा—यह सब छोडो। तुम भी कुछ नही समझते और मैं भी कुछ नही समझती। तुम दीदी से ही बाते कर लो। घर में बडो के मौजूद होते हुए मै खुद कुछ न कर सकूगी। जैसे तुम्हे दादा है, उसी तरह मेरे एक दीदी है। दीदी से पूछकर बताऊँगी।

कान्होबा—यह मै मानता हूँ। लेकिन दीदी से पूछकर फिर तो मुझ से 'हाँ' कहोगी ?

क्षमा—यह भी दीदी से ही पूछकर कहूँगी

कान्होबा—सच कह दूं तुम से क्षमा ? सिर्फ दादा ने कहा है, इसीलिए मै यह नही कह रहा हूँ। मैने स्वय भी यह तय कर लिया है कि यदि विवाह करूँगा तो तुम्ही से। प्रेम-वेम की बातें मैं खाक नही समझता। परन्तु तुम्हारी जैसी चतुर पत्नी मिल जाने से मुझे अपनी गृहस्थी की चिन्ता न रहेगी। पहले से ही मुझे किसी न किसी के भरोसे रहने की आदत लग गई है। ऊपर से अब दादा मुझ से अलग जाकर रहने को

कह देंगे । और अगर ऐसा हो गया तो मेरे दादा होने के लिए तुम ही एक योग्य दिख रही हो ।

क्षमा—शायद यह सेन्टीमेन्ट आ गया अब ?

कान्होबा—बिल्कुल ठीक । यही देख लो । मुझे क्या चाहिए, यह मेरी अपेक्षा तुम्ही अधिक समझती हो ।

क्षमा—अब मै भी सेन्टीमेन्ट कुछ-कुछ समझने लगी हूँ । तुम्हारे दादा जो कहते है, वह झूठ नही । सेन्टीमेन्ट का नाम लेते ही बहुत सी पहेलियाँ आप ही आप हल होने लगती है ।

कान्होबा—यह भी मै मानता हूँ । इससे क्या मै यही समझूं कि तुमने 'हाँ' कह दिया ?

क्षमा—पहले तुम मेरी एक बात सुनो । तुम्हारे दादा आजकल इस मुकद्दमे में बडी कोशिश कर रहे हैं । जिस घर में जाना है, उस घर की पूरी पूरी जानकारी हुए बगैर, हम जैसी आजकल की लड़कियाँ विवाह के लिए कभी सहमत नही होती । इसलिए ऐसा करो, दादा जो भी इरादे करें, वे सब मुझे ज्यो के त्यो और उसी समय बताते चलो ।

कान्होबा—यह मुझे पहले दादा से पूछना होगा ।

क्षमा—नही यह नही हो सकेगा । यह मेरा केवल एक सेन्टीमेन्ट है । इसे मानो, तभी आगे की बातें होगी ।

कान्होबा—दादा कहते है सो झूठ नही । सेन्टीमेन्ट का उपाय सचमुच रामबाण है । मुझे मजूर है—अब दादा कुछ भी कहते रहें—मुझे तुम्हारी बात मजूर है । —[जाता है ।]—

क्षमा—कितना भोला है यह ! आजाद तबीयत की कोई लडकी इसी तरह का पति पसद करेगी । यदि यह विवाह हो गया, तो मुझे पति की गुलामी न करनी पडेगी ।—[जाती है ।]—

———

तीसरा दृश्य

[केरोपत मेज पर लिख रहे हैं। घटी बजती है। द्वार खोलकर एक महाशय भीतर आकर उनसे कुछ खानगी बातें करके चले जाते हैं। फिर से घटी बजती है और वैकुठराव प्रवेश करता है।]

केरोपत—आओ वैकुठराव, आज मैने जानबूझ कर तुम्हे बुलाया है। शायद तुम्हे ताज्जुब होता होगा। लेकिन मैं सोचता हूँ कि अब वक्त आ गया है जब कि हम दोनो में खुल्लमखुल्ला बातें हो जाना बहुत जरूरी है। क्या मेरी तरह आपका भी यही ख्याल नही है ?

वैकुठराव—साफ साफ और सचाई से बातें करना कौन नही चाहेगा ? लेकिन खुल्लमखुल्ला से आपका मतलब कही दाँवपेच से ही तो नही है ?

केरोपत—वकालत मेरा पेशा है और पेशे के लिए मुझे दाँव-पेच भिडाने ही पडते हैं, इसे मैं अस्वीकार नही करता। लेकिन आज हम जो बातें करने वाले है, उनका पेशे से कोई ताल्लुक नही। केवल मेरा खानगी काम—बिल्कुल 'प्राइवेट' मेरा ही काम है। बाबासाहब का वसीयतनामा जब से प्रकट हुआ है, तब से तुम एक तरह से मेरा विरोध करने लगे हो। पद-पद पर मुझे अपमानित करने मे तुम्हें एक प्रकार का मजा आता है। वैसे तुम्हारी इस आदत का मुझ पर कुछ भी असर न होता, लेकिन अब स्वय मेरे सुख-दुख से उसका सम्बन्ध होने लगा है। इसलिए अब आगे उस तरफ आँख उठाकर न देखना मेरे लिए असभव हो गया है।

वैकुठराव—ठीक है। देखिए आख उठाकर और शुरू कर दीजिए अपना हमला।

केरोपंत—कम से कम इस समय तो थोडे गम्भीर हो जाओ, तो अच्छा है। सुनो, नलिनी से मै प्यार करता हूँ, यह तुम जानते हो

वैकुंठराव—बिल्कुल नही। मै यह हरगिज नही मानता। नलिनी बहुत भोली है; बाहरी तडक-भडक से बहुत जल्द धोखा खा जाती है। उसकी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर, तुम उसे औंधे मुह गिराने की चाल चल रहे हो।

केरोपंत—यह तुम्हारी गलतफहमी है। मै सचमुच सबसे प्रेम करता हूँ और उसके प्रेम के लिए चाहे जो करने को तैयार हूँ।

वैकुंठराव—मान लो कल बाबासाहब का वसीयतनामा झूठ साबित हो गया, तो क्या तब भी तुम नलिनी से विवाह करने के लिए तैयार रहोगे ?

केरोपंत—कैसे पागलपन का सवाल पूछ रहे हो जी ? बाबासाहब के वसीयतनामे को झूठा साबित करने के लिए मै खुद ही हेरबराव की मदद कर रहा हूँ, यह तुम देख ही रहे हो।

वैकुंठराव—झूठ साबित करने के लिए या कि सच साबित करने के लिए ? मैं इतना बेवकूफ नही जो यह न समझ सकू कि हमारे दादा जैसे बछिया के ताऊ को मार्तंडराव जैसे मूर्ख के हवाले कर तुम सिर्फ नचा रहे हो।

केरोपंत—अजकल जरा जनसेवा के कार्य में व्यस्त हूँ। मेरे पास इतना समय नही कि किसी महत्वपूर्ण केस को हाथ मे लू।

वैकुंठराव—क्या मार्तंडराव को छोडकर आप को दूसरा कोई वकील नही मिलता था ?

केरोपंत—बडे वकीलो की फीस देने लायक हेरबराव में ताकत नही है।

वैकुंठराव—वकील लगाने की जरूरत ही क्या है ? यह वसीयतनामा बिल्कुल सीधा है। उसमे कही कोई झझट की बात है ही नही। फिर अदालत में जाने की जरूरत क्या है ? यदि दादा से चुप बैठने के लिए

कह देते, तो इसमें उनकी अधिक भलाई थी।

केरोपंत—अपने मुवक्किलों का उत्साह भंग कर देना वकील की आन को शोभनीय नही होता। उसमे भी वसीयतनामे की भाषा अधिकतर गैरकानूनी होने के कारण, वह अदालत में टिकेगा नही, यह अभी तक मेरा पक्का मत है। वैंकुठराव, जैसा तुमने अभी कहा है, नलिनी के पैसे पर मेरी नजर नही, यह इसका सब से बड़ा सबूत है। कल ही वह मुझसे विवाह करने को तैयार हो जाती, लेकिन तुमने बीच में भाजी मार दी। अपनी एक ही बात से तुमने उसके मन में एक व्यर्थ की कल्पना ठूँस दी।

वैंकुठराव—मुझे जो अच्छा लगा वह मैंने कह दिया। अब उसका परिणाम यदि तुम्हे अप्रिय मालूम हुआ तो उसके लिए मैं क्या करूँ ? केरोपंत, ईमानदारी से जो गुनाह किया जाता है, वह माफ हो सकता है। लेकिन ईमानदारी के परदे के भीतर छिपाई हुई बदमाशी का भूत पाताल फोडकर भी बाहर निकल आया करता है। नलिनी जैसी एक भोली स्त्री को धोखा देकर, उसकी जिंदगी बरबाद करने में तुम्हें कौन सी मर्दानगी मालूम होती है ?

केरोपंत—मुझे अभी तक यह बिल्कुल नही लगता कि मेरे मन की तरह दूसरे का भी मन है। यदि ऐसा होता तो जनसेवा के कार्य में नेता बनने के लिए मैं अयोग्य साबित हो जाता। आज समूचे महाराष्ट्र ने मुझे जो सम्मान दिया है, सो क्या इसलिए कि महाराष्ट्र की जनता अन्धी है ?

वैंकुठराव—कौन सा सम्मान प्राप्त किया है तुमने ? भाषण देने का या सभापति बनने का ? स्वय तुमने ऐसा कौन सा ठोस कार्य किया है ? इधर तुम्हारी वकालत मजे में चल रही है। सिर्फ फुरसत के वक्त ही तुम देशकार्य करते हो ? रोज अदालत में जाकर झूठ बोलना तुमने अभी तक बन्द नही किया। बदमाश गुनहगारो के बदचलन पर परदा डालना तुमने बद नही किया। क्या तुमने अपने मुवक्किलो से कभी एक बार भी

वे मेरे मित्र नही है।

केरोपत--नलिनी, यह बडे सकट का समय है। इस समय वैकुंठराव भी यहाँ है। मैं भी यहाँ हूँ। हम दोनो तुम्हारे पाणिग्रहण के इच्छुक है। क्यो वैकुठराव ठीक कह रहा हूँ न ?—बोलो, हम दोनो में से तुम किसे पसद करोगी?

नलिन —[वैकुठराव से]—क्या आप का भी यही ख्याल है ?

वैकुठराव—बिल्कुल नही।

नलिनी—[केरोपत से]—क्या तुम मुझे कोई लावारसी जायदाद समझ रहे हो ?

केरोपत—वैकुठराव, तुम नलिनी से प्रेम की याचना तो नही कर रहे हो न ?

वैकुठराव—यह तुम्हारा प्रश्न नही। नलिनी और मै—हम दोनो इसका विचार करने के लिए समर्थ है। कम-से-कम इस मामले में तो मैं आपको अपना वकील नही होने दूगा।

केरोपत—मै स्वय अपने केस की पैरवी कर रहा हूँ। तुम्हारी तरफ से वकालत करने की मुझे जरूरत नही। नलिनी, मुझे माफ कर दो यह प्रश्न पूछने में मेरी तरफ से ही जल्दबाजी हो रही है, यह मैं मानता हूँ। पर आज मेरा मन उद्विग्न हो गया है। अकारण ही मुझे दिख रहा है कि मुझ पर आज कोई बडी आपत्ति आने वाली है। उस आपत्ति के से पहले ही यदि मुझे यह विश्वास हो जाए कि तुम मुझसे प्रेम करती हो, तो मै मौत से भी न डरूँगा।

नलिनी—इस समय मै कुछ भी नही कह सकती। बडे असमजस में पडी हूँ। प्रेम के विषय में मैंने अभी तक विचार ही नही किया है। फिर यूँ ही बारबार यह प्रश्न क्यो पूछते हो ?

केरोपत—विचार करने से प्रेम की परिपूर्णता नही हुआ करती।

नलिनि—तो क्या तुम्हारा यह ख्याल है कि प्रेम के विषय में अविचार की जरूरत है ?

वैकुठराव—नलिनी, प्रेम के बारे में इस तरह नासमझी से विचार नही किया जाता। केरोपत, आप नलिनी का प्रेम चाहते हैं या कि पाणिग्रहण ?

केरोपत—आप कृपा कर चुप रहे।

वैकुठराव—यह जानते हुए भी कि मेरी जवान बीजापुर की मुलुख-मैदान तोप है, आपने इस समय मुझे क्यो बुलाया ?

केरोपत—प्रेम-सूत्र की गाठें बाँधते समय भी गवाह लगता ही है। विवाह में भी ब्राह्मण की गवाही आवश्यक होती है।

वैकुठराव—जिसे सबूत जुटाने की आदत पड जाती है, उसके लिए प्रेम बाजार बन जाता है और इस तरह उसकी दूकानदारी शुरू हो जाती है। नलिनी, ठीक है। अगर तुम इन से विवाह करना ही चाहती हो, तो स्टाम्प पर एक एग्रीमेंट लिख डालो जिससे कि प्रेम के लिए तडपने वाली इनकी कुटिल आत्मा कम-से-कम थोडी शान्त हो जाएगी।

केरोपत—नलिनी, बोलो, कुछ तो बोलो। मुझे कहाँ तक परेशान करोगी ? मैं केवल आश्वासन चाहता हूँ।

नलिनी—उतावले को आश्वासन देना पडता है। गभीरता ही पौरुप है। वकील साहब, मुझे आपके प्रति पूर्ण आदर है—अभिमान है

केरोपंत—कहो—आगे कहो ·

नलिनी—लेकिन विश्वास नही है। आप की मुद्रा मोहक है, वाणी रसभीनी है, लगता है बर्ताव भी उदार होगा। देश-भक्ति जाज्वल्य जान पड़ती है। पर विश्वास नही होता। अगर आप वकील न होते ·

केरोपत—तो क्या तुम प्रसन्न हो जाती ?—[नलिनी चुप रहती है।]—

वैकुठराव—'हाँ' कह दो, नलिनी! मुँह बद न रखो। मुह के चरखे का मत्र बद कर देने से वकील का भूत सिर पर सवार हो जाता है।

केरोपत—नलिनी, मैं जानता हूँ कि तुम दूसरो की बातो में नही आती। मैं वकील हूँ, यही मेरी सारी सफलता का रहस्य है। इस रहस्य रूपी ताली को अगर फेक दूँ, तो मेरी जिंदगी के अभेद्य किले का

दरवाजा ही हमेशा के लिए बंद हो जाएगा।

वैकुठराव—अच्छा, देशभक्ति की बात अलग करो। कम-से-कम नलिनी के प्रेम के लिए ही छोड दो वकालत। कहते हैं कि प्रेम के लिए सर्वस्व निछावर कर देना चाहिए। फिर वकालत तो मदारी का जादू का खेल है। छू कहकर ही उडा देना चाहिए।

नलिनी—हाँ, ठीक तो है। क्या वकालत नही छोड सकेंगे आप ?

केरोपत—इस पागल व्यक्ति की सास के साथ अपना मत बदलना कम-से-कम तुम्हें शोभा नही देता, नलिनी ! वकालत छोड देना मेरे लिए बिल्कुल असभव नही है। यदि मन मे लाऊँ, तो वकालत ही क्या, सारी दुनिया को ठुकरा देने मे भी मुझे कोई झिझक न होगी। लेकिन जिस आदर्श पर पहुँचने के लिए मै प्रयत्न कर रहा हूँ, वह इस आदर्श अविचार से सिद्ध न होगा। तुम्हारा ही तो यह प्रण है कि तुम्हारा पति उत्तम देशभक्त हो, और तुम्ही उसे भूल रही हो ?

नलिनी—खैर, कम-से-कम मुझ जैसी पगली के सतोप के लिए ही छोड दीजिए वकालत। मै नही सोचती कि अपने आदर्श पर पहुँचने के लिए तुम्हे वकालत की जरूरत है।

केरोपत—अब तुम अपनी राय बदलने लगी हो। पहले तुम्हारी यह राय न थी। यह कैसा पागलपन है ?

नलिनी—प्रेम की परीक्षा करने वाला इसी तरह पागल हुआ करता है। मेरा कोई ऐसा पक्का मत नही कि देशभक्ति के लिए वकालत छोड देनी चाहिए। मुझे यह भी नही लगता कि न छोडने से कोई बडा काम होता है। प्रेमी मन बडा विरक्त होता है। यदि मुझे यह लगे कि सर्वसग परित्याग करके अपने प्रिय प्रेमी के साथ व्याख्यान देती हुई घूमू, तो क्या यह मेरा दोप होगा ? अपनी आँखो के सामने कल्पना का चित्र खडा करके देखो—मेरे हाथ में एकतारा है, मेरे प्रेमी की गेरुवे रग की कफनी के साथ मेरा श्वेत वस्त्र शोभा दे रहा है। मातृ-भूमि के प्रेम से सराबोर मेरे प्रेमी द्वारा रचे गीत मेरे मुँह से सुनकर

जनता हमें आकर घेर रही है और फिर मेरा प्रेमी अपनी ओजस्विनी वाणी मे व्याख्यान दे रहा है। उस व्याख्यानो से स्फूर्ति प्राप्त कर लोगो के मुँह से उद्गार निकलते हैं कि.

वैकुठराव—नलिनी चाची की जय !

केरोपत—ऐसे गंभीर काव्यमय विषय की हँसी उडाना देशद्रोही को ही शोभा देता है।

वैकुठराव—वाह ! अखड ब्रह्मचारी वपटिस्टा को यदि काका कहते हैं, तो ब्रह्मचारिणी नलिनी को चाची क्यो न कहा जाए ? केरोपत, तुम नही जानते। चाची कहने से किसी भी स्त्री के प्रति आदर उत्पन्न होता है। नलिनी चाची की जय ! 'की जय' कहे बिना आजकल देश भक्ति का जोर ही नही आता ! ठोस काम चाहे कुछ भी न करें, सिर्फ "की जय" के नारे बुलद करते हुए घूमें कि बस, हो गए देशभक्त ! ए० बी० सी० डी० की जय ! धन्य है इस "की जय" को ! वाह वा ! "की जय, की जय !"

नलिनी—जयजयकार की झकार से किसे जोश नही चढता ? क्या मै इतनी भाग्यशालिनी हूँ ? कल्पना से ही मेरे रोम खडे हो जाते हैं।

वैकुठराव—कल्पना की मस्ती में गुमराह हो जाने वाली मनमौजी स्त्री ! देशभक्ति का असिधाराव्रत काव्य के शब्द-निनाद से नही रगता। प्रलयकाल के घनघोर सग्राम में ताडव करने वाली कराल काली का उग्र स्वरूप शब्द-चमत्कारो की मदारी जैसी कूद-फाँद मे नही पाया जाता।

केरोपंत—और उसी तरह कीचड भरे पोखर में भी वह नही सडा करता अथवा हल के फाल पर भी वह नहीं अटका रहता।

वैकुठराव—मै कहाँ यह कह रहा हूँ ?

केरोपत—गवाह का काम सिर्फ देखते रहना है। उसे मुह से एक शब्द भी न निकालना चाहिए। गवाह का मुँह सिर्फ न्यायाधीश के सामने ही खुलता है।

मार्तंडराव—[प्रवेश करके]—माफ करना वकील साहब। वडा महत्वपूर्ण

काम है। आज "स्वदेशी" पर मेरा भाषण है और सारी जनता का अत्यन्त कौलाहलपूर्ण आग्रह है कि उस सभा के आप ही सभापति हो। सभा यही कोई आधे घटे के भीतर शुरू हो जाएगी। सब काम छोडकर आपको इसी समय मेरे साथ चलना चाहिए।

क्षमा—[प्रवेश करके]—नलिनी दीदी, चलो, पहले घर चलो। जबरदस्ती मकान पर कब्जा करने के हेरबराव अपने सारे कुटुम्बियो के साथ मकान के भीतर घुस आए हैं। चलिए वकील साहब सब काम छोडकर, हमारे घर चलिए और पहले हेरबराव को घर से बाहर निकालिए।

कान्होबा—[प्रवेश करके]—चलिए वकील साहब पहले घर चलिए। दादा ने कहा है कि आपको फौरन हमारे पुराने मकान मे आना ही चाहिए। खुद दादा ने कहा है कि एकक्षण का भी विलब न कीजिए। दादा का बिल्कुल सख्त हुक्म है।—[**पुलिस अफसर और सिपाही प्रवेश करते हैं।**]—

पुलिस अफसर—क्या केरो महादेव आप ही हैं? सडक पर लोगो की भीड इकट्ठा करके आप शान्ति भग कर रहे थे। इस अपराध के लिए सरकार के हुक्म से मे आपको गिरफ्तार करता हूँ, हाथ आगे बढाइए।

केरोपत—मुझे अफसोस है कि सभी के काम रह गए। लीजिए मेरे हाथ। नलिनी, पवित्र कार्य के लिए मैं चतुर्भुज हो रहा हूँ। विवाह करके चतुर्भुज होने का विचार अब दूर ही रहा।

वैकुठराव—[अफसर से]—वारट है आप के पास?

केरोपत—अब वारट देखने की जरूरत नही। चलो, चाहे जहाँ मुझे ले चलो।—[सिपाही उसे ले जाते हैं।]—

नलिनी—ठहरो-ठहरो। एक क्षण-भर के लिए रुक जाओ। वैकुठराव जी, अब मैं क्या करूँ?

वैकुंठराव—सब लोग जोर से नारा लगाओ—[नेपथ्य मे केरो महादेव की जय।]—

[परदा गिरता है।]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[हेरंबराव और कान्होबा]

हेरबराव—तुम जहा जाते हो, वही एक न एक घुटाला कर बैठते हो। परसो अपनी मनहूस सूरत लेकर पहुँचे और केरोपत जेल चले गए। नतीजा यह हुआ कि मेरे सारे किले लडखडा गए।

कान्होबा—पर वे छूट तो गए अव। गजव का दवदवा है उनका। दूसरा कोई होता, तो दस साल तक चक्की पीसता। लेकिन उन्हे सिर्फ ताकीद करके ही छोड दिया।

हेरवराव—एक वार वक्त चूका कि फिर हाथ नही आता। अव वह छोकरी होशियार हो गई। कम-से-कम मार्तंडराव के पास ही कुछ दिमाग होना था। लेकिन वे भी चल दिये केरोपत के पीछे। देशभक्ति करते हैं—देशभक्ति ? न ठीक से इस तरफ है और न उस तरफ। या तो अपने मुवक्किलो का ठीक से काम करे या फिर केवल व्याख्यान ही झाडा करे। लेकिन ये हैं जो दोनो पुट्ठो पर हाथ रखना चाहते है। हम तो इन पर पूरी तरह से भरोसा रखते हैं, जान गिरवी रखकर पैसा खर्च करते हैं, और इधर ये हजरत तालियो का मजा लूटते घूमा करते हैं।

कान्होबा—इसी से तो उनकी धाक जमी हुई है। क्या रोव है उनका ? ट्राम से जाते हैं, तो लोग उन्ही की ओर अगुली दिखाते है। हम कितनी भी शानदार पोशाक पहिनें, हमारी तरफ कोई आँख उठाकर भी नही देखता।

हेरवराव—उ ! इक मे कौन वडी वात है ? सजी हुई लाशे सडक से

वहुत गुजरा करती हैं । हम उन पर विगड पडते हैं—हाँ भाई, हमें उन पर क्रोध आ जाता है । अगर कोई पेट में चिकोटी काटे, तो उसका दर्द मस्तक तक जरूर पहुंचेगा । वैसे वे है वडे लियाकत वाले, इसमें शक नही । इसी मामले मे देखो । यह घर हमें गिरवी रखना था, तो कैसी हिकमत भिडाई केरोपतजी ने !

कान्होवा—यह क्या खाक हिकमत भिडाई ? घर पर भी नलिनी का कब्जा हो गया ।

हेरंवराव—यही तो तुम्हारी अक्ल है । इसीलिए मास्टर हुए । थोडा दिमाग होता, तो वकील न हो जाते ।

कान्होवा—मेरे दिमाग नही है, यह मैं कहाँ अस्वीकार करता हूँ। लेकिन इस घर को गिरवी रखने के मामले में कम-से-कम मुझे तो अक्ल की कोई करामात नजर नही आती ।

हेरंवराव—नजर नही आती ? अच्छा, तो अव मै तुम्हारी आँखो में अजन डाले देता हूँ । यह घर नलिनी के पास गिरवी रखा—क्या समझे ? घर के पैसे आए नलिनी के पास से—क्या समझे ? वे पैसे किस लिए लिये हैं ? वताओ किस लिए लिये है ।

कान्होवा—खर्च करने के लिए ?

हेरंवराव—वाह रे वेवकूफ ! मुकद्दमे के लिए लिये है । नलिनी से रकम लेकर, उसी के खिलाफ अपील करेंगे, और जव अपील में जीत जाएँगे तो फिर रकम किसी को लौटाने की जरूरत नही क्योकि रकम हमारी जायदाद से ही ली जाएगी । अव घुसा कुछ दिमाग में ।

कान्होवा—अरे हाँ, मै नही समझा था इसे । तो आखिर वकालत का ही दाव लगाया है । वाह भई, दिमाग है, इस मे शक नही !

हेरंवराव—तुम्हारी भाभी का भी यही रोना था । लेकिन उस वेवकूफ को क्या समझाता ? आँखे दिखाकर चुप कर दिया । ऐसी वातें स्त्रियो मे कहना, वोरीवदर स्टेशन पर थाली वजाने जैसा ही है ।

कान्होवा—हाँ दादा ! पर एक वात जरूर है कि औरतो से जरा सम्हल

कर ही वात करनी प ती है । क्षमा से भी मैं काफी सोच-विचार कर वात करता हूँ । वरना एकदम ही किसी वात में पकड ले तो मरे !

हेरबराव—उससे विवाह का क्या तय हुआ ?

कान्होबा—वह तो करीव-करीव तय ही हो गया है ।

हेरबराव—जब तक क्षमा को लाकर अपने घर में नही रख लेते हैं, तव तक नलिनी से बदला नहीं लिया जा सकता । इस जायदाद पर कब्जा तो हो जाए, फिर देखना किस तरह पानी फेर देता हूं इन वदमाशो पर । लेकिन यह सब होने के लिए पहले वकीलो को खुश रखना पडता है । आज सालीसिटर की फीस जमा करनी है । वह पहले जमा हो, तभी काम आगे वढेगा । अरे कान्हू, तेरे पास सोने एक घडी थी । कहाँ है वह ?

कान्होबा—भाभी के पास रखने को दे दी है । मेरे हाथ से दो वार गुमने का मौका आ गया था । इसलिए सोचा

हेरबराव—अजी ओ, सुनती हो ? जरा इधर आओ ।—[**रमा आती है ।**]—कान्हू की घडी कहाँ है ? आज आठ सौ रुपये जमा करना है । कान्हू को कौन सोने की घडी वाधकर कही शान दिखाने जाना है ? क्यो कान्हू, है न ? जरा मुकद्दमा जीत लूं, तो तुम्हे मै पैरो में वाधने की भी घडियाँ ला दूगा । जो वक्त पर काम आवे वही सच्चा भाई । वरना एक वह है अवारा । हमेशा मेरी हँसी उडाता रहता है । और देखो जी तुम भी अव इन कगनो का मोह त्याग दो । जहाँ यह केस जीता कि घर में हर जगह सोने के पतरे ठोक दूंगा । मोतियो से वुनी हुई एक साडी ही तुम्हे ला दूंगा पहनने को । लेकिन किसी तरह यह वक्त निभा देना चाहिए ।

रमा—घडी लेकर मुझे क्या करना है ? पर कगन सुहाग की निशानी हैं । उन्हे कैसे उतार दू ? क्या मैंने अपने दूसरे गहने नही दे डाले आप को ? अव मेरा ख्याल है कि नथ भी

हेरबराव—अरे वाह ! यह खूब सोचा तुमने ? क्या खूब ! किस्मत से

फिलहाल मोतियो का भाव भी तेज है। आखिर मोती ही तो हैं। जरा पानी उतरा कि दो कौडी के हो जाते हैं। अभी कीमत अच्छी मिल जाएगी और अदालत का काम भी चल जाएगा। सूपा की तरह इतनी वडी नथ नाक मे लटकाये घूमने में तुम्हे शर्म भी आनी चाहिए। आज-कल का फैशन है नगी नाक।

रमा—आप को कब चाहिए है ये गहने ? क्या आज ही दे दूँ ? अगर आज ही ले ले, तो मुझे कोई हर्ज नही। पर मुकद्दमा जीतना चाहिए। वरना जैसा कि वैकुठलाला कहते हैं, कही लेने के देने न पड जाएँ।

हेरबराव—लेने के देने का या किसी किस्म के धोखे का तो नाम ही न लो। क्यो रे कान्हू, कैसी चाल खेली है हमने ?

कान्होवा—यह मैं मानता हूँ। पर

हेरबराव—अवे, "पर" का क्या मतलव ? क्या मेरा विश्वास नही है तुझे ?

कान्होवा—यह भी मानता हूँ। हम मुकद्दमा जीतेगे, यह तो निश्चित है ही। भाभी तो यूँ ही डर रही हैं। अव तो ठीक कहा ?

रमा—मैं कहाँ डरती हूँ। यदि डरती, तो सिर्फ एक वार के कहने पर अपने गहने उतारकर कैसे दे देती ? मैने सिर्फ वही कहा जो वैकुठलाला कहते हैं। हमे जैसे क्या कोई स्वाभिमान ही नही है। जव से गहने नही है तब से मदिर जाना वद कर दिया है मैने। सो क्या इसलिए कि मैं डरती हूँ ?

कान्होवा—यह वात नही है भाभी। मै मानता हूँ कि आप नही डरती। दादा ने जव इतना कह दिया, तो आप क्यो डरेगी ? लेकिन मैं हूँ एक पगला! मुझ को कभी-कभी – यही कह लीजिए कि लोगो के कहने से – डर लगता है। न्याय का पलडा कहा झुक जाएगा, इसका कोई ठिकाना नही।

हेरबराव—इसीलिए तराजू की डडी मे सोने का पासग वाँधना पडता है। वह तुम नही समझोगे। अव मैं किस की मुट्ठी गर्म करने वाला हूँ,

यह मै तुम से कह देता। लेकिन ऐसी बाते कह देने से काम नही चलता। यह देखो, मार्तंडराव ही आगए।

[मार्तंडराव अपनी पत्नी के साथ प्रवेश करते हैं।]

मार्तंडराव—हाँ, चल, चरण छू इनके—इन भाभीजी के· ·

रमा—यह कौन है ?

मार्तंडराव—इसी सवाल का जवाब देते-देते आज हैरान हो गया। घर में कोई बुजुर्ग नही और यह बिल्कुल नादान छोकरी। रोने लगी तो ले आया अपने साथ। हाँ, आँसू पोछ। अब क्यो रोती है ?

रमा—शायद तुम्हारी लडकी है यह ? पहले कभी देखी नही थी।

मार्तंडराव—लडकी ? रमा भाभी, औरत जिन्दा रहे तभी तो होगी। यह बाम्बे फीवर हाथ धोकर मेरे पीछे पड गया है। पिछले दो महीनो में यह तीसरी शादी है। तो कुल मिला कर कितनी हो गई ? सातवी या आठवी होगी। तूफान में जिस तरह पत्ते उडते हैं, उसी तरह मेरी औरतें उडकर चट-पट मर रही हैं। यह किस नम्बर की है यह भी याद नही आता। इसका उपाय एक ही है। अच्छी तपकर निकली हुई लडकी जिसे मगल हो। ऐसी एक लडकी मिली थी—अरी ए, ऊँघ क्यो रही है ?—रमा भाभी, इसे जरा भीतर ले जाकर कही सुला दीजिए।—[रमा उसे लेकर भीतर जाती है।]— एक विधवा मिली ·

हेरबराव—क्या आप पुनर्विवाह करेंगे ?

मार्तंडराव—क्यो न करूँ ? कोई औरत ही जिन्दा नही रहती—इसके लिए गुर्जर ज्योतिषो ने यही एक उपाय बताया है। इन मरने वाली औरतो ने तो मेरी नाक में दम कर रखी है। यदि इतने सपाटे से औरतें मरने लगी, तो उनके चेहरो का पहचान भी कैसे रहे ? पडोस में जब कोई नयी दुलहिन आई देखता हूँ, तो वह मुझे अपनी औरत जैसी ही लगने लगती है। क्या रेल के टिकट बाबू को मुसाफिरो की पहचान रहती है कभी ? वही हल मेरा हो गया है। अजी, ये शादी की

लडकियाँ सभी एक सी दिखती हैं। इसलिए कोई विधवा तलाश करने लगा। एक मिली। पर विवाह के लिए राजी नही होती थी। सोचा, उसके किसी बुजुर्ग का पता लगाऊँ! उसके जारिये उसे राजी करूँ। खोज शुरू की। पता भी लगा। लेकिन करने गया था कुछ, और हो कुछ गया। वह विधवा कौन थी? आपका क्या ख्याल है?

रमा—[प्रवेश करके]—शायद लडकी वहुत थक गयी थी? विस्तर पर लेटते ही सो गई।

मार्तंडराव—ठीक से देखा आप ने? जिन्दा है न? हा तो ठीक है। हाँ, विधवा· ·

कान्होबा—अपने वुजुगो का हुक्म न मानने वाली निकली?

हेरवराव—वदचलन निकली?

मार्तंडराव—नही। वह आपके वडे भाई सदानद की पत्नी थी।

हेरबराव—सदानन्द की पत्नी? विल्कुल झूठ। एकदम सफेद झूठ। सदानन्द की शादी ही नही हुई।

रमा—जेठ जी की औरत! और विधवा!

कान्होबा—दस दिन सूतक मनाना होगा अव।

हेरवराव—यदि वह राड मर जए तो दस दिन सूतक और मना लूगा! अवे गधे, अगर कही वह तेरी वडी भाभी ही निकल गई, तो यह सारी जायदाद उसी के पास चली जाएगी।

कान्होबा—अरे हाँ, यह तो सच है। यह तो मेरे दिमाग में ही न आया।

मार्तंडराव—इसकी तुम कोई फिक्र न करो। यह वात मै विल्कुल गुप्त रखूगा। लेकिन हाँ तुम लोग जरूर अपने जवान पर ताले लगा लो।

हेरबराव—मैं तो यह सच ही नहीं मानता। जायदाद पर नजर होने से हर आदमी रिश्ता जोडने लगता है।

मार्तंडराव—लेकिन उस औरत में ऐसी कोई वात नजर नही आती। इतने दिनो से यह मुकद्दमा चल रहा है, लेकिन वह अपना रिश्ता दिखाने

के लिए कभी सामने नही आई। मैंने उसके इस रिश्ते का पता स्वयं लगाया। इस समय उसने अपने मायके का ही नाम रख लिया है। उस नाम पर से मैंने टोह लगाई और बुद्धि के सहारे बात की तह तक पहुँच गया। उसका नजदीकी रिश्तेदार कोई नही है। दूर के कुछ रिश्तेदार मिले और उनसे मुझे यह पता चला। लेकिन इसका भी अभी कोई पक्का सबूत नही मिला है। वह औरत अपना हक साबित करने के लिए खुद तो सामने आती ही नही है। इसी से सारा खेल खत्म हो जाता है। लेकिन हाँ, एक नया धागा पैदा हो गया है, इस में शक नही।

हेरवराव—गनीमत है जो आपको ही इसका पता लगा। दूसरा कोई होता, तो जाने क्या क्या बखेड़े पैदा कर देता ?

रमा—आग लगे इन अदालत के कामो को। कितनी झझटें खडी होगी और कितनी उलझनें पैदा हो जाएँगी, यह कोई नही कह सकता।

कान्होबा—मुझे तो अदालत एक हौवा मालूम होती है। मेरे उन रुपयो का क्या हुआ, मार्तंडरावजी ? आज मिल जाते तो दादा के काम पडते।

मार्तंडराव—जायदाद के अतिम बाटवारे का काम वैकुंठराव के हाथ में है, और वह कहता है कि पक्का फैसला हुए बगैर मैं किसी को एक पाई भी न दूँगा।

हेरवराव—यह चाँडाल मेरे हर काम में अडगे डालता है और मरता भी नही है कि पीछा छूटे।

वैकुंठराव—[प्रवेश करके]—यह क्या कह रहे हो, दादा ? मेरी जान के क्यो भूखे हो रहे हो इतने ?

हेरवराव—क्यो आया मेरे घर में पहले मेरे घर से बाहर निकल।

वैकुंठराव—यह क्या कह रहे हो, दादा ? आपने कहा, घर से निकल जाओ, तो चुपचाप चला गया। अब कभी कभी आकर, आपका कुशल-समाचार भी न पूछूं ? यह नया चित्र किसका लगा है। चित्र नहीं, शायद चित्रशाला की कोई छपी कहावते हैं

.. . .

Mortgagee in possession
Nalini Gokhle

यह मकान नलिनी गोखले के पास रहन है।

..   ..

मतलव ? यह मकान गिरवी रख दिया है शायद ?

मार्तंडराव—व्यर्थ ही आँख पर पट्टी बँधने से क्या फायदा ? तुम्हे इसका पता होना ही चाहिए। तुम नलिनी की जायदाद के एक्जीक्यूटर हो।

वैकुठराव—इस तख्ती ने इस कमरे की शोभा में चार चांद लगा दिये है, इसमें सदेह नही। वाकी के ये सारे चित्र इस के आगे फीके पड गए हैं। वाह, वाह ! कितना लाजवाब चित्र है यह ! क्यो रमा भाभी, आप को पसद आया या नही यह चित्र ?

रमा—जले पर नमक क्यो छिडक रहे हो, लाला ? घर को गिरवी रखा देखकर भी शायद अभी तुम्हारा जी ठडा नही हुआ है ?

वैकुठराव—मैंने आप लोगो से घर गिरवी रखने को नही कहा था। इसलिए इससे मुझे जरा भी सतोप नही हुआ। क्यो रे कान्होबा, शायद तुझे पसद है यह चित्र ?

कान्होबा—दादा का अपमान कर रहे हो, यह ठीक नही। क्या यह चित्र है ?

वैकुठराव—अधे हो तुम। यदि यहाँ कोई चित्र है, तो वह यही है। इसमें कितने सुन्दर दृश्य बने हैं ! यह देखो सालीसिटर का दफ्तर—ये हैं उनके विल—ये हैं सफेद टोपी वाले कुर्कअमीन। ये हैं ग्वालियर की गगाजली की तरह उनकी जेवें ! ये हैं दादा के रुपये जो उनकी जेवो में पहुँच गए हैं। यह देखो वकीलो से हयकडो के काले-कलूटे काव्य ! यह है उन काव्यो की प्रतिभा ! यह देखो मारवाडी की दुकान ! ये हैं उनके वही-खाते। यह है उनके व्याज का निर्व्याज भूत जो एकदम दादा की गर्दन पर जाकर डट गया है। ये हैं रमा भाभी के

गिरवी रखे हुए गहने—नीलाम पर चढाये जाने के लिए घर से बाहर निकाले हुए बर्तन-भाँडे। यह देखो कान्होबा के बीस हजार का घपला! कितना यथार्थ—यह देखो सब को निगल कर बैठी हुई बरबादी! वाह, क्या ही कमाल दिखाया है चितेरे ने! कौन चित्रकार है यह? केरो महादेव—मुकद्दमेबाजी के चटोरे बेवकूफो का खास चित्रकार—? क्यो मार्तंडराव जी, इन दृश्यो को बनाने में क्या तुमने भी हाथ बँटाया है? पर यहाँ कही तुम्हारा नाम नजर नही आ रहा है?

मार्तंडराव—घमडी! पाजी कही का!! तुझे कोरे कागज पर चित्र दिखने लगे?

वैकुठराव—कौन कहेगा कि यह कागज कोरा है? मार्तंडराव इस दुनिया के चित्रो का यह विचित्र स्वरूप है। "मारगेजी इन पजेशन"! हम हिन्दुओ की न्याय-प्रियता का यह मोटो है। महाराष्ट्रियो के स्वाभिमान की यह ध्वजा है। भाई-भाई की लडाई का यह टूटा हुआ वद-टूट रहे झगडे को दावे का स्वरूप देने वाला यह छिद्रसघ—गृहछिद्रो को चौराहे पर दिखाने वाली यह मैजीकलैनटर्न—अमीरी की थोथी शान पर लगा हुआ काला कलक—देखो, घर की कैसी शोभा वढा रहा है? मार्गेजी इन पजेशन! कितना मधुर काव्य है यह? इस काव्यामृत का स्वाद चखे वगैर जाना नही जाता, जाने वगैर वह आत्मसात नही होता, और जिसे वह आत्मसात हो जाता है, उसकी अक्ल ही गुम हो जाती है! हृदय पर भृगु की लात के इस निशान को धारण करने वाला वकील, शेशनाग की गर्दन पर गर्दन रखे नीद में सोये हुए लक्ष्मीनारायण का अवतार नही है, यह कौन कहेगा? "मार्गेजी इन पजेशन"! यह किस वेद का सूत्र है? महर्षि मार्तंड मुने! बोलो! वुद्धिमानो को भी नर्क का मोक्ष-साधन करा देने वाला यह किस निर्वेद वेद का सारमत्र है? किस उपनिपद की यह टेक है?

हेरबराव—मुँह बंद कर। अगर एक भी शब्द मुह से निकाला, तो मेरा गुस्सा मेरे कब्जे में न रहेगा। इस तरह मेरा अपमान करने में तुझे

क्या कोई बडा पराक्रम मालूम होता है ?

कान्होबा—बडो का अपमान करते हो ? वैकुठ, तुम्हारे लिए ईश्वर को एक नया नर्क निर्मित करना होगा।

वैकुठराव—उस नर्क में यदि वकील लोग न आते हो, तो मैं बडी खुशी से मै वहाँ नया बाग लगा दूँगा।

हेरबराव—कैसा बेशर्म है, देखा ? अब कृपा कर यहाँ से चले जाओ।

[नलिनी और केरोपत का प्रवेश।]

नलिनी—अब कृपा कर मेरा यह मकान खाली कर दो।

हेरबराव—यह क्या मामला है, केरोपत ?

केरोपत मैं लाचार हूँ। मेरी मुवक्किला की यही इच्छा है। आपने यह मकान गिरवी रख दिया है। साहूकार की इच्छानुसार उसे खाली करने के लिए आप बाध्य हैं।

हेरबराव—वैकुठ, यह सब तेरी चाल है। मुझे बरबाद करने के लिए तू ही नलिनी के जरिये मुझे घर से बाहर निकाल रहा है।

केरोपत—नही वैकुठराव का इससे कोई ताल्लुक नहीं। नलिनी ही चाहती है कि यह मकान खाली कर दिया जाए।

हेरबराव—चाडालनी ! एक तो मेरी सारी जायदाद ही हडप कर गई और अब मेरे इस हक के मकान को भी मुझसे छीन लेना चाहती है।

नलिनी—ये हैं न तुम्हारे प्यारे भाई साहब ! फिर तुम्हें डर काहे का ?

वैकुठराव—सच है। आप को डरने का कोई कारण नही। चलिए दादा, भाभी ! आपके इस पगले वैकुठ की टूटी-फूटी झोपडी आप लोगो का स्वागत करने के लिए हमेशा तैयार है।

हेरबराव—चार लोगो के सामने अपनी उदारता की शान दिखाने के लिए तू चाहे कितने ही ढोग कर, फिर भी तेरा जादू मुझ पर असर नही करेगा।

रमा—मेरी सुनेंगे ? वैकुठलाला की बात कोई बुरी नही जान पडती।

हेरवराव—मूर्ख है तू। मुझे उस खेत की झोपडी मे वद करके मुकद्दमे में हरा देने का यह षडयत्र मै कभी सफल न होने दूंगा। दर-दर भीख मांगूगा, लेकिन इस छोकरी का घमड उतारे बगैर मुझे चैन न मिलेगी।

मार्तंडराव—इस सम्बन्ध की डिग्री है आप के पास ?

केरोपत –यदि आप डिग्री ही चाहते है, तो उसे प्राप्त करने में एक दिन भी न लगेगा। हेरवराव और मेरी मित्रता में कोई फर्क न आए, इसलिए जानबूझकर ही मै वह मौका टाल रहा हूँ। हेरवराव, आप मुझ पर विश्वास रखते है न ? मेरी सुनिए ! आवश्यक सामान लेकर मकान खाली कर दीजिए। अदालत के लोग आएँ और मकान खाली कराएं, वह उचित नही। आपस में समझदारी से मामला तय हो जाए, यह अधिक अच्छा है।

मार्तंडराव—अजी ओ रमा भाभी, हमारी उसको जरा जगा दीजिए। वरना इस कब्जा और गिरवी में वह भी शामिल कर दी जाएगी।

वैकुठराव—दादा, मन शान्त करके मेरे साथ चलिए। ईश्वर चाहेगा, तो अब भी सब ठीक ही होगा। चलिए भाभी। घर मे भगवान को प्रणाम करके पिछवाडे से ही खिसक चलिए। इस वकालत की चाल से हम अलग हो जाएँ। आओ मार्तंडराव ! तू भी चल रे कान्होबा !

कान्होबा—लेकिन दादा का हुक्म

वैकुठराव मैं भी तो तेरा दादा ही हूँ। मेरा हुक्म पहले मान।

हेरवराव—नलिनी, आखिर तू मुझे मेरे घर से बाहर निकालकर ही रही। दुनिया में कही अगर ईश्वर है, तो वह मुझे उस जायदाद को कभी हजम न होने देगा। मेरे ऐंठे हुए हृदय से निकला यह अभिशाप यदि असत्य निकला, तो मै फिर अपने मुह से भगवान का कभी नाम तक न लूगा, यही मेरी प्रतिज्ञा है।

—[नलिनी और केरोपत को छोडकर सब चले जाते है।]—

नलिनी—यह अभिशाप क्या सचमुच मुझे हानि पहुँचाएगा ?

केरोपत—नलिनी, तुम्हारा मन बहुत कोमल है। कानून के राज्य में

मन को ताक पर रख देने से ही हम आसमान में थूनी लगा सकते हैं। मेरी सलाह मानने से आज तुम्हें रंज हो रहा है, लेकिन आगे चलकर जब इसका असर देखोगी, तब मेरे इस दाँव की तुम तारीफ ही करोगी। उनकी अपील की धज्जियाँ उड़ा देने के लिए हेरवराव के हाथ-पाँव काटे बगैर दूसरा चारा ही न था।

नलिनी—मैंने आप की आज्ञा का पालन इसलिए नहीं किया कि वह एक वकील की सलाह थी। देश की बेड़ियाँ काटने की कोशिश करते हुए स्वयं आपने अपने आपको बेड़ियों में बाँध लिया। ईश्वर की कृपा से आपकी ये बेड़ियाँ चंद मिनटों की ही रहीं। सारी जनता ने आप पर खुशी के फूल बरसाये। प्यारी जनता के आँसुओं से भीगी हुई यह जयमाला कुछ समय पहले ही आप के कंठ में विराजमान हुई। देशभक्ति के कठोर व्रत को पूराकर आप जनता के शीर्ष नेता हो गए। उस नेता की आज्ञा को शिरोधार्य करना मैंने अपना कर्तव्य समझा और उस भोले जीव को घर से निकाल देने के लिए तैयार हो गई।

केरोपंत—क्या इसका तुम्हें पश्चाताप हो रहा है?

नलिनी—बिल्कुल नहीं। मेरे देव की आज्ञा मुझे नर्क के गर्त से भी निकालकर स्वर्ग में ले जाकर रख देगी।

केरोपंत—ऐसे शुभ समय नर्क का नाम क्यों ले रही हो? मेरी हृदय देवी, तुमने मुझे अपना देव कहा, लेकिन मैं यह कभी नहीं भूल सकता कि मुझे शक्ति प्रदान करने वाली देवी तुम हो। तुम देव की देवी हो। हे देवाधिदेवी, नर्क का नाम तुम्हारे मुँह से शोभा नहीं देता।

नलिनी—स्त्रियों का मन बड़ा पागल होता है। जो स्त्री कुछ ही दिनों में पत्नी बनने जा रही हो, उसने अपना घर द्वार प्रिय लगता है। "यह मेरा घर है"—कहने का सच्चा अधिकार पुरुष की अपेक्षा स्त्री को ही अधिक होता है। अपने घर द्वार का भोला अभिमान रखने वाले एक जीव को उस के घर से बाहर निकालते समय मेरी बाल-गृहस्थी का नन्हा हृदय पसीज उठा, इसकी मुझे शर्म क्यों नहीं मालूम होती?

केरोपत—यदि तुम्हे दुख होता है, तो मै जाकर हेरवराव को फिर यही रहने को बुलाये लाता हूँ।

नलिनी—मै कभी आप की आज्ञा का उलघन न करूँगी। यह सच है कि मेरा मन मुझ से मूर्खता के काम करने को कहेगा। लेकिन जब वह मेरा नही रहा है। मेरे मन की मूर्खता को दूर करने के लिए आप का एक ही शब्द काफी है। देव आज्ञा दे, और भक्त बिना किसी शिकायत के उसका पालन करेगा। हर भक्त यदि मन के साथ बहकने लगे, तो देव के पास देवत्व कहा से बचेगा ? हेरवराव का दुख देखकर मेरा मन सिटपिटा गया, इस में शक नही—क्षण-भर के लिए मेरे मन में यह प्रश्न भी खडा हुआ कि क्या मुझमे भूल हो गई ?

केरोपत—हर स्वार्थी मक्कार का चालबाजी से भरा हुआ दुख देखकर, यदि प्रत्येक देशभक्त इसी तरह डाँवाडोल होने लगे, तो देश के उद्धार के लिए ससार के प्रलय तक ठहरना होगा। नलिनी ! दुनिया की इन क्षुद्र घटनाओ को देखते समय मनुष्य अपने मन को जब निर्भीक बना लेता है, तभी विकट परिस्थिति मे वह सकट की कसौटी पर उतरता है। मन को कठोर बनाकर भावना का शिकार न होने का अभ्यास करने को हमारा पेशा ही हमें मजबूर करता है। उसी अभ्यास के बल पर जन-सेवा के कामो की तूफानी हवा मे भी शान्ति के पख फैलाकर, हम मजे मे विहार कर सकते है। जो किसी भी परिस्थिति में अपने मन को निर्भय रखे, वही सच्चा वीर है। नलिनी, तुम वीरपत्नी होने जा रही हो। फिर मन को इस प्रकार दुर्बल रखकर कैसे चलेगा ?

नलिनी—दुर्बल को जो सबल बना दे, वही सच्चा वीर है। सचमुच मै कमजोर हूँ। मुझे जन सेवा में रुचि है। लेकिन ऐसे कार्य करते समय पैदा होने वाली घटनाओ का मुकाबला करने की हिम्मत मुझ में नही है। जनता ने सम्मानित करके आज उसके द्वारा आप के गले में पहनाई गयी यह विजयमाला, आपके निर्मल अन्त करण की साक्षी देने वाली आप की यह शुभ्र खादी की पोषाक, विजयोन्माद से उन्मत्त न

होने वाले आपके शान्तिपूर्ण युगल नेत्र और किसी भी परिस्थिति में न डगमगाने वाला आप का यह हृदय देखकर, मुझे यही कहना पडता है कि आप ने मेरा प्रण जीत लिया।

केरोपत—नलिनी, जिस समय मेरे हाथो में हथकड़िया पडीं, उस समय विवाह के सम्बन्ध की याद मुझे हो आई थी, यह सच है। लेकिन इस माला के कंठ में पडते ही तुम्हारे कर-पाश का स्मरण होकर, तुम्हारे कर-ग्रहण के लिए मैं अधीर हो उठा। इस उद्देश्य से ही कि तुम्हारा सर्वस्व तुम्हारे कब्जे में आ जाए। मैंने अभी हेरवराव को भी घर से बाहर निकाल दिया। यह काम बडी कठोरता का हुआ इस में शक नही। लेकिन मेरे पाणिग्रहण के समय यदि तुम्हारे ऐश्वर्य में कोई कमी रहने देता, तो क्या मेरा प्रेम भी अधूरा न रह जाता? तीव्र प्रेम को पूर्ण ऐश्वर्य की जोड मिल जाने से सोने में सुगध आ जाती है। अब तुम्हारा ऐश्वर्य पूर्ण हो गया। नलिनी, विवाह की माला चढाने से पहले, यदि मैं अपनी यह विजयमाला तुम्हारे गले पहना दू तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगी?

नलिनी—आपकी विजय के तेज के आगे यदि मैं अपनी गर्दन झुकाऊँ, तो आप को यह तो नहीं लगेगा कि मैने वह माला की आशा से झुकायी है?

केरोपत—दीनो की दिव्य देवी, तुम्हारे आगे गर्दन झुकाने का अधिकार मेरा है।

नलिनी—कदापि नही। आप की दिव्य देशभक्ति के आगे झुकी हुई यह मेरी अभिमानिनी गर्दन

वैकुंठराव—[प्रवेश करके]—दैत्य के आगे झुक जाने वाली दुर्बल देवी की तरह दिखती है। नलिनी, समय की इष्टता पर तो कुछ ध्यान दो कम से कम। दादा का पाव अभी पूरी तरह से इस घर के बाहर भी नही पडा है और यहां तुम्हारे ये नाटक हो रहे हैं? सेन्टीमेन्ट का शिकार होकर ऐसी उतावली न हो। अविकार की भी सीमा होती है। केरोपत,

ग्नी स्त्री है लेकिन कम से कम तुम्हे तो पौरुष ने अभी तक नही
ग है न ? विधि पूर्वक पाणिग्रहण से पहले माला पहनाने के ये ढोंग
दू रिवाज को शोभा नही देते । थोडा धीरज रखो । नलिनी के पालक
गाते में तुम्हें हुक्म देता हूँ कि अपील का फैसला होते तक यह विचार
होना चाहिए । ट्रस्टी की हैसियत से यह घर मेरे कब्जे में है । मैं नही
हता कि यहाँ ऐसे तमाशे हो । गडवाय मिस्टर केरोपत ।

[केरोपत जाता है ।]

लनी, घर में जाओ । भगवान को प्रणाम करो और हिन्दुत्व के लिए
अशोभनीय वर्ताव तुमने अभी किया है, उसके लिए उससे क्षमा
गो ।—[नलिनी जाती है ।]—आगे होने वाली घटना पर दृष्टि
कर मुझे ऐसा सलूक करना पड रहा हे । जहाँ नलिनी के भोले मन
इसका समुचित प्रभाव पडा कि मेरे उपाय सार्थक हो जाएंगे ।

[परदा गिरता है ।]

———

दूसरा दृश्य

[क्षमा और रेवा]

क्षमा—जैसे आप को यह अच्छा नही लगता है, वैसे मुझे भी यह पसद नही है। वकील ने कहा, तो क्या हो गया ? गृहस्थ-धर्म का भी तो कुछ विचार रखना चाहिए था ! यद्यपि जायदाद हमें अभी मिल गई है, फिर भी वह थी तो हेरबराव के पिता की ही। और फिर यह मकान तो स्वयं हेरबराव का था—जायदाद से उसका कोई सम्बन्ध नही। चूँकि उन्होने मकान गिरवी रख दिया है, इसलिए उस पर एकदम कब्जा कर लेना सज्जनता को शोभा नही देता।

रेवा—तुम्हारा भी यही ख्याल है न ? क्षमा, मैं तुम लोगो की आश्रित हूँ—एक तरह से मेरा दरजा नौकरानी जैसा ही है। मैं तुम्हें कोई उपदेश दूँ, यह बिल्कुल अनुचित है। लेकिन जिस तरह ईमानदार कुत्ता भी अपने स्वामी को कोई बुरा काम नही करने देता, उसी तरह मुझे भी चार शब्द कहने का अधिकार है। ऐश्वर्य के उन्माद को रोकना बड़ा कठिन होता है, क्षमा !

क्षमा—मैं जब केरोपत को देखती हूँ, तो बदन में जैसे आग-सी लग जाती है मेरे। लेकिन दीदी के आगे मेरी चल ही क्या सकती है ? उस पर देशभक्ति का पागलपन जो सवार हो गया है।

रेवा—केरोपत और वैकुंठराव—इन दो मनुष्यो को जब सामने देखती हूँ, तो दो प्रकार के विचार मन में आते हैं। दोनो एल० एल० बी० हैं। पर दोनो के स्वभावो में कितना अन्तर है ? एक वकालत पीछे मरा जा रहा है, तो दूसरा वकालत के पेशे से घृणा करता है। एक लोगों के घर-द्वार बरबाद करता है, तो दूसरा गृह-हीनो को आश्रय देता है। एक झगड़े पैदा करता है और दूसरा झगड़े का बीज ही नष्ट कर देता

चाहता है। मुझे इसी का दुख होता है कि इन दो व्यक्तियो का यह अन्तर नलिनी की समझ में नही आता !

क्षमा—लेकिन केरोपत देशभक्त जो हैं न ?

रेवा—उनकी देशभक्ति में दोष दिखाने का मुझे अधिकार नही। क्षमा, देशभक्ति क्या इतनी सरल होती है ? आजकल लोगो की वह धारणा हो जाती है कि अखबारो में जहाँ नाम छपा कि उन पर देशभक्ति की मुहर लग गई ! यह कितनी गलत धारणा है ? मुझ गरीब विधवा को देशभक्ति से क्या करना है ? लेकिन स्वार्थ के लिए दूसरे को अकारण घर से निकाल देने वाला मनुष्य, देश के लिए क्या स्वार्थ-त्याग करेगा, इसका मुझे सदेह है।

क्षमा—आप अपने मन के सदेह को एक वार दीदी से साफ-साफ क्यो नही कह देती ?

रेवा—उसका मन वहुत कोमल है। मेरे मुँह से कोई अनुचित शब्द निकल जाए, तो उसके मन पर गलत असर हो सकता है। यदि मैं अपना मन स्पष्ट रूप से खोलकर उसके सामने रख दूँ, तो शायद वह मुझ से घृणा भी करने लगे। मैं एक अनाथ विधवा हूँ। यह सच है कि किसी न किसी के आश्रय की मुझे अपेक्षा है। इसलिए सिर्फ अपने स्वार्थ की ओर देखकर, यद्यपि इस समय मैं चुप बैठी हूँ, फिर भी वैसा कोई मौका आ जाने पर अपने प्राणो की बाजी लगाकर, मैं नलिनी की रक्षा करूँगी। वह मेरा कर्तव्य है और उसे करते हुए यदि जग के जलते हुए दावानल में निराधार होकर मै जल गई, तो इसकी मुझे खुशी ही होगी।

मार्तंडराव—[पत्नी सहित प्रवेश करके]—ओ हो हो ! रेवा जी, यह तो खूब मुलाकात हुई भई ! नलिनी का घर छोड दिया शायद ? नही ? खुद कमा रही हो, फिर दूसरो पर अपना भार क्यो डालती हो ? आप को यह शोभा नही देता।

क्षमा—रेवा भाभी हमारे लिए कोई परायी नही है। अपने घर के

गुलचा लेता—लेकिन क्या करूँ, अर्धांगिनी जो है न ? चल अब घर चल। रेवाजी, देखिए, फिर एक बार सोच लीजिए। क्षमा, चलता हूँ अब। कितनी गोलियाँ दे दी इसे ? अच्छा, चलता हूँ। नमस्ते।

[पत्नी के साथ जाता है]

रेवा—चलो स्टेशन चलें। मुझे अब चेंबूर ही जाना चाहिए।

क्षमा—क्यो, क्या हो गया ? क्या मार्तंडराव ने आप से कुछ ऊँचा-नीचा कह दिया ?

रेवा—क्षमा, मेरे जीवन में ही कुछ ऐसी विचित्रता आ गई है कि हर तरफ से मुझ पर विपत्ति की मार पडती रहती है। ईश्वर सुख से खाने भी नही देता। मेरा मन जब इस प्रकार आकुल हो जाता है, तब वैकुंठलाला से मिले विना मुझे सतोप नही होता। चलो, सीधे बोरीबदर ही चलें।

कान्होबा—[प्रवेश करके]—ठहरिए रेवा जी, अभी जाइए नहीं। अच्छी मिल गयी। आप की तलाश में घर गया था। दादा का हुक्म था कि उस मकान की सीढी भी न चढूँ। बाहर से ही आवाज लगाई। कोई जवाब ही नही देता था। तब लौट पडा। क्षमा अब बताओ—जो कुछ कहना हो, रेवा जी के सामने कह दो।

क्षमा—अपील का फैसला हुए बगैर मैं कुछ नही कहूँगी।

कान्होबा—यह मै मानता हूँ। लेकिन अब मेरी क्या हालत होगी, इसका विचार कौन करेगा ? दादा चल दिये रहने को अपने एक मित्र के घर। भाभी चल दी चेंबूर, वैकुंठ के पास। बबई की किसी होटल में रहूँ ऐसा देशभक्त थोडे ही हूँ ! अब मुझे खाना कैसे मिलेगा, बताओ ?

क्षमा—क्या देशभक्त होटल में खाना खाया करते हैं ?

कान्होबा—दादा कहा करते हैं कि जो जेल में जाने से डरता हो, उन्हें बबई के होटलो में रहना चाहिए। अगर तीन महीने बबई के किसी होटल या आश्रम का खाना उसे हजम हो गया, तो तीन साल तक जेल का भोजन उसे बिल्कुल बुरा न लगेगा।

क्षमा—अगर तुम्हे सिर्फ भोजन की ही चिन्ता हो, तो हमारे घर जाकर रह जाओ। क्यो रेवा भाभी ?

रेवा- हाँ, ठीक तो है कान्हूलाला ! हमारे घर ही आ जाओ रहने के लिए। यहाँ रहने से क्षमा का और तुम्हारा अच्छी तरह परिचय भी हो जाएगा। इसे पराया बिल्कुल समझो ही नही। आखिर मै भी तो रह रही हूँ इस घर में।

कान्होबा—यह भी मै मानता हूँ। लेकिन दादा ने कहा है, कि ··

क्षमा—क्या कहा है ? आये बडे "दादा ने कहा है" कहने वाले कही के ? विवाह हो जाने पर यदि उसी तरह दादा से पूछते रहोगे, तो मेरी क्या दशा होगी ? फिर मेरी क्या व्हाईस (voice) रहेगी ? मैं एक नही सुनूगी। तुम्हें मेरा ही हुक्म मानना होगा। चलो हमारे साथ स्टेशन।

कान्होबा—देवोपि दुर्बल घातक ! कही भी जाऊँ, कोई न कोई मुझ पर दादागीरी चलाता ही है। दादा छूटे और क्षमा आई। लेकिन हम पर हुकुमत हो ही रही है। चलो।

[सब जाते हैं]

———

तीसरा दृश्य

[स्थान—चेंबूर। वैंकुठराव का कृषि-क्षेत्र।]

[वैंकुठराव और रमा]

वैंकुठराव—रमा भाभी, दादा ने चाहे लाख कहा हो, लेकिन उन्हें रोकना तो आपका कर्तव्य था। अब सचमुच ही भूखों मरने की नौबत आ गई। अन्न के लिए मोहताज हुए मुवक्किल की क्या किसी वकील ने कभी परवरिश की है? आप लोग अपने घर खाली करके उनके घर भरते हो और फिर खाली घर में घुसा हुआ झगडे वाला भूत बाहर निकल जाता है। अब तो आप समझ गईं, केरोपंत क्या चाल खेले हैं।

रमा—अब समझने से क्या फायदा? आज तुम्हारे दादा को मैंने बड़ी विनम्रता से बहुत समझाया कि चलो वैंकुठलाला के साथ उनकी झोपड़ी में रहेंगे। लेकिन मेरी सुनता कौन है? उनका तो जैसे सिर ही ठिकाने पर नहीं है। चले गए रूठकर अपने किसी मित्र के घर रहने को। यह भी न सोचा कि मेरी क्या दशा होगी? तुमने मुझे आश्रय दिया, इसलिए ठीक हुआ, वरना बम्बई की सडकों में भीख माँगकर पेट भरने का मौका आ गया था आज। हाय, कहाँ गया हमारा वह सारा ऐश्वर्य?

वैंकुठराव—वकीलों और सालीसिटरों के घरों में। इस तरह हमारे मकान बरबाद हुए बगैर वकीलों के मकानों पर मंजिलें नहीं उठा करतीं। मैं कुछ कहता था, तब आप नाराज हो उठती थीं। पर आप ही सोचिए यदि दादा इस झंझट में न पडते, तो हमारे हक का मकान तो हमारे पास रहा आता। आज लाचार होकर दूसरे की देहली चढ़ने का मौका तो न आता। रमा भाभी, आप सोचती होंगी कि मैं भला-बुरा कह रहा हूँ। लेकिन इनके सिवा दूसरा चारा नहीं है। घर-द्वार गया, सो गया ही और रुपयों की कमी के कारण दावा भी आधे पर छोड देना

पडा। इससे हमें क्या मिला ? अगर मै भी तुम्हारा साथ दे देता, तो यह खेत भी आज हाथ से निकल जाता। कान्होवा के बीस हजार रुपये यदि रोक न रखता, तो वे भी आज वकीलो के बैंक-अकाउन्टो में जमा हो जाते। कम-से-कम अब तो आप यह नही सोचती कि मैने आपका विरोध किया।

रमा—अब मेरे सोचने से क्या होता है ? जो दौलत चली गई है, वह लौटकर थोडे ही आजाएगी ? मै अपना यह काला मुह लेकर तुम्हारे दरवाजे चली आई, लेकिन 'उनकी' वहाँ क्या दशा हुई होगी ?

वैकुठराव—मैं जाकर आज ही दादा को समझाने की कोशिश करता। लेकिन इस वक्त मेरी बाते उन्हे जँचेंगी नही। वे यही समझेगे कि मैं उनके जख्म पर नमक छिडकने आया हूँ।

रमा—पर जब तक मुझे यह नही मालूम हो जाता कि वहाँ उनकी क्या हालत है, तब तक मुझे अन्न कैसे मीठा लगेगा ? मै सुख से यहाँ चार ग्रास खाऊ और वे वहाँ भूखे रहे ? लाला, मैं उनकी पत्नी हूँ। उनकी जूठी थाली का मेरा खाना जीवन में अगर कभी छूटा तो सिर्फ उस समय जब कि मैं कुछ दिन रहने को अपने मायके जाती थी तुम मुझे कितना ही समझाओ लेकिन जब तक वे यहाँ नही आ जाते, मैं अन्न को स्पर्श भी न करूँगी।

वैकुठराव—ऐसी झगडे की बात करने से क्या फायदा ? मेरे घर ऐसा पागलपन नही चलेगा। मेरे घर मेरा ही हुक्म मानना होगा। दादा की आप कोई चिन्ता न करें। वे कोई नही हैं। हमारी तरह उनका भी पेट है। गुस्से में रोज की अपेक्षा शायद दुगुना भी खा गए होगे। मुकद्मेबाज पुरुषो को गहने छीन लेते तक अपनी पत्नी का स्मरण होता है। अब वे आप की याद भी भूल गए होगे।

रमा—अदालत ने उन्हे धोखा दे दिया तो क्या हुआ ? उनका मन इतना कठोर नही हो जाएगा लाला !

वैकुठराव—नही हो जाएगा न, तो बस ! मुझे विश्वास हो गया कि

दादा का मन रमा भाभी के प्रति बडा कोमल है। इसीलिए गहनो की सम्पत्ति ममाप्त होते ही उन्हें छोडकर वे चल दिए।

रमा—अब जो कहो, सुनना ही होगा। मपय के फेर से यही होता है।

वैकुठराव—ममय के साथ मै नही बदला। जैसे पहले था, वैसा अब भी हूँ। पहले सीधा और अभी टेढा—यह केरोपत वाली शान तो मैंने नही दिखाई न? दुनिया में सकटो से घबडाकर काम नही चलता, भाभी! घर का मनुष्य मर जाता है, फिर भी उसे फूककर आने के बाद पडोसी के घर बनी रोटियाँ खाना कोई नही छोडता। इसलिए यदि पति रूठ गया, तो उपवास करने से क्या फायदा? इम तरह व्यर्थ ही रूठ जाने वाले पति की तो पूछताछ भी न करनी चाहिये। जहा चार दिन खाना न मिला कि आप ही आप चूल्हा नलाशने हुए घर लौट आयेंगे।

रेवा—[प्रवेश करके] -- वैकुठलाला-वैकुठराव, मैं कुछ कहना चाहती हूँ तुमसे। बडा जरूरी काम है।

वैकुठराव—रमा भाभी, अब आप भीतर जाकर चुपचाप खाना खा लीजिए। तीसरा पहर हो गया। अब और कहाँ तक रुकी रहोगी? ये देवी जी कहेगी कि वैकुठ के घर खाना भी वक्त पर नही मिलता।

रमा—खैर जैसी तुम्हारी इच्छा! पर एक बार उनका पता जरूर लगा लो।

वैकुंठराव—मुझे खुद फिक्र है उनकी।—[रमा जाती है।]—रेवा भाभी, मैं ताड गया, आप का क्या काम है? आपको डरने की कोई जरूरत नही।

रेवा—नही—नुम नही जानने। यदि तुम्हें पता चल जाये कि मैं कौन हूँ ..

वैकुठराव—भाभी, मैं यह जानता हूँ कि आप मेरी भाभी हैं। चूंकि आप अपना परिचय देना नही चाहती थी, इसलिए मैंने भी अपना मुँह बन्द रखा था। आपसे भेंट हुआ करती थी, और सदानन्द की मृत्यु के बारे में मैं आप से कुछ भी न पूछ सकता था। हमेशा ऐसा हो जाता

था। आप इतनी कठोर क्यो बन गई भाभी। मैं जानता था कि कभी-न-कभी यह मौका जरूर आयेगा ? वह मौका आप खुद ही ले आई। अब धीरे-धीरे सब को मालूम ही हो जाना चाहिए कि आप कौन है।

रेवा—नही लाला! मै कभी नही चाहूँगी कि नलिनी से उसका ऐश्वर्य छीन लूं।

वैकुठराव—ऐश्वर्य ने क्या कभी किसी का भला किया है ? नलिनी का कल्याण हो, इसीलिये उसे इस झूठे एश्वर्य से दूर कर देना चाहिए। आप और मै—दोनो अगर चुप बैठ जायँ, तो मार्तंडराव अपनी कोशिशो से बाज आयेगा। भाभी, भगवान की न्याय की तराजू को जबरदस्ती झुकाने की किसी को भी कोशिश न करना चाहिए। प्रमाण के अभाव मे मैं अभी तक चुप बैठा था। लेकिन अब मेरे पास पूरे प्रमाण मौजूद है। जायदाद के कार्यवाह के नाते से मुझे अपना कर्तव्य करना ही होगा।

रेवा—लेकिन मुझे तुमने पहचाना कैसे ?

वैकुठराव—सदानद से मेरा पत्र-व्यवहार जारी था। उसका मुझ पर पूर्ण विश्वास था। रगून जब आप दोनो का विवाह रजिस्टर्ड हुआ था उस समय का खीचा हुआ आप दोनो का फोटो भी उसने मुझे भेजा था। उस मैरिज सर्टीफिकेट (Marriage Certificate) को सरकारी तौर से मैंने प्राप्त कर लिया है। अब कानून की कार्यवाही के लिये सारे रास्ते खुल गये है। भाभी, इस व्यवहारी दुनिया मे काव्यमय कल्पनाओ पर मनुष्य जीवित नही रह सकता। उदात्त मनोवृति से प्रेरित होकर, आज मेरे लिये विलक्षण स्वार्थ-त्याग कर दोगी, पर कल मैं ही बेधड़क आप के गले पर छुरी फेर दूगा। इस दुनिया मे स्वार्थ के लिये सतर्क रहने के समान दूसरा परमार्थ नही। काव्य पढने में मीठे लगते है, पर आचरण में बडे भद्दे होते हैं। भाभी, मै आप का देवर हूँ, उसी तरह आप का भाई भी हूँ। मै जो कहूँगा, वह आपको सुनना ही होगा। आपको क्या आवश्यक है, यह आपकी अपेक्षा मै अधिक अच्छी तरह जानता हूँ।

रेवा—कुछ भी करो, लेकिन नलिनी के मगल का ध्यान रखो। उस भोली लडकी में मेरा जी बिल्कुल उलझ गया है।

वैकुठराव—और क्या मेरा नही उलझा है ?

रेवा—तुम्हारा नाम लेती हू, तो उसके माथे पर बल खिच जाते हैं। केरोपत ने उस पर पूरा प्रभाव जमा लिया है,। क्या उस चाडाल के हाथ से उसे नही छुडाना चाहिये ?

वैकुठराव—भवितव्यता की गांठे तोडने से नही टूटती। उन्हें हिकमत से ही छुडवाना चाहिए। मै उसी कोशिश में हूँ। सौ साल की उम्र है उसकी। वह देखो, नलिनी और केरोपत की ही कार इस तरफ आ रही है। उनके स्वागत के लिए मुझे पानी की नहर बंद करके कार का रास्ता खोल देना चाहिए।—[रेवा और वैकुठराव जाते हैं। नलिनी और केरोपत प्रवेश करते हैं।]

नलिनी—अहा हा ! कितना रमणीय स्थान है यह ! यह हरी हरी धरती। ऊपर नीला आकाश। चारो तरफ सुन्दर पेड। उन पर फूल। वाह, क्या ही सुन्दर जगह है।

केरोपत—तुम्हारे मुह से निकले इस मधुर वर्णन के कारण इस गद स्थान को भी शोभा आने लगी, यह सच है। नलिनी, शहर में रहने से वीरान जंगल भी प्रथम दर्शन में सुन्दर दिखने लगते हैं। निकट परिचय से तुम्हारा यह मोह आप ही आप दूर हो जाएगा। ऐसे ये स्मशान जहाँ भुखमरे किसानो की अर्थियां घुमाई जाती हैं, सौन्दर्य पर भी मुर्दनी छा देते हैं।

नलिनी—ऐसा क्यों कह रहे हो ? निसर्ग की रमणीयता कवियो को जन्म देती है।

केरोपत—और कवियो के काव्य ही उन्हें दरिद्रता देते हैं। नलिनी देखो, इस खेत में कदम रखते ही तुम्हें भीख मांगने के सपने दिखने लगे।

नलिनी—हाँ, ऐसा हो गया जरूर। लेकिन निसर्ग के इस सुन्दर

श्वासोच्छ्वास से आपकी भाषा में अवश्य कठोरता आने लगी है।

केरोपत—इस देहाती वकवक से मेरी भाषा का माधुर्य नीरस हो गया, इस जगली जगत ने मेरी कोमलता निगल डाली। नलिनी, निसर्ग का सौन्दर्य जिस प्रकार रमणी के वदन-कमल पर प्रतिविंवित होता है, उस प्रकार वह पोखर के सोन-कमल पर कैसे दिख सकता है? कीचड का कमल काई पर शोभा देता है। लेकिन तन्वगी के वदन-कमल को भव्य प्रासाद की सुनहली खिड़की में ही रहना पडता है।

नलिनी—स्थान एक ही है—दृश्य एक ही है। लेकिन तुम्हें कुछ और लगता है और मुझे कुछ और। मुझे लगता है कि शहर के कृत्रिम प्रासाद की अपेक्षा जगल की यह झोपडी कितनी अधिक रमणीय दिखती है। देखा इन फूलो को। इन्हें प्राप्त करने के लिए ववई में सैंकडो रुपये गिनने पडते हैं। निसर्ग के ये रेंगते हुए वालक शहर में वडे मूल्यवान होते है, किन्तु गाँव में इनका कोई मूल्य नही होता।

केरोपत—ठीक है। एक तरह से यह अच्छा ही हुआ जो यह स्थान तुम्हें पसद आगया। अव जव मै देख लूगा कि यह क्षेत्र तुम्हारे अधिकार में आगया है, तव मेरी प्रणयी आँखे इच्छा होते हुए भी, शान्त हो जाएँगी। पर हाँ, जगल का वह शैतान नजर नही आ रहा है यहाँ?

वैकुठराव – [प्रवेश करके]—दास आपकी सेवा में हाजिर है। नलिनी, जगल का यह शैतान यदि तुम जैसी देवी का स्वागत करे, तो तुम्हें अप्रिय तो न लगेगा? माई डियर मिस्टर केरोपत, शेक-हैंड कीजिए। इस असली अग्रेजी लिवास को शोभा देने वाले शिष्टाचार की भी तो कुछ याद रखिए।

केरोपत—पहले जाओ और अपने ये कीचड-भरे हाथ साफ करके आओ। डैम—डर्टी—वेगर (damned—dirty—beggar)

वैकुठराव—कीचड? कहाँ से कीचड? तुम मातृभूमि के उद्धारक हो न? देखो, मेरे हाथ पर यह मातृभूमि की सीमा-रेखा है। करो इसका उद्धार।

केरोपत—पोखर की गदगी मातृभूमि नही है।

वैकुठराव—नही है ? खैर, छोडिए इसे। नलिनी, यह देखो मेरी मातृभूमि, मेरे हाथ पर किस तरह जगमगा रही है ! इनका मातृभूमि एब्सट्रैक्ट (abstract) है, मेरी मातृभूमि कानक्रीट (concrete) है—यथार्थ है। केरोपत की मातृभूमि उन्हें नक्शे पर दिखती है। उसके अक्षाश और रेखाश खोजने से लिए उन्हे ससार के पूरे भूगोल का अध्ययन करना पडता है। इस मातृभूमि को अगर देखना हो, तो हिमालय के अज्ञात शिखर से लेकर कन्याकुमारी को मिला लेने वाले समुद्र की तली तक प्रवास करना पडता है। मेरी मातृभूमि—यह देखो—मेरी मुट्ठी में रहती है। केरोपत, जरा मेरे हाथ से हाथ लगाइए। वाह ! इस मातृभूमि के दर्शनमात्र से ही आप का सुन्दर मुख टेढा होने लगा, क्यो ? माँ, देखा तुमने यह तुम्हारा अभिमानी बेटा ? बचपन में तुम्हारी गोद में खेला। जब बडा हुआ, तो तुम्हारी याद भी भूल गया ? खैर, कुछ परवाह नही, माँ ! जब बूढा होगा, तो फिर आ जाएगा तुम्हारी गोद में !

नलिनी—काव्यो के श्लेप भिडाने से कीचड की गदगी नही जाया करती ?

वैकुठराव—नही—नही, नलिनी ! इसमें काव्य बिलकुल नही है। तुम्हारी मातृभूमि क्या है यह जिस तरह तुम नहीं जानती, उसी तरह मैं भी नही जानता। तुम देशभक्त लोग उसकी कैसी सेवा करते हो, समझाने पर भी मुझ जैसा गँवार उसे नही समझेगा। पर मैं अपनी मातृभूमि की सेवा प्रत्यक्ष कर सकता हूँ। जब सेवा करता हूँ, तो मेरी मातृभूमि मुझे प्रत्यक्ष फल देती है। मुँह से परिश्रम करने से कोरी गप्पें हाँकने से मेरी मातृभूमि की सेवा नही की जा सकती। मेरी मातृभूमि की सेवा करने के लिए देह को प्रत्यक्ष कष्ट देने पडते हैं। मेरी मातृभूमि पर हल का जैसा असर होता है, वैसा भाषण का नहीं होता। हाथ में हल और बक्खर पकडकर खून-पसीना एक किये बगैर मेरी मातृभूमि प्रसन्न

नही होती और जब वह प्रसन्न हो जाती है, तब मेरी मातृभूमि अन्न और वस्त्र का ढेर लगाती है। हल और चरखे का व्याख्यान अन्न-वस्त्र देता है, लेकिन तुम्हारे मुह के यह व्याख्यान क्या देते हैं ? सडे हुए अन्तःकरण से निकली हुई मुह की भाप बाहर की शुद्ध हवा को दूषित अवश्य कर देती है। केरोपत, इस मातृभूमि को जरा स्पर्श करो। कानून की किरण मे खडे होकर, न्याय का दिया जलाते समय इस मातृभूमि के टुकडे-टुकडे करके, तुम केवल मेडे शेष रहने देते हो और बेचारी मातृभूमि तुम्हे नजर ही नही आती। हिस्से-बाँटो के रणागण मे मातृभूमि को इस तरह मटियामेट करके दो भाईयो के हाथो में भिक्षा-पात्र थमाने का जो पाप तुमने किया है, कम से कम उस पाप का प्रक्षालन करने के लिए ही, इस मातृभूमि का टीका अपने माथे पर लगा लो। इस कीचड का डिठौना लगा लो जिससे तुम्हारी देशभक्ति को किसी की भी डीठ न लगेगी। इसके सिर्फ स्पर्श से ही कानूनबाजी से मलिन हुआ तुम्हारा शरीर रोमाचित हो उठेगा।

नलिनी—इधर लाओ अपना हाथ। मैं शेकहैंड करती हूँ।

वैकुठराव—अच्छा, यह बात है ? लेकिन नलिनी, इस मातृभूमि के एक ही छीटे से तुम्हारी इस महीन साडी की दुर्दशा हो जाएगी। नही, तुम्हारी महीन साडी का स्पर्श शायद मेरी मातृभूमि को ही न भाएगा। मै अपने हाथ ही धोये डालता हूँ।—[हाथ धोने लगता है।]

केरोपत—नलिनी, क्या तुम्हे इस बदरपन से नफरत नही होती ?

नलिनी—सभा के भाषणो से इस बदरपन का असर कुछ अलग होता है, यह सच है।

केरोपत—तो फिर चलो। हम यहाँ से लौट चले।

नलिनी—पर मार्तडराव को तुमने यहाँ बुलाया है न ? उनके आने से पहले ही हम कैसे लौट चले ? खेत का कब्जा लेना है न ?

वैकुठराव—नलिनी, क्या इस खेत का कब्जा लेने को तुम आई हो ? अपनी मातृभूमि को छोडने के लिए मै तैयार हूँ, लेकिन उसे छीनने को

तुम तैयार हो क्या ?

नलिनी—बाबासाहब के वसीयतनामे के अनुसार उनकी सारी जायदाद मुझे मिल गयी है।

वैकुठराव—बाबासाहब ने वसीयतनामा लिखने से पहले ही यह खेत मुझे दे दिया है। यदि तुम्हारा यह ख्याल है कि कानून की धांधली में यह खेत हड़पा जा सकता है, तो वह एकदम गलत है।

नलिनी—इस खेत पर कब्जा होना ही चाहिए। मै अपने हक की पामाली हरगिज न होने दूंगी।

वैकुठराव—अच्छा, ऐसी बात है ? फिर मुझे इस में कोई हर्ज नही। लेकिन यहा क्या है, यह जानती हो तुम ?

केरोपत—हम सब जानते हैं। मार्तंडराव ने वह सब जानकारी प्राप्त कर ली है। उनके आते ही हम एक बार घूमकर इस जमीन को देखेंगे।

मार्तंडराव—[प्रवेश करके]—नमस्ते—नमस्ते—महाशय नमस्ते। चलिए केरोपत, चलिए नलिनीजी, पहले घूमकर सारी जमीन देख लें और फिर आगे की कार्रवाई करें।

नलिनी—अब आप ही जाइए। इस सफर से मैं बिल्कुल थक गई हूं। थोडी देर यही आराम करती हूं।

केरोपत—नलिनी, वैकुठराव से तुम्हे क्या कुछ खानगी बातें करनी हैं ?

नलिनी—जरा शर्म खाओ, मिस्टर केरोपत !

मार्तंडराव—चलिए। बैठने दो उन्हें यही। हमी चलकर देख आएं।

—[केरोपत और मार्तंडराव जाते है।]—

नलिनी—मुझे माफ कर दो। मुझसे भूल हो गई। सब मुझे ऐसा लगने लगा है कि मुझे कुछ गलतफहमी हो गई थी।

वैकुठराव—सो क्यो ? यदि गलतफहमी ही थी तो अभी यहां ऐसी कोई बात नही हुई जिससे कि यह दूर हो जाए।

नलिनी—जैसे देखे, वैसा दिखता है। मैने अभी तक बिल्कुल देखा ही न था। शायद इस देहात की शुद्ध हवा का भी मेरे मन पर असर हो गया हो !

वैकुठराव—यह भी हो सकता है। हम हवा का विचार करते है, उसी तरह यदि सहवास का विचार करें, तो बहुत अच्छा हो।

नलिनी—हाँ, यह भी हो सकता है। अब मुझे ऐसा नही लगता कि किसी का भी सहवास करते समय मैने उसके मन की परीक्षा की होगी। वैकुठराव ! यदि मै यह कहूँ कि तुम्हारे बारे में मेरे मत अब बदलने लगे हैं, तो आप सच मानेगे न ?

वैकुठराव—निर्मल मन पर भी अविश्वास रखने वाला कोई वकील नही हूँ मै।

नलिनी—वकीलो की कानूनबाजी का और उनके सशयालु स्वभाव पर मुझे भी अब शक होने लगा है।

वैकुठराव—इसमें कोई आश्चर्य नही। आपत्ति-काल में ही मनुष्य की परख हुआ करती है।

नलिनी—मैने तुम्हारी बहुत हंसी उडाई। पद-पद पर तुम्हें दुत्कारा। इसके लिए मै बहुत शर्मिंदी हूँ।

वैकुठराव—खैर, छोडो इन बातो को। देखो वकील की जोडी लौट आई है। उस डबल-बेरल की मार से हम से हम दोनो का कही खून न हो जाए।

[केरोपत, मार्तंडराव और कुछ कृषक प्रवेश करते है।]

मार्तंडराव—सुना केरोपत, मौका बहुत अच्छा है। ये इतने लोग यहाँ अनायास ही इकट्ठे हो गए है। भाषण का निमंत्रण दें तो भी ऐसा सयोग न जुटेगा। हाँ, अब आप तो बन जाइए सभापति, मै होता हूँ वक्ता और जनता है ही हमारे ये कृषक भाई। अच्छा हुआ कि आते वक्त मै अपने बैग में भाषण के समय की अपनी पोशाक ले आया था।

एक किसान—मालिक, सुनते है कि आप इस जमीन को छोड कर चले

जाएँगे और कोई दूसरे मालिक आएँगे। अगर यह सच है, तो हम सब लोग आज ही अपना काम छोडकर फिर वापस मिल मे जा रहे है।

वैकुंठराव—ठहरो। पहले इनका भापरा सुन लो। उसमें शायद इस वात का भी भेद खुले।

मार्तंडराव—[पोशाक पहनकर]—श्रीमान सभापतिजी, प्यारे भाईयो और प्रेयसी वहिनो! आज जनता-सागर को अपने सामने इस तरह उमडा हुआ देखकर, मुजे अत्यत्त आनद हो रहा है। समय वडा कठिन आया है। अपनी जन्म-भूमि, अपनी कर्म-भूमि, अपनी धर्म-भूमि आज कहाँ है? हमारा स्त्रदेश, हमारा स्वराज्य साम्राज्य, हमारे अधिकार आज कहाँ है? स्वदेश के लिए—स्वराज्य के लिए—अपने हको को पामाली से वचाने के लिए—[एक तरफ धीरे से करोपत के कान में—"इन गधो को यह भी नही मालूम कि तालियाँ कहाँ वजानी चाहिए—[फिर लोगो से]—अपनी मानसिक गुलामी को बेचिराग के लिए क्या करना चाहिए? ऐसा करना चाहिये जिससे कि इस परिस्थिति से हमें छुटकारा मिले? लेकिन वह एसा क्या है? यह तुम जानते हो, मै जानता हूँ, मारा भारत जानता है—सारी भरतभूमि- मातृभूमि के यच्चावत् भूतमात्र जानते हैं कि वह क्या है? उसे कहने की जरूरत नही—सुनने की जरूरत नही। इतना कहकर भी जो उसे नही जानता—उसे उसके जानने की आवश्यकता भी नही··

एक किसान तो फिर मत कहिए।

मार्तंडराव—तुमने भले ही मुझ से न कहने को कह दिया हो, फिर भी मैं कहूँगा। क्यो कहूँगा? क्योकि वह कहना मेरा परम कर्तव्य है—वह मेरा आदर्श है—वह मेरी सामर्थ्य है—वह मेरे देश के उद्धार की टक है। फिर वह क्या है? वह मैं विल्कुल नही कहूँगा—उसे तुम्ही समझ लो—तुम्ही जान लो। तुम अपने आप ही उसे जान सकोगे। वह यदि मालुम हो जाए, तो देश की भूखमरी रसातल को चली जायेगी—देश धनधान्य से सपन्न हो जायेगा—देश की आपत्ति टल जाएगी—तो फिर

ऐसा वह क्या है ? प्यारे भाईयो और प्रेयसी बहिनो, वह यही है कि तुम अपना उद्धार स्वय कर लो

एक किसान—यह कहने की आपको जरूरत नही। यह तो हम अपने आप जानते हैं। लेकिन वह उद्धार कैसा हो, यह कहने वालो की अपेक्षा उसे यथार्थ रूप मे करके दिखा देने वालो की ही हमे आज जरूरत है। आप करके दिखाएँगे क्या कि वह उद्धार कैसा किया जाये ?

मार्तंडराव—सुनो-सुनो। आगे सुनो

एक किसान—अब आप हमारी सुनो। हम पहले कोकण मे थे। साल के चार महीने हम खेतो में कडी मेहनत किया करते थे। जो पैदावार होती थी, उस में से सरकार का लगान और साहूकर का कर्जा चुकाते थे। इसके बाद जो अनाज शेष रहता था, वह हमे दो महीने के लिए भी काफी नही होता था। घास का साग और कटहल के बीज तथा ऐसे ही कुछ कद-मूल उबालकर और उन्हें अलोने ही खाकर हम दस महीने पेट भरा करते थे। नमक के लिए भी एक पैसा हमारे पास न रहा करता। इसलिए हम मिल में आए। वहाँ के कठिन परिश्रम और कबूतरखाने जैसी चाल की दम घोटने वाली गदी हवा से हम मृतप्राय हो गए। पैसे मिलते थे, पर बाल-बच्चे मरते थे। उस गुलामी से, जिसे अपना हक मानकर हमने स्वीकार कर लिया था, वैकुठराव हमें छुडाकर इस खेत पर ले आये। यहाँ चार महीने हम खेत मे मेहनत करते है और बाकी के आठ महीने चरखे पर सूत कातते हैं। हम लोग जो किसी समय नमक के लिए एक पैसा नही पाते थे, अब सूत के बदले हर रोज हर आदमी पीछे तीन आने पाते है। आप शहर मे रहकर तीन आने का मूल्य नहीं जान सकते। वह मूल्य आप तभी महसूस कर सकते है जब कि हमारे जैसे दरिद्री हो जायेगे। बम्बई की भरपूर मजदूरी से हमें ये तीन आने ही बहुत है। क्योकि हमें इस खुली हवा मे रहने को मिलता है। इसलिए हमारे और हमारे बाल-बच्चो के स्वास्थ्य अब सुधर गए। वैकुठराव ने इस तरह चार सौ मनुष्यो को जिन्दगी दी

है। वक्ता महाराज, आपने एक भी मनुष्य को जीवन दिया है क्या? और अब इस खेत को निमलकर उसे बरबाद करोगे ? ··

वैकुठराव—जाओ भाइयो, तुम्हारा भाषण ये नही समझेंगे।

नलिनी—नही-नही, उन्हें आगे कहने दीजिए।

वैकुठराव—मेर सुनते हो न ? तो कृपाकर चले जाओ।—[किसान जाते हैं।]—मार्तंडराव तुम्हारा लेक्चर अधूरा ही रह गया, इसका मुझे बडा दुख होता है। इस लेक्चरबाजी का शौक पूरा करने के लिए पूना की एक ट्रिप निकालिए जिससे कि आज की कमी पूरी हो जाएगी। भाषणो से भडक जाने वाले लोग ये नही। हाथ पर का सूखा हुआ कीचड झाडे बगैर तालियाँ बजाने के उनके हाथ बिल्कुल ही आदी नही हैं।

मार्तंडराव—कुल मिलाकर ये लोग काफी गवार मालुम होते हैं, इसमें शक नही।

नलिनी—मतलब ? इन लोगो के मन पर शायद तुम्हारे व्याख्यान का कोई प्रभाव नही पडता !

मार्तंडराव—उनके आगे व्याख्यान देना यानी बहरे के सामने गीत गाने जैसा ही है। बिल्कुल गन्दे और जगली लोग हैं ये !

फेरोपत—नलिनी, मन सुसस्कृत हुए बिना व्याख्यान का प्रभाव भी कैसे पडेगा ? इन लोगो को पढ़ाने की कोशिश करना यानी वक्त बरबाद करना है। ये लोग सिर्फ जूतो के देव होत हैं—उनके आगे बातें वृथा हैं।

वैकुठराव—नलिनी, इनकी मातृभूमि में अशिक्षित और गरीबो का समावेश नही होता। इसीलिये मैं इन लोगो में घुसा। मेरा कानून का ज्ञान किसानो को वकीलो के चक्कर से बचाने के लिये काफी है।

फेरोपत—यह विषय अब काफी हो गया। हम जिस काम के लिए आए हैं, उनका विचार पहले करें। वैकुंठराव, इस खेत के मालिक बाबासाहब की सारी जायदाद उनके वसीयतनामा के अनुसार नलिनी को मिली है। हमारी इच्छा नही कि तुमसे किसी तरह हमारे सम्बन्ध

विगड़ें। विना नालिश के क्या तुम यह खेत नलिनी के कब्जे में देने को तैयार हो ?

वैकुंठराव—वसीयतनामा लिखने से पहले ही वावासाहब ने यह खेत मेरे नाम लिख दिया है। यह खेत मेरा है। अदालत में जाने से मुझे स्वय वहुत घृणा है। वादी और प्रतिवादी के नाते नलिनी के सामने खड़े होने का मौका टल जाए और इस खेत की कीमत से दूनी रकम वकीलो की जेवो में न जाए, इसलिए इस खेत का दान-पत्र लिख देने के लिए मैं तैयार हूं।

नलिनी—मै वैकुंठराव के अधिकार की जायदाद नही छीनना चाहती।

केरोपत—नलिनी, यह तुम ही कह रही हो क्या ?

मार्तंडराव—मतलव ? हमी वेवकूफ रहे !

नलिनी—वाह, क्या ही सुन्दर कहा है, तुमने ?

केरोपत—वस, हो चुका। हमारी खूव फजीहत हुई। चलो, अव ववई लौट चलें। मुझे इस तरह मुंह की खिलानी थी, तो यह पहले ही क्यो नही कह दिया ? जो अपनी भलाई नही समझता—खैर, छोडो भी। जो है वह भी कुछ कम नही है। चलो मार्तंडराव, चलो नलिनी '

नलिनी—मैं नही आती। मुझे यह खेत देखना है। जुताई और वखरनी देखना है। किसानो की ये झोपडियाँ, उनके वाल-वच्चे, उनके वरतन-भाडे मुझे देखना है। इन गरीवो के घर की भूसे की रोटी में भी हजम कर सकती हूं या नही इसका एक वार अनुभव करके देखना है। अमीरो को ठुकराने के लिये घुटना-भर पैर और कुहनी-भर हाथ कीचड में सानकर, मातृभूमि के स्पर्श सुख का मुझे अनुभव लेना है। तुम जाओ।

केरोपत—[हंसते हुए]—ठीक है। वापस आने पर इन सारे अनुभवो का वर्णन करना न भूलना। तुम्हारी निर्मल वाणी द्वारा किये गए वर्णन से मिट्टी और कीचड की गंदगी भी पवित्र हो जाएगी। चलो मार्तंडराव गुड वाय मिस्टर वैकुंठराव !—[केरोपत और मार्तंडराव जाते हैं।]—

वैकुंठराव—नलिनी, माफ करना एक मिनट में फिर सेवा में हाजिर

होता हूँ ।—[जाता है ।]—

नलिनी—मैंने इतनी वाहियात बाते की । फिर भी वे नाराज न हुए । कहते हैं कि स्वाभिमानी मन भी प्रेम के आगे झुक जाते हैं, सो झूठ नही । जाओ बम्बई । यदि नाराज ही हो, तो उस नाराजगी को दूर करने में मुझे कितनी देर लगेगी ? कलह के बिना प्रेम को मोहकता प्राप्त नही होती । हम स्त्रियाँ पुरुषो को यदि इस तरह न खिजाएँ, तो रमणी का रमणीत्व कैसे सिद्ध होगा ? वैकुंठराव शायद चल दिये कही ?

वैकुंठराव—[प्रवेश करके]—नलिनी, नार्थ-वेस्ट प्राविन्सेज के चीफ कमिश्नर सर डेनियल हैमिल्टन, पूना के प्रोफेसर काले, बाम्बे चेम्बर आफ कामर्स के मिस्टर मेकफर्सन जैसे देशी और विदेशी विद्वानो ने समय समय पर जिस चरखे के महत्व का वर्णन किया है, उसी महात्मा गांधी के हाथ के सुदर्शन-चक्र पर तैयार हुई, अथ से इति तक मेरे इन हाथो से चुनी हुई यह खादी की साडी, आज के दिन की स्मृति के लिए मैं तुम्हें अर्पण करता हूँ ।

नलिनी—दैया रे, यह बोरे का टाट मै कैसे पहनू ?

वैकुंठराव—नलिनी, देश की सेवा के लिए कुछ दिन पहले तुमने अपने कीमती जडाऊ जेवर उतारकर फेंक दिये थे । और अब उसी कार्य के लिए दो कौडी की यह झीनी साडी फेंक देना तुम्हें कठिन मालूम होता है ? तुम इमोशनल (emotional) स्त्रियो ने हीरो के गहने दे देने में भी कोई झिझक न दिखाई—इसके लिए अपने बुजुर्गों की भी परवाह न की । तुम्हारा यह त्याग देखकर हम पुरुषो ने भी गर्दनें झुका दीं । और अब झूठे शरीर-सुख के लिए, सौन्दर्य के नटखट नखरे के लिए पहनी हुई, स्त्री जाति की पवित्र आवरू को अनावृत्त करने वाली, महीन, झीनी, जीर्णशीर्ण, और चार दिन में छूँछ हो जाने वाली मशीन पर बनी हुई यह चिंदी फेंक देना तुम्हें कठिन मालूम होता है ? और ऐसी तुम—देशभक्त से विवाह करने का प्रण करती हो ? नलिनी, अब अदालत में जाकर, वकालत की सनद ले लो । वकील होने के लिए तुम

मोलहो आने योग्य हो ।

नलिनी—[साडी लेकर, व दन करके]—इस क्षण तक मैं तुम्हें नही पहचान पायी थी। इस खादी के स्पर्श से आज मुझे नयी दृष्टि प्राप्त हुई ।

वैकुठराव—नलिनी, देशभक्ति की मै एक ही परिभाषा जानता हूँ और वह यह कि हमें अपना अन्न और अपना वस्त्र स्वय तैयार करना चाहिए। इसके सिवा दूसरी परिभाषा मै नही जानता। मेरी इस परिभाषा पर थोडा सोच कर देखो। तुम्हे महीन वस्त्र की चाह है, तो वह भी मैं तुम्हे शीघ्र दूगा। मैंने कोकण के बारहमासी देवकपास की खेती यहाँ आरम्भ कर दी है। उसका सूत तैयार होते ही मै तुम्हे ऐसी साडी दूँगा जिसके सामने ढाका की मलमल भी बोरे के टाट जैसी लगेगी ।

नलिनी—इस भेंट के लिए मैं किस तरह तुम्हारे उपकार मानू ? इसका क्या बदला दू ?

वैकुठराव—इस से आगे अब जब भी मै तुम्हे इस साडी मे देखूँगा, तब मैं समझूँगा कि तुम्ही ने मुझ पर उपकार किया है। मुझ जैसे खेत के कीड़े को बदला लेकर क्या करना है।

कान्होबा—[रोता हुआ प्रवेश करके]—नलिनी, बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा हुआ। मेरा सहारा जाता रहा। अब मैं इस दुनिया मे निराधार हो गया।

—[रमा और रेवा प्रवेश करती है]—

रमा और रेवा—क्या हुआ—क्या हुआ ?

कान्होबा—मेरा भाई चल बसा जी ! अब मेरा कौन सहारा है ?

रमा—हाय भगवान, यह मे क्या सुन रही हूँ ?

नलिनी—हेरबराव तो मजे मे है न ?

कान्होबा—अजी उन्ही का तो यह पत्र है। लीजिए, पढिए ?

नलिनी—[पढती है।]—"मै समझता हूँ कि वैकुठ मर गया। अब

तुम्हे छोड़कर मेरा कोई भाई नही। यदि तुम भी मुझे नही चाहते हो, तो मै भी अपनी जान दे दूगा।"

कान्होवा—हमारा वैकुठ चल वसा जी! हाय! हाय!!

नलिनी—अरे, पर ये वैकुठराव तो यहाँ खडे हैं न?

कान्होवा—यह मै भी मानता हूँ। लेकिन दादा ने तो पत्र में ऐसा लिखा है न? दादा ने कहा कि मर गया, तो क्या रोना नही चाहिए? हा, अव देख लेने पर चाहो तो हँस देता हूँ।

वैकुठराव—अरे ओ कान्होवा, परावलवन की गुलामी करने का अपना हक अव तू छोड दे और आगे अपने ही मत से चला कर। तेरी इस मूर्खता के कारण रमा भाभी अकारण ही घवरा गयी।

रमा—हाय राम! कैसा वेढगापन है? और ऐसे वुद्धू की आज्ञाकारिता की इनके दादा गला फाड-फाडकर तारीफ किया करते हैं, सुना नलिनी?

वैकुठराव—अच्छा इन वातो को छोडो अव। दादा की फिक्र में अव जाना ही चाहिए। रेवा भाभी तुम भी चलो मेरे साथ। तुमसे मुझे एक वहुत ही वड़ा काम करा लेना है।

[परदा गिरता है।]

———

चौथा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—बाबासाहब का घर]

[केरोपत पुस्तक पढ रहे हैं। इसी समय क्षमा आती है।]

क्षमा—कब पधारे, वकील साहब ? किसी के हाथ खबर भिजवा देते। नलिनी दीदी तो घूमने गयी है। मै भी घूमने जा रही हूँ। जाने का यही रास्ता है, इसलिए कम से कम आप दिख भी गए। मै सोचती हूँ, दीदी के लौटने में बहुत देर हो जाएगी।

केरोपत—तो क्या हर्ज हैं ? मै क्या पराया हूँ थोडी देर बैठा ही रहा, तो क्या बिगड जाएगा ? रेवाजी शायद नही हैं घर मे ?

क्षमा—कौन, रेवा भाभी ? अभी कितना बजा है ? सिक्स फॉर्टी ! बस दवाखाने से लौटती ही होगी अब। दीदी के आते तक शायद ठहरे रहेंगे आप ?

केरोपत—बैठूंगा थोडी देर। शायद चला भी जाऊँगा। यह शार्ट स्टोरी बडी केचिंग है। उसके पूरे होते तक यदि नलिनी न आई, तो शायद चला भी जाऊँगा। अगर चला गया, तो कह देना मै आया था।

क्षमा—अच्छा, तो मैं भी चली अब घूमने। गरमी भी ससुरी क्या ही गजब ढा रही है ?—[जाती है।]

केरोपत—[स्वागत]—रेवा थोडी ही देर में आ जाएगी। मैं जानता था कि नलिनी इस वक्त घर में न रहेगी। देखिए, सारा मामला ही कैसे उलट गया ? नलिनी से जल्दी जल्दी विवाह कर लेने की कोशिश करने में मुझ से कितनी बडी गलती हो रही थी ? किस्मत ने ही बचाया ! मार्तंडराव के फंदे में रेवा न फँसी, लेकिन इस केरो महादेव के···· [दर्पण में चेहरा देखता है।]—मै स्त्री होता, तो अपने चेहरे पर

आशिक हो जाता है। मेरे बँगले के पडोस की खिडकियाँ यू ही नही खुला करती! किसी भी युवती को मोहित कर दे, इतना जादू है इन आँखो में। यह भव्य मस्तक, यह बाँकी नाक, यह सुन्दर मुख! है— चेहरे में कुछ आकर्षण है। मैं दर्पण में रोज ही देखा करता हूँ। लेकिन आज का देखना कुछ अलग है। आज पडोस की खिडकियो में खडे सजे चेहरो से पाला नही है। एक निर्मल मन की भोली विधवा पर जादू करना है। कुमारिकाएँ बहुत अच्छी—ये विधवाएँ कभी-कभी पुरुषों को ठीक पहचान लेती है। लेकिन मुझे लगता है, रेवा बिलकुल भोली है। भोली भी कैसे कहूँ? घर-द्वार छोडकर प्रेम के लिए सदानन्द के साथ वह ब्रह्मदेश भाग गयी थी। बडी हिम्मत वाली औरत होनी चाहिए! चेहरे पर मूर्खता नजर न आनी चाहिए मेरे। उससे बाते करते वक्त यह दर्पण मुझे सामने ही रखना चाहिए। यदि गंभीरता कायम न रही, तो खिडकी के रोशनदान से झाकने वाले चोर की तरह मैं पकडा जाऊँगा। रेवा की उम्र? क्या करना है उम्र से? एक-दो वर्षो से बडी होगी। उम्र न जमती हो तो न सही। उसके कारण संपत्ति के उपयोग में कोई बाधा नही आती। शायद आगई? वाह जी केरोपंत, इस तरह घबडाते क्यो हो? इतने दिनो तक नलिनी को धोखा देते आए और आज रेवा को ··

रेवा—[प्रवेश करके]—कौन है? इतना अँधेरा हो गया, बत्ती क्यो नही जला ली?—[स्विच ऑन करती है।]—कौन केरोपंत? अरे वाह, अँधेरे में ही बैठे थे?

केरोपंत—अभी कोई खास अँधेरा नही हुआ है! तुम बाहर से आ रही हो, इसलिए तुम्हें ऐसा आभास हो रहा है।

रेवा—नलिनी घूमने गयी है। एक घंटे में लौटेगी।

केरोपंत—एक घंटे में न? यह तो बहुत अच्छा हुआ। मैं कुछ देर तक एकान्त चाहता भी था।

रेवा— चाय भिजवा दूँ?

केरोपत—चाय तो नही चाहिए, लेकिन मै यह देखना चाहता हूँ कि तुम्हारे पास मेरी कितनी चाह है ? रेवा, तुम बिल्कुल अनाथ हो। क्या तुम्हारे कोई नजदीकी रिश्तेदार नही है ?

रेवा—कम से कम इस वक्त तो कोई नही हैं। सुख के समय सारे रिश्तेदार इकट्ठे हो जाते हैं। निर्धन गरीब विधवा को कौन पूछता है ? दौलत होती तो गैर जाति से भी नाते जोडे जा सकते थे।

केरोपत—इस हालत में तुम कितने दिन बिता सकोगी ? नलिनी का विवाह होते ही शायद तुम्हे यह घर भी छोड देना पडेगा।

रेवा—नलिनी तो मुझे नही छोडेगी। पर हाँ, यह नही कह सकती कि आप का क्या मत होगा ?

केरोपत—मेरा ? मेरा काहे का मत ?

रेवा—नलिनी के विवाह के बाद, यदि आप चाहेंगे, तो मेरा यह घर न छुटेगा।

केरोपत—क्या यह तुम्हारा पक्का विश्वास है कि नलिनी का विवाह मुझसे ही होगा ?

रेवा—इस में अब विश्वास की क्या बात रह गयी है। अब तो केवल मुहूर्त ही निश्चित होना रह गया है।

केरोपंत—यदि नलिनी से मेरा विवाह न हुआ, तो तुम्हे कैसा लगेगा ?

रेवा—ऐसा कभी होगा नही।

केरोपत—मेरे प्रश्न का उत्तर दो।

रेवा—नलिनी को बडा धक्का लगेगा।

केरोपत—लेकिन तुम्हें क्या लगेगा ?

रेवा—उसमें मुझे क्या लगने वाला है। नलिनी का दुख देखकर, मुझे भी थोडा दुख होगा।

केरोपत—उस दिन चेंबूर में नलिनी ने मुझ से बहुत बुरा सलूक किया। ऐसा अपमान कौन बरदाश्त करेगा ?

रेवा—लगता है बहुत बडा अपमान कर दिया है। वह जरा अल्हड है। उसे माफ कर दीजिए।

फेरोपत—मुझे ऐसा लग रहा है कि नलिनी से विवाह करने का निश्चय करके मैंने बहुत बडा अविचार किया। ऐसा करनेका एक दूसरा भी कारण है। क्या कारण है, यह पूछा नही तुमने ? सुनो, मैं ही बताता हूँ। नलिनी मेरी परख न कर सकी। लेकिन तुम्हें जरूर उसने ठीक से पहचान लिया। तुम्हारे हाथ के दो ग्रास खाते ही मैं भी तुम्हारा गुलाम बन गया।

रेवा—आप तो यू ही कुछ कह रहे है ? क्या कभी ऐसा हुआ है ?

फेरोपत—सचमुच ऐसा ही हो गया है। मेरे जन-सेवा के कार्य में हाथ बँटाने वाली मेरी सहचारिणी नलिनी जैसी एक अल्हड लडकी होने से काम नही चलेगा। कधे से कधा भिडा कर वर्क (work) करने के लिए उतनी बुद्धिमत्ता भी चाहिए।

रेवा—यदि मुझमें उतनी बुद्धि होती, तो आज नर्स क्यो होती ?

फेरोपत—तुम नर्स रह ही नही सकती। तुम जैसी बुद्धिमती स्त्री इस तरह सडती पडी रहे, यह ईश्वर को कैसे पसद होगा ? उसी ने मेरे हृदय में प्रेरणा पैदा की है। ईश्वर ने मुझे हिम्मत दी। इसलिए कहता हूँ—रेवा ··

रेवा—जरा धीरे बोलिये। कोई सुन लेगा ?

फेरोपत—[स्वगत]—पुरुष का रोब आज विजयी होगा।—[प्रकट] अधिक कहने की अब कोई आवश्यकता ही नही। तुम मुझे देख रही हो। तुम्हारे प्रति मुझे क्या लगता है, इसे बार-बार कहने की क्या जरुरत ?

रेवा—नलिनी क्या सोचेगी ? क्या वह मुझे कृतघ्न न कहेगी ? उसके सर्वस्व पर ही मै डाका डाल रही हूँ। उसने मुझे आश्रय दिया, पर मैं उसके प्रेमी को ही···पर अब क्या कह सकती हूँ ?

फेरोपत—भरी-पूरी जवानी में विधवा हो जाना एक ऐसी दुर्घटना है जो अपना सानी नही रखती। बहुत ही अच्छा हुआ जो तुम समय पर

चेत गयी। किसी विधवाश्रम की विधवा से विवाह करना एक प्रकार की दूकानदारी है। सच्चा प्रेम कुछ अलग होता है। बूढे अगुआ होकर जो विवाह कराते हैं उनसे प्रेम पैदा नही हुआ करता। रेवा, आज मैं कृतार्थ हो गया। मैने कभी नही सोचा था कि तुम इतनी जल्दी राजी हो जाओगी।

रेवा—यदि आप विधुर होते, तो ऐसा कभी न कहते।

केरोपत—तो यदि मै यह कहूँ कि हमारा विवाह कल ही सम्पन्न हो जाना चाहिए, तो तुम यह तो न कहोगी कि मैं बडा उतावला हूँ। प्रेमी मन बडा अधीर होता है।

रेवा—मुझे कोई आपत्ति नही। पर नलिनी से अभी आप कुछ न कहिए।

केरोपत—वह मोम की गुडिया यदि पिघल गई, तब भी मुझे कोई परवाह नही।

रेवा—मेरे मन मे एक शका आ रही है।

केरोपत—प्रेम के साम्राज्य में शका का राजद्रोह अक्षम्य अपराध ही है। क्या है तुम्हारी शका ?

रेवा—नलिनी आप से मिली, और उसने फिर कही आप का मन फेर दिया, तो मेरी क्या दशा होगी ?

केरोपत—अरी वाह री पगली, कभी ऐसा भी हो सकता है ?

रेवा—जी नही, यह बात इस तरह हँसी में न उडाइए। नलिनी यौवन से गदराई हुई अल्हड लडकी है और मै हूँ एक प्रौढ विधवा। यह फर्क मैं महसूस करती हूँ। तरुणो के मन कब बदल जाएँ, इसका क्या ठिकाना ?

केरोपत—यह तो सोचो ही नही। यदि चौदह दिन के नोटिस के बगैर विवाह रजिस्टर हो सकता, अथवा मुहूर्त के बिना ही हिंदू विवाह हो सकता, तो इसी क्षण मैं तुमसे विवाह कर लेता। तुम्हारी शका का समाधान करने के लिए मै क्या करूँ ?

रेवा—मुझे एक एग्रीमेंट लिख दीजिए। नाराज न होइए। मै ठहरी एक पगली। मेरी शका तो है। जाइए, एक स्टाम्प अभी ले आइए।

फेरोपत—स्टाम्स मेरे बैग मे ही रखा है। जाओ, वह बेग ले आओ इधर। एग्रीमेंट लिख देने से तो तुम्हारी शका का समाधान हो जायेगा न ?

रेवा—हा, एग्रीमेंट तो सिर्फ मुझ पगली के समाधान के लिए है। उसमें और-कोई बात नही है।

फेरोपत—ठीक है। लिखे देता हूं।—[कागज निकालकर लिखने लगता है।]—

रेवा—[स्वगत]—नलिनी—पगली लडकी, सिर्फ तेरे कल्याण के लिये मुझे यह भयंकर अग्नि-परीक्षा देनी पड रही है। सर्वसाक्षी परमात्मा ! इस पाप के कल्मष से मेरी नलिनी का कल्याण हो। उसकी आपत्ति टल गई, तो इस पाप के लिये मैं नर्क भोगने के लिए भी तैयार रहूंगी।

फेरोपत—यह लो। अब इस नकल पर तुम भी अपने हस्ताक्षर करो। अब हो गया समाधान ? ठहरो, अब सिर्फ सील मुहर लगाना बाकी है। इस कागज पर नही—इन होंठो पर ··

रेवा—दैया री ! नलिनी लौट आई शायद ? [कागज लेकर चल देती है]

फेरोपत—जैसी डरी हुई हरिणी ! मुग्ध कुमारिकाएं अज्ञात चुम्बनों के लिये लालायित रहा करती हैं। लेकिन इस प्रौढा को देखो। अनुभवी युवतियां ही चुम्बन टाल देने का सच्चा मजा जानती हैं। कितनी पगली है यह ? ऐसे एग्रीमेंटो से यदि विवाह की गाठे मजबूत कसी जाने लगी, तो कानून की चालबाजी ही क्या रही ? कानून की नजर मे इस कागज के टुकडे की कोई कीमत नही। परन्तु तरुणी प्रेमिकाओ का समाधान अनमोल हीरों की अपेक्षा बिना मूल्य की कौडियो से ही हुआ करता है। बस, मेरा काम हो गया !—यह पैतीस लाख की सपत्ति अब मेरी हो गयी ! मार्तंडराव भी कितना बेवकूफ है ? ऐसे अनमोल कागज मेरे हवाले कर खुद निश्चिन्त हो गया। जिसकी नस-नस में ऐसी मूर्खता

दौडती हो, तो वकील होकर भी वह मनुष्य भूखो मरता है । इसी का मार्तडराव एक उदाहरण है । सभी वकील धनिक क्यो नही होते, इसका रहस्य भी यही है । पैंतीस लाख की दौलत !—विवाह होते ही रेवा यदि मर जाए, तब भी मुझे खुशी ही होगी । सभी धनी यदि इस तरह अपने पीछे दौलत छोडकर मर जाएँ, तो मजा आजाए ! प्रेम का नाम लेकर जहाँ एक फूक मारी कि विधवा नागिनें उसी वक्त लूली पड जाती हैं । हम वकीलो पर इन विधवाओ के कितने उपकार हैं ? कितनी ही विधवायें हर तरह से हमारे घरो में दौलत भर देती है । मिस्टर वैकुठराव, लो—अब जाओ वैकुंठ । हाँ, अब नलिनी के आने से पहले ही यहाँ से सटकसीताराम ही जाना अच्छा !

नलिनी—[प्रवेश करके]—कब आए ? मेरे लिये बहुत देर तक बैठना पडा शायद ? ऊबकर भागे जा रहे थे, क्यो ? यू थोडी ही जाने दूंगी मै ।

केरोपत—नही—अब मैं जाता हूँ । कल मिलूंगा ।

नलिनी—लगता है चेंबूर का गुस्सा निकाला जा रहा है यह । पर वह तो मैंने यू ही मजाक मे कह दिया था आपसे ? अभी तक आपका वह क्रोध नहीं गया शायद ?

केरोपत—क्रोध गया और अनुराग भी गया ।

नलिनी—मतलब ?

केरोपत—नलिनी, आज इसी—इसी क्षण से तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध समाप्त हो गया ।

नलिनी—इतनी-सी भूल से ? सिर्फ थोडा-सा मजाक कर देने से ?—ऐसा कहना आपको शोभा नही देता ।

केरोपत—मैने तुमसे प्रेम कभी किया ही न था, कभी करता भी न था । नलिनी, प्रेम की बेवकूफी से पागल हो जाने वाला मै कोई कालेज का लड़का नही हूँ !

नलिनी—फिर आपने इतने वचन क्यो दिए ?

फेरोपंत—वचन केवल वाणी तक थे। मैं इतना पागल नहीं कि ऐसी बावली लड़की से विवाह कर लूं जो यह तक नहीं समझती कि इस हृदय की जड़ में क्या है ?

नलिनी—आप ये कैसी बातें कर रहे हैं ? आपका नित्य का प्रिय स्वभाव आज कहाँ चला गया ?

फेरोपंत—प्रिय स्वभाव नित्य का न था। नलिनी, वह सब ढोंग था। अब जो देख रही हो, यही मेरा सच्चा स्वरूप है। शायद तुम यह नहीं जानती कि वकील किसी सिद्धहस्त अभिनेता की तरह अभिनय कर सकता है। नाटक के करुण दृश्य को देखकर रो पड़ने वाली स्त्री की तरह तुम भी मूर्ख हो।

नलिनी—प्रेमी जीव हर समय मूर्ख ही होता है। मन इतना कोमल हुए बिना कि नाटक के करुण दृश्य को देखकर रो पड़े, समाज की दुखद घटनाओं को यथार्थ स्वरूप में देखकर भी उस पर क्या असर होगा ?

फेरोपंत—समाज की दुखद घटनाएँ ? होंगी। मुझे उन से क्या कहना है ?

नलिनी—ऐसा ? कम-से-कम मेरे दुख का तो आपके मन पर कुछ असर होता होगा ?

फेरोपंत—बिल्कुल नहीं। अपनी ही मूर्खता के कारण जो अपने आप पर कोई दुखदाई समय ले आते हैं, उन्हें ही वह खुद बरदाश्त करना चाहिये।

नलिनी—मैंने आप से प्रेम किया। यह क्या मेरी मूर्खता हुई ?

फेरोपंत—बेशक ! प्रेम ! ह ! नलिनी, कानून की दुनिया में प्रेम के परराज्य का हमेशा पराभव ही होता है। कानून व्यवहार के समीकरण को हल करने वाली एक मशीन है। इस मशीन में प्रेम का एक बड़ा भारी टुकड़ा भी डाल दें, तो एक ही पल में उसकी बुकनी हो जाती है और उसका अता-पता भी गायब हो जाया करता है। नलिनी कानून की किताब में राम-सीता भी नहीं हैं और लैला-मजनूं भी नहीं हैं। न्यायदेवी

की आँखों पर पट्टी बँधी रहने के कारण उसकी दृष्टि पर सौन्दर्य के कटाक्ष का रत्ती भर भी परिणाम नही होता।

नलिनी—तो फिर वैंकुठराव जो कहते थे, अखिर वही सच होकर रहा? कितनी पागल हूँ मैं? बचपन में बाबासाहब ने वैंकुंठराव से विवाह करने का मुझ से प्रस्ताव किया था। उसे ठुकराकर मैने बाबासाहब का मन व्यर्थ ही दुखाया! आपकी देशभक्ति पर मोहित होकर

केरोपत—देशभक्ति की बातें अब बद करो। खादी के ऐसे टाट पहन कर देशभक्ति नही हुआ करती!

नलिनी—आप भी तो खादी पहनते थे।

केरोपत—सिर्फ लोगो की आँखो मे धूल झोकने के लिए। मेरी इस सुन्दर देह को खादी का खुरदरापन कैसे पसद होगा?

नलिनी—मैं यह क्या सुन रही हूँ? कही मेरे कान मुझे धोखा तो नही दे रहे हैं।? केरोपत, यदि आप के ये शब्द सच हैं, तो सच्चे देशभक्त वैंकुंठराव ही सिद्ध होते हैं। कम-से-कम उन्होने देशभक्ति की शान तो नही बघारी।

केरोपंत—और मैंने बघारी? यही तुम कहना चाहती हो न? नलिनी मेरा पेशा वकालत है। अपने बडप्पन की शान बघारे वगैर मेरा रोजगार नही चलता।

नलिनी—केरोपत आप को कुछ पता भी है कि आप के इन शब्द-प्रहारो से मेरा कलेजा किस तरह टुकडे-टुकडे हो रहा है?

केरोपत—उन टुकडो को समेटकर मैं गदे नाबदान में फेक दूगा। जा, पागल लडकी! अब यह नाटक काफी हो गया। तू देशभक्त से विवाह करना चाहती है न? जा, उस वैंकुठ से विवाह कर ले।

नलिनी—उनके प्रति थोडा आदर दिखाते ही शायद आपको उनसे डाह हो गई?

केरोपत—मुझे डाह होगी? उस मच्छर से? खाद के उस कीडे से? इस लायक भी है वह?

नलिनी—आपका कहीं दिमाग तो नहीं घूम गया है ? ये कैसी बातें कर रहे हैं आप ?

केरोपंत—दिमाग घूम गया है तेरा। मेरा दिमाग दुरुस्त है। इसी-लिए मैं ऐसा कह रहा हूँ।

नलिनी—मैं आपके पैर पड़ती हूँ। ऐसे शब्दों में समझाइए जिससे मैं समझ सकूँ ?—[पैर पकड़ लेती है।]—

केरोपंत—तेरी समझ में आने वाला शब्द यह है!—[लात मार कर चला जाता है।]

वैकुंठराव—[प्रवेश कर]—उठो नलिनी, कम से कम लात की इस कठोर ठोकर से तो तुम्हारे प्रेम का पागल भूत भाग गया न ?

नलिनी—यह क्या हो गया, वैकुंठराव ?

वैकुंठराव—अभी जो होना है, उसके आगे यह तो कुछ भी नहीं है।

नलिनी—क्या मेरे जीवन की ऐसी दुर्गत होने के लिए ही यह जायदाद मुझे मिली ?

वैकुंठराव—इस दौलत के कारण ही तुम्हारे जीवन की यह दुर्गत हुई। नलिनी, रुपयों की झनकार पर नाचने वाले भूत किस मंत्र से उतरा करते हैं—जानती हो तुम ?

नलिनी—जिस की बुद्धि नष्ट हो गई है, उस मृत जीव से यह कैसा प्रश्न पूछ रहे हो ?

वैकुंठराव—तुम्हारी बुद्धि विचलित भले ही हो गई हो, पर अभी प्राण नहीं मरे हैं। नलिनी, जब तक देह चलती है, तब तक बुद्धि हिलती रहती है। डोलती हुई प्राण-ज्योति को हिलती हुई बुद्धि का साथ दो, तो आगे का मार्ग तुम्हें साफ दिखने लगेगा।

नलिनी—प्रेम के कारण मैं इतनी अंधी हो गई हूँ कि अब मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता।

वैकुंठराव—प्रेम के कारण ? नलिनी, केरोपंत ने क्या तुम्हारा प्रेम था ?

नलिनी—इस क्षण तक तो मेरी यही धारणा थी ।

वैकुठराव—धारणा ही थी न ? फिर कोई हर्ज नही । मुझे विश्वास था । काहे का, जानती हो ? जिस तरह मै तुम से प्रेम करता हूँ, उसी तरह तुम भी मुझसे प्रेम करती हो, ऐसा मेरा विश्वास था । केरोपंत जैसे एक राहू की छाया से तुम्हारे प्रेम का चन्द्रमा घडी भर के लिए ढँक गया था । मै यह अच्छी तरह से जानता था कि उस चन्द्रमा के कोमल प्रकाश को सदा के लिए ढँक देने की शक्ति उस राहू मे न थी। इसीलिए मैं चुप था ।

नलिनी—लेकिन मै तुमसे भला बुरा जो कहा करती थी ।

वैकुठराव—अब तो तुमने यह कह डाला न ? बस, तो हो चुका । नलिनी, तुम्हारी गालियाँ मुझे प्रिय लगती थी । मै नीरस प्रेम का रसिक नही । तुम्हारे भला बुरा कहने पर मै क्या कभी नाराज हुआ था ?

नलिनी—मैं उस तरह का सलूक करती थी । फिर भी तुमने मुझे दूर नही किया, यह सच है । मुझे लगता है ·

वैकुठराव—कुछ नही लगता है तुम्हें । जो मुझे लगता है, वही सच है ।

नलिनी—मन में कोई निश्चय पक्का करने के लिए इस समय मैं बिल्कुल असमर्थ हो गई हूँ । सच और झूठ मे क्या अन्तर है, यह भी मुझे इस समय जान नही पड रहा है । क्या करूँ ? इस समय मेरी रक्षा कौन करेगा ?

वैकुठराव—पूछ रही हो, तुम्हारी कौन रक्षा करेगा ? तुम्हारी रक्षा ईश्वर करेगा ।

नलिनी—मालुम नही ईश्वर भी मेरी ओर अब ध्यान देगा या नही ?

वैकुठराव—ईश्वर तो दूर है—इस समय मनुष्य क्या कहता है, वह सुनो । जिस समय वसीयतनामा पढा गया था, उस दिन मैने क्या कहा था—याद है तुम्हें ? क्षमा करना, मै बडा नाजुक प्रश्न पूछ रहा हूँ । लेकिन नलिनी, वह प्रश्न पूछने का ठीक समय यही है । क्या इस प्रार्थी की अरजी मजूर करोगी ?

नलिनी—केरोपंत ने भी यही कहा है कि अगर देशभक्त से विवाह करना है……

वैकुंठराव—तो वैकुंठ से कर लो। यही न ? वाह रे मेरे दोस्त ! वाह केरोपंत, क्या कहने ? वकालत की अपनी सारी जिंदगी में यही एक सुन्दर सलाह अपने मुवक्किल को प्रथम बार तुमने दी। कम से कम इस मामले में केरोपंत महाराज सच बोल गये। दोस्त केरोपंत ! तुम्हारे इस उपकार का बदला मैं कैसे चुकाऊँ ?

नलिनी—मेरे प्राण जा रहे हैं, और तुम्हें मजाक सूझ रहा है !

वैकुंठराव—अब मामला इस तरह मजाक में न उड़ाओ। अर्जी का फैसला पहले सुनाओ।

नलिनी—केरोपंत ने ही निश्चित कर दिया कि मेरा प्रण तुमने जीत लिया।

वैकुंठराव—लेकिन तुम्हारा क्या मत है ?

नलिनी—आज क्या पहने हूँ, यह देखा नहीं शायद ?

वैकुंठराव—अरे हाँ, इस गड़बड़ी में यह तो देखा ही नहीं ! इस खादी की साड़ी में तुम्हारा दम तो नहीं घुटा ?

नलिनी—सच्चे देशभक्त के हाथ का यह अमूल्य अलंकार मृत प्राणी को भी सजीव कर देगा।

वैकुंठराव—हे दयाघन, कृपासागर, भक्तवत्सल केरोपंत ! तूने मेरी मिन्नत पूरी कर दी, देव ! अब थोड़ी ही देर में तेरा पूर्ण शृंगार कर तेरी मन्नत उतार देता हूँ।

नलिनी—मुझे लगता है कि मैं पहले से ही तुम से प्रेम करती थी। उस समय हम लड़ते थे, वह भी प्रेम के कारण ही।

वैकुंठराव—अब तो तुम्हें यह बात जँच गयी न ? ठीक है। लड़ाई की यह गर्मी हमेशा कायम रहनी चाहिए। विवाह के बाद जिस दिन तुम मुझसे न लड़ोगी, उसी दिन मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा।

नलिनी—लेकिन केरोपंत की तरह कहीं तुम्हारी भी नजर मेरी जायदाद

पर ही तो नही है ?

वैकुठराव—लो, आ गई शका ? कुछ भी हो आखिर हो तो औरत की जात ही न ? इस शका का भी समाधान किये देता हूँ। वह देखो, क्षमा मेरे हुक्म से मेरे गवाह को साथ ला रही है।—[केरोपत और क्षमा प्रवेश करते है।]—क्षमा, क्या सदेशा कहा था इन से ? यही कहा था न, कि एक्जीक्यूटर बुला रहे है ?

केरोपंत—हाँ, यही कहा था। क्या है आप का काम ? आई एम व्हेरी बिजी जस्ट नाऊ। (I am very busy just now)

वैकुठराव—हा, हाँ, जरा ठहरिए तो ! क्षमा इधर आओ।—[उसके कान में कुछ कहता है।]—हाँ, अब हमारा काम। मिस्टर केरोपत नलिनी की जायदाद कितने लाख की है ?

केरोपत—एक कौडी की भी नही !

वैकुठराव—सुना नलिनी, सुन लो। अब मेरी नजर कहाँ है, बताओ ? यह मेरा सिखाया हुआ गवाह नही है। अच्छा केरोपतजी, उस पैंतीस लाख का क्या हुआ ?

केरोपत—वह मैं नही बताना चाहता।

वैकुठराव—खैर, नलिनी का जो निजी घर था उसका क्या हुआ ?

केरोपत—हेरंबराव के खिलाफ मुकद्दमा लडने में काफी रुपया खर्च हुआ। यदि नलिनी जीत जाती तो जायदाद से वह खर्च दे दिया जाता। लेकिन नलिनी हार गई। उसके हाथ से जायदाद निकल गई। अब नलिनी को अपना निजी मकान बेचकर वह सब रकम चुकानी होगी जो मुकद्दमे में खर्च हुई है। नलिनी, उचित कीमत पर मैं तुम्हारा मकान खरीदने को तैयार हूँ। मुकद्दमे मे जो खर्च हुआ है उतनी रकम तुमसे लेकर मैं तुम्हें ऋण-मुक्त कर दूगा।

नलिनी—मतलब यह कि मेरा निजी अब कुछ भी नही रहा !

केरोपंत—एक्जैक्टली ! (Exactly)

वैकुठराव—सुनो नलिनी। रुपयो की झनकार से नाचने वाले भूत

दरिद्रता के मारे से भाग जाते हैं अब तो मालूम हो गया यह मर्म!
नलिनी—तो बाबासाहब की जायदाद क्या हेरबराव के कब्जे में चली गई? बोलो वकील साहब, क्या अपील का फैसला हमारे खिलाफ हुआ?

—[हेरबराव और रमा प्रवेश करते हैं।]—

हेरबराव—अपील ही ठंडी हो गई। अब कहाँ आया फैसला?
वैकुंठराव—कौन, दादा? आप अभी तक थे कहाँ?
हेरबराव—मैं था मरघट में! —[फेरोपत से]—खोजते-खोजते, आखिर अब पकड़ा! क्यों रे बदमाश, देख। मेरी ओर देख। एक धनिक कुल के बेटे इस हेरबराव को क्या तूने पहले कभी ऐसी पोशाक में देखा था? नलिनी, इस हालत के लिए कौन जिम्मेदार है?
फेरोपत—इस के लिए तुम ही खुद जिम्मेदार हो। साँप के गले के भीतर न जाने के लिए पैर लम्बे कर अन्त में उसका भक्ष्य बनने वाले मेंढक की तरह यदि तुम मर गए, तो इस में मेरा क्या अपराध?
हेरबराव—वसीयतनामे को नकली साबित किये देता हूँ—उसकी भाषा गैरकानूनी है—यह सब पहले मुझ से तू ने ही कहा था न? साँप के बच्चे, यह पहली पकड़ तूने ही पकड़ी थी न?
फेरोपत—यह मेरा पेशा ही है। पर तुम्हारी अकल पर क्या पत्थर पड़ गए थे?
हेरबराव—मेरे पास अक्ल होती, तो तेरे पीछे ही क्यों लगता? एक निजी घर था। उसी को लिये यदि चुप बैठा रहता, तब भी जीवन मजे में गुजर जाता। अब तो यह हाल हुआ—न तुझे, न मुझे, और भर दे दिया इस कुत्ते को! सिर्फ इस वकील का हक ले यथा हुआ गुलाम बना बैठा रहा। पाजी, हरामी‥
फेरोपत—चुप रहो मुँह सम्हालकर बात करो। अपनी ही बेवकूफी से मरते हो। इसके लिए दूसरे को दोष क्यों देते हो? अगर अब एक शब्द भी मुँह से निकाला तो एक एक शब्द के लिए एक एक मास का दावा करके तुम्हें जेल में बन्द करा दूँगा।

हेरंवराव—वे दिन अव लद गए जब खलील मियाँ फाख्ता उडाते थे। अव मैं एकदम खुख्ख हो गया हूँ। घर-द्वार जाता रहा। सारी दौलत लुट गयी। वसीयतनामा हाथ से निकल गया और इन सब के साथ ही अदालत का काँटा भी निकल गया। इस तरह सब तरफ से बिल्कुल बरबाद हो जाने पर, अब मुझे जेल में बन्द करने का क्या डर दिखाता है ? यह डर अव तुझ जैसे बदमाशो को ही है ! न तू ठीक से वकील है और न ठीक से देशभक्त है। वसीयतनामा के दावे में मै डूब गया और देशभक्ति के सट्टे में तेरा पट्टा उलट गया। दोनो एक साथ ही नगे हो गए हैं। तेरी शान तेरी आवरू की थी। मेरा ठाट-बाट ,मेरे ऐश्वर्य का था। हम दोनो ने एक ही साथ एक ही तरह से अपनी अपनी दौलत पर डाका डाला और कगाल हो गए। आ, आ—अब एक दूसरे का गला दबाकर हम दोनो एक साथ मर जाएँ। देखता क्या है ? अभी तूने मेरा एक तरह से गला दबाया है, अब इस तरह से गला दबाने के लिए क्यो डरता है ?

वैकुंठराव—[उसे छुडाकर]—दूर हो जाइए दादा। मैं अपने सामने ऐसे अत्याचार न होने दूगा। इन्हें विश्वास करा देने का उपाय दूसरा ही है। केरोपत, जिस वात को तुम गुप्त रखना चाह रहे हो, वह पहले ही सब को मालूम हो गई है। नलिनी, मेरे पिताजी की सारी जायदाद—[रेवा प्रवेश करती है।]—अब इसे—मेरी भाभी को मिली है।

हेरंबराव—सदानन्द की पत्नी ?

केरोपत—हाँ, यही मेरी भावी पत्नी।

वैकुठराव—कौन, किसकी पत्नी ?

केरोपत—यह रेवा मेरी भावी पत्नी है।

रेवा—यह सदानद की पत्नी आजन्म सदानन्द की ही विधवा रहेगी।

केरोपत—रेवा, क्या ये तुम्हारे ही शब्द है ?

वैकुठराव—हाँ, केरोपत को मेरी भाभी का यही आखिरी जवाब है।

केरोपत—[एग्रीमेन्ट दिखाकर]—रेवा, यह क्या है ?

रेवा—एक कागज का टुकडा जिस पर किसी छोटे बच्चे ने बहुत सा आडी-टेटी लकीरें खीच दी हैं। वकील साहब मैं अनाथ विधवा जरूर हूं। पर आप यह भूल गए कि मेरे पास स्त्री का हृदय है। मेरे हृदय से माँ वह प्रेम अभी नही चला गया है जिसमें कि नलिनी जैसी भोली लडकी के प्रति स्नेह का उभार पैदा न हो ? यदि आप को यह कल्पना होती कि अपनी जाति की रक्षा के लिये स्त्री जाति कितना स्वार्थत्याग कर सकती है, तो आज आपकी इस तरह फजीहत न हुई होती।

केरोपत—मुझे अपनी अक्ल पर बडा नाज था। लेकिन एक नाचीज वेवा ने मुझे हरा दिया।

नलिनी—आप में कम-से-कम इतनी भी सचाई है क्या जो यह स्वीकार करे कि मेरे ऐश्वर्य के लिए ही आप मुझसे विवाह करने को राजी हुए थे ?

वैंकुठराव—वकील साहब, मेरी भावी पत्नी को आप शायद कोई उत्तर देना नही चाहते ?

नलिनी—मैंने आप की आज्ञा का पालन किया। इनसे विवाह करने को आप ही ने मुझ से कहा था न ?

केरोपत—वैंकुठराव, नलिनी, मैं हार गया। अब यूं ही मुझे क्यों सता रहे हो ?

वैंकुठराव—केरोपत, देशभक्ति का अभी तक तुम ढोंग कर रहे थे। क्या तुम सच्चे हृदय से सचमुच देशभक्त होना चाहते हो ?

केरोपत—वैंकुठराव, देश की सेवा करने की सचमुच बडी चाह है। लेकिन कानून के श्लेप भिडाने में झूठापन मेरी रग-रग में इतना भिद गया है, कि देश की भक्ति करने में भी मैं आँख-मिचौली खेलने लगा। पश्चाताप की अग्नि में आज मेरी झूठापन भी जलकर खाक हो गया।

वैंकुठराव—अब इसके आगे क्या विचार है आपका ? इस आनन्द के अवसर पर क्या मैं आप को वोरे के टाट जैसी खादी के थान भेंट स्वरूप अर्पण कर सकता हूं ?

केरोपत—अनेक सभाओ मे बाजार से खादी लाकर मैंने देशभक्ति का दिखावा किया था। यदि आप मुझे खादी भेंट करें, तो क्या इसका यही अर्थ नही होगा कि मैंने आपकी खादी के लिए बाजारू खादी जैसी ही गुणग्राहकता दिखाई ? वैकुंठराव ! जब अपने हाथ से सूत निकालकर और अपने ही हाथो मे बुनी हुई खादी की पोशाक पहनूगा, तभी मुझे आपके सामने खडे होने की योग्यता प्राप्त होगी। स्वय अपने हाथ की तैयार की हुई खादी का जब तक मै स्वय के लिए उपयोग न करूंगा, तब तक यह काला मुँह आपको न दिखाऊँगा, यही मेरा निश्चय है।

नलिनी—लेकिन इस के आगे आप की वकालत का क्या होगा ?

केरोपत—नलिनी, आज से मै वकील नही। तुम्हारे चरणो की सौगध खाकर कहता हूँ कि मैने वकालत इसी क्षण से छोड दी। मैं ग्राम-पचायतें स्थापित्र करूँगा और गरीबो के झगडे मिटाने में अपने कानून के ज्ञान का उपयोग करूँगा।

मार्तंडराव—[अपनी पत्नी सहित प्रवेश करके]—ओ हो हो ! यद्यदाचरति श्रेष्ठ तत्तदेवेत्तरेजन हम भी केरोपत का अनुकरण करते हैं।

नलिनी—यह किसकी लडकी है ?

मार्तंडराव—इसे पूछ रही हो ? यह मेरी धर्मपत्नी है। बडा जबरदस्त मगल पडा है इसकी कुडली में। जहर देकर देखा, फिर भी नही मरी। गुर्जर ज्योतिपी ने ही कही से भिडा दी है। अब मुझे पत्नी के मरने का कोई भय नही रहा। गुर्जर ज्योतिपी का ही भविष्य है। यही देखिए न ? उन्होने यह भी भविष्य कहा है कि नलिनी का विवाह वैकुठराव से होगा।

केरोपत—वह भविष्य-कथन भी सच निकल गया।

वैकुठराव—अरे, कान्होबा कहाँ चल दिया ?

कान्होबा—यही तो खडा हूँ जीने में। वहाँ आने को डरता हूँ। दादा क्या कहेंगे ?

वैकुठराव—अच्छा आओ इधर सामने। क्षमा, इस मास्टर कहलाने-वाले बावले लडके को मैं तुम्हारे हवाले करता हूँ। इसका ठीक से लालन-

पालन करना। कान्हू, अब बीस हजार तुम्हारे हैं। अब अगर नौकरी भी छोड दो, तो कोई हर्ज नही।

रमा—वैकुठराव अब हमें तुम अपने खेत पर ले चलो। तुम्हारे बगैर और किसका सहारा है अब ?

रेवा—ऐसा क्यो कह रही हो ?, जो है सब आप ही का है। मुझे विधवा को इतना बडा ऐश्वर्य क्या करना है ? आप सब लोग यहाँ आनन्द से रहिए। आपके बाल बच्चो की सेवा करके आप के ही सुख मे मैं अपना सुख मानूगी।

नलिनी—रेवा भाभी, मेरा सकट टालने के लिए आज कितना बडा साहस कर डाला आपने ?

रेवा—चुप रहो। यह नही कहना चाहिए। अपने बच्चे के लि माँ चाहे जो कर सकती है।

वैंकुठराव—मातृभूमि की महिमा केवल माँ ही जान सकती है। मेरी मातृभूमि ने मुझे आज एक माता दी। धन्य है हमारी मातायें और धन्य है हमारी मातृभूमि !

भरत वाक्य

वन्दे मातरम्

सुजला सुफला मलयजशीतलाम् ॥

शस्य श्यामला मातरम् वन्दे ॥

ओम् तत्सत्